ग्रास्त्रनस्यथ किं वा ॥ धनमंगली ॥ क्र याथिदू ॥ २ ॥ वैगय स्कमाहाश्चदमखवी ॥ असूतं किंदू ॥ खिमं मौडमसुरी स्का कुमर्दसि ॥ वथाहिनहि मार्हमी रू यस्तमनूस्कसि ॥ मम नम्हदय ॥ ४ ॥ आस्तुदीन
स्यकाय कमसह स्याखी तिन ॥ किं चिक्क स्याद्र दयाक म ७ ॥ क्रूतान्न म याप नीला श्रीकथी युन खय ॥ मी ॥ तर्फी मर्दी चोस्याम दिन ही दन लुद दी च सा ॥ पकि सर्वधा यमधी नें वा घूं श्री याकू नाय थास्या
ममाह्न य थि ॥ श्री ब्रैवना याय विसर्ज्ज ॥ य ॥ य दिसस्य पति ह्मसि कूनू मवय नं चियं ॥ मा लें का त्रै वि माद स्य नमाहस्या पय युग ॥ प्रे युग्ना मेनन ॥ ओ च नाय हि थि यय ॥ मि ॥ २ ॥ म पन्नाय मी हू वार
याय विनक वो ल ॥ १ ॥ म हि न्ना वा श्रुमा दन स्यगा देनव कूउ न भ ना जा ॥ ना का ग्रि सं नमक ॥ मू नुमि दम खवी ॥ मय्या ग विवेद्धा ॥ मि मूक विशा क मा न मस ॥ ना मेय सू मि ड्का ॥ मि न य नी धु मिक्रा
नय ॥ हुं मि ना ह्मी वव ॥ ४ ॥ स्वा कि क यी मद न कृ नैं ॥ सय म वा ख वी न्हू तं ग कुश्रीं ना म मा न य ॥ य था स ग ग्री मर्य मी नथे व ख्च यथ स्च यें ॥ क ॥ म ॥ मकु स्थ विनी वि मिर्यं थी भदु य थि ह्मा न गा व सा क
यन ॥ वि निर्गम अपि यद विष्णिमा नू यान ना म्म रि पू मा हिमा कृदा ॥ हु य था था का ॥ शु कृ क यू पा न ॥ ॥ ॥ ॥ रू थ मी नार्रि मू खि ना द्य आमा नूम म कि नि ॥ १ ॥ यी अन्न न य दा ॥ मय
पूवोद्वि कपू ना ग मा क्ष ना जा पत्रा न मा न य नाश सिंदवेना थि न ॥ १ ॥ आ हि य य मिर्म सूर्यं कू जा न स्तू नं या कु याय ॥ न सि त्क्रु नि यु शुव सा म था ग म्य गा ग ॥ आ हि यय नि कं इ थी नाम्नायम्यपक स्थि मं ॥
॥ ना ग कू कं चे नू वि वं रड़ा सनम सी ह ग ॥ ड यक स्थिनमाहा थ मि गे ना ड स्थाय मी ॥ नं न्ना य मू न था ॥ खेव सं ग मा दा ह ग उ ली ॥ यां आ ना ॥ म विन ॥ १ ॥ पृथ्वी स्काश अ थि य स र्य न ॥ १ ॥ समूह य थ म

आशा सफूकुथि
ASHA ARCHIVES
1941 I

र्थस्य॥ सलिलं समुपाद्दनं नीवरस्थवानेषु पद्मान्यसविमिश्रितं॥ अथ तत्कुलं गां स्थले कृत्य कौबनारांसु कल्पितान। तृत्यकाचाबनारोवबद्धर्गं मधुपयाद्दधि क्षीरत्योवपूर्णमंत्य्याम न्याः॥ सोमेगु
लानिवाव्क्तेलंतुं विमलेवापिमविदगुमलं कृत्वा। वामनैयक्रमेणीमज्ञामार्थमूर्धकाल्पितं। पूर्णेन्दुमगुलां हं यक्षीमनम्मलि विद्रुमितं। वामस्य योववाज्ञार्थमान पर्यंयकल्पितं। तथाव नैर्थ
य॥ अथ मन्त्रस्त्व तत्र्यं स्थ कल्पितं॥ स ज्ञा। ऊर्ध्वन्तीवनीमांक्रम्य कल्पितं॥ ऊर्ध्वीकस्यार्थमें त्योवबाक्षेनलद्वितानां॥ वा दिशानि वसध्वानि वन्दिनगुल्लं कृत्वा॥ ॐ ह्रीं नाह्मा सुचितं
यत्वाच्यदपि क्षिव्रना। सूक्रियववलि कद्रूर्थं सर्वं नत्पकल्पितं। तृथगमस्ति॥ तृतं समक्रं मपवाहितां॥ देववत्यागदानमाना तृष्णा बद्धया क्षयव। पञ्चशीमो दिनवाजान सूदिग बुद्धिवाक १४
वधृणीवनाञ्च क्षियकधूक्रुषावामसरधामन॥ ॐ निर्मिनवमाक्षयर॥ प्रणीहानामसहीयनं॥ सूवरीकोनिदेवार्थं मु सुक्तामनुविक्रमान। सूर्यं यथश्च मिवयनानववत्वायु श्मणीनुप॥ नाज
संदर्शनाधिर्क्षमयमांवदयामिव॥ ॐ सूक्ष्मनवहावमासाध्यवद्यान्विन॥ सुमनक्तानयर्क्षितं सपुमंत्वाहृयाद्ववायय। वृक्षनकोशितपुवानाक्षीं विवूधाविव्र। पेमाक्ष लिवायवाधय
स्मेय कल्पं नेयवमानद। गनानिते गर्थक क्षितं मु सर्वनम्न पमल्लमं। यक्षिवृ श्मस्ववाजर्थ धमा कृत्वा सिकानय। पूर्णा धमामक्तिणर्थयी वाजानपदा ऊनाश्चदर्शनक्तिकी कुलं सिवा
दूनेयादसि। नानथपूनवस्य यावामयक्रेनवाक्षियं॥ सुमनद्वद्वस्वसेन कल्पवयक्षिदमत्रवी॥ सुमन्तुनावपूर्ण। क्षिदीर्मि दिक्षिम्माणीय। ॐ निवाजादन्नमध्ये सुमनं तुं पूनवयथा॥ ॐ निवा

ज्ञा॥ कय॥ कुन्नामसुमहस्त्र निनस्कृदा। निर्जुगमसाधर्संधान्दस्तुस्मोडाज निवननाः। निखण्डयेवलनिवानामसमानयिद्रुहमदा। नथनऊविना। वनययोनामगृहद्दपनि। ऊमीघानाजमार्गस्कतनिवृद्धिकर्थ
गमं। गृह्यवीचः कथयर्मा नामाहि स्कवसंक्षिनाः॥ अथनामीयोववाकूंल स्थानयिडनाद्धया। अहामहत्स्ववास्मा कंमयायैकविनापूर्व। सद्दर्शकः॥ योनहिन। सर्वत्रुहिनवनः॥ यववाजु॥ कि
लास्माकंमयनामाज विश्वानि। अहाज्ञानुगृहोनाः॥ अयस्माधूऊनवस्त्ल। यानयिश्चजिमानामः॥ यिनापूज्ञानिवीनमान। ॐ जिनतऊनीघस्थ गृध्यव्वावः॥ समाहितः॥ ययोसुमनस्त्वविनानाम
मानयिडुगृहागे। अथ समयादनामसयमव [illegible] ययायेमं। दामविर्विमास्यानीपलंविः॥ समलदान। महाकयाद यिक्षितं हावदर्शिन। [illegible] कहितं। काञ्चनयजिमेकार्यमहि स्विद्रुमनोवलं। नाम
पिनाश्चवगऊसुकाहवविहूषितं। दानीगदेवैदननदर्शनीवावनापमं। सवाजिमूकनेनयेनमानथितदानगनः॥ योनऊनेपद्दयनु। विवनामसयागृहमहर्द्धिमस्कुन्दव [illegible] जिमेनूपाऊर्य
॥सन स्तमासायमहर्षिमरुदाऊदर्शसूतामूर्द्धहिवीसुरव। अनककन्नोर्ध्विनमयलं हानंगृहं ववाह स्यसचीयननिव। उयकृतं र्मागधमूलनवैदिनि। [illegible] कालिकसीधमालिकः॥
अहि स्कवक्षि उतानीनृयाल्मऊ समाश्च [illegible] नयर्थ दर्शन सः॥ ससयकर्म पूजूमेवलं दानं विनीतवलैवद्र्जिः॥ सूनक्रितं। विवनामसयमहोस्मनागृहं महीयमानानूपमक्ति सूक्ष्मभलि
ना [illegible] लाहमणवं तत्वसं महाविमानपनि मंजनीघवः। अथवीर्यमाताः॥ प्रविवर्तकदृ हं समाजपूजसानव मानवयिः॥ ॥ ॐ [illegible] स्तुतिश्रवनिकद्याय कृय [illegible] ॥२॥ ॥

गनीघकीर्ण्णे॰ भागीय्य घद्रूक्रासूसयव भनन॰ सूर्य्यासञ्चीक नः॰ कक्रोसपकमीमाससादस॰ यूव हिश्यूनूमेर्उयी यान कार्म्मुकयालिलि॰ सूपमाधिरि वानेमिर्ह्रक्रिम कृिवलीपदानेमूनथकस्तू॰ किहि
घ्दि॰ कघायाम्भवन भाषि हिर॰ न क्रिमामन लंकात्रेस्थ्रुश्रहः वंतयाहिलिहि॰ गदद्वस्तु त्रा नर्गमूनंवाम प्रियविकीर्षया। मह्नाय्यीयवामाघ्रप्रहिपहृन्यवंदयन्न। एकत्वैवास्यागनीयः
सूनमत्य ब्रिगि पिनुरु॰ वामरु॰ यववनयामास मह्ना त्यस्थ यमाल्मन॰ समगिभनदसंकालमूयविद्धस्वलंकाग। यदनसूनदेसाँवाह्नूयर्य्य क्रवांकृवाकृग। ववाहृत्रूषिवाहृमसूनरत्नमहा
नुगं सूनूलि कंमहाईलयनदनन मृग धिना। वासघ्रजनधाविध्यासीकयाया र्वमक्रयास सयमयासयमानं हियवम भूमूदनं। गनूलादि सपदर्गप्रदालक्रमिवहि या। ववन्दवामम १७
घय सूमत्रा विनयाचिन॰। पद्धप्रेने मूर्खवपक्रा विक्रातलयनागन। उवावानक्रवमिदसूमत्रा वाजनासनं। कोगर्यामूपजांदवाधव ह्रांडक्कमिस्क हि। वैकयीस रहि गा वामगम्य
गौयदिनावन। एवमूकः॰ सूमर्हुल वामांवाजीवलावन॰। लिवमायहि सूत्राहूंपिरु॰ सीतामथावविः। सीतदवयुद्दवीयसमागम्यपवमयनं। मूहंनिमहिगानूनंयोवनाज्ञाकिषवम
एकवैम यगत मागाकेक्रयीम नियुयक्रया। सूर्येवमयोवनाईपनिपादहर्युस्वर्य। नूनंनह्नसिवाजानेमह्नानचलयल्पसी। सूथवासहिगानाजामयियुर्यवक्रमहहि। याहनीयविष
सीग सूत छायोत यावि॰॰ एवमथेवनाजामांयोवनाञ्जहि घरुति। गस्माक्षीयमह्रीगत्वाय ध्यम्भिजगगीयार्ग। एवंनह्नसिककयासहृसीनंगतहावं। ॐ कितदुर्वय एकत्वाः

सीतावचनमवबीः। गस्कार्य्यसूतयिवेंगेहरूमागवमवय। ॐ यूत्कासाकालिकत्वावामसियुक्तिंगदा। स्नाद्दावमनूवचाज सीताहर्द्दवभानूग। भीनिवर्त्सगवावामानिर्ज्जग्नमल्लवाविकः॰ यिगवेद्र
सूमोहूगं॰ किक्रयासहिगंवहमविनिर्गत्यवकस्मात्मगहादनूयेमघ्रा॰ दवर्णधिजनेह्वात्रि स्किगंयदर्णनलासर्स। समर्ष्ठनिषिमादस्कासमह्पप्रतिनन्त्रोय। यूक्रमवनर्थवीप्यमानूनाह्नत्ववाचि
गथ गक्र पिक्रवच क्रौ षि प्रह याघ घनादिगं। कार्य नूहिनुक सोद्र यूक्रायनमवाक्रिहिमह्नर्घयूक्रद्रहगवाः। समेथं मघवानिव। गमानूक्रयघोवाम॰ आपवमयाक्रवन। सगनवथमू
स्वाँन पर्य्यनसमनादिना। विनिर्ययोस्यहवनात सिमाजादिवचन्दुमाथ॰ क्रृतवामनमाहि क्रूप्रयान्कलक्रूलक्रुदा। सूचानूनाहदवन्दुमूपत ॐ वदर्बयम। गमाहलहलालदहमूल॰ सम
पयमन। हस्थुं वनामममायाक्रेन थनवधि नांववं। दर्षाहिंनजमोघनसहसासमूदीत्रिगत॰ सलहद्र॰ पूवयामास दि। अथविदितक्रथम। प्रह्नर्वडि॰ यूनवाप्तिगिजानेः॰ महाधुमान॰ षिय
लप्रवादिति॰ कवादहृ स्किस्मिगताषिकस्मिन्नर्ययोजनी घोषलिपूजयक्रुमेः॥ ॥ॐ यथा श्रीकालुजामाकाण्डपा १२॥ ॥ अथवामामहाकुजा॰ पूत्रमान॰ समक्रत॰ अपावेदंजलिमालाहि
वनूसे॰ पथिसंक्रिमे॰। तुश्रयवाम॰ गतालावाच॰ सर्वजन त्रिगा॰। सूम्मा हि प्रवसेयूका॰ पूद्धप्रवलकीर्तिनाः॰ सूयवाक्रास्वयेदहृीवामानाजीवलावन॰। स्वरु एमयाकृिनीभम्यीम
तुलीवाक्यनिहियैं। हर्षस्थघहियैप्राप्तुपथिवीवासवायमम पिरु॰ सकालाहृदेवोभ्मानमहहिवाघव॰। यदिनामरावजाभावाजान॰ पत्रिनक्रिगा। तुविमादामहितदायथाख

गम्नि वासिनभयदि॥ मूकर्णं कि विद्यम्दिर्ष्ठे दे कूर्णं यदि। रूसनर्गन मजायै नामा॥ सुवर्णलिका नमस्कुजी। वीरविनानहुश्रीहु विक्षु नायपिना गायेव नाम्नू नामसमयाहिम मुनि। हुं किनाम
ष्ठुगावायि॥ रूध्वंमी नरजमविनाश। नाजमा। लंघु संहृस्थनजमामहवनेपिहु॥ वाता यनगता सुमध्या कुषी कजनसु प॥ पिह ध्रन न सु प्रबुद्धेनन्नं जिना॥ पिना महे नावु विर्ष प्र
ध्येषपि नामहे॥ मूनू वर्लि स्थाग हु कुंना मामु सुगनारिवन॥ यथा पि नामहे सायवर्य पिता वयालिना॥ गया मिकर्णदेवाम॥ याल पिता किनानु वीमु समवायातुकनस्रियै नयेन
लं श्रम। नावयावे श्रीवगा शुंया मायैपापूयादि कि। मूना हिन॥ पियगर्ने कार्यसमयन्त्र विपन्न। नामारि मं काद मूर्ज जा विनाद पिरपि था०। स्वया पूर्णनकीन त्याद्धीनस्वहुया धवा॥
यमृद्धामवा सुहुशीना नामशुयासहु प्रयेवनाश्रमवा सुवेछियें प्रायस्वय स्मिना। जिना मिकु॥ मूर्छी नाम धीर्घमा यूनवायूहि। रंहुं किनामैनदा हुस्कु यार्के पिक स्निव ननैन। नहुवाना
यसगनाडु यू॥ थी वज्रनस्नि यम वनाझ याथु विविधा हु यामी नाम आत्मु॥ यतुं त्रामायर्पीतीमां स्वदा नाज निव मनैमन कु प्रिनूयूष॥ का पिन्नमाबीननर्घू जाम॥ शर्व हि॥ सङ्गाय
याक्रर्षू नमनस्कुडुलेर्वलु। समर्वयां यवद्मीनां यद्युष्मीम पिनायवश॥ प्रांतेत्सा पिप्रि यन बांवक्ष्व वसुनसागनमस वाज कलमा साधु महुत्तुसह। गम यमश्व सुवनी यें नथा कु मात्म्यवि
व सप्रियाशालनू। समर्प्री॥ समनिङ्करुमयक कादननथा स्नुकु॥ सम्बिवायर्जनेसर्वत्रामान्स॥ यूनेमयपान॥ नन॥ प्र विपू॥ पितुर्ये किकनदाजन॥ समर्वप्लिनागानूया स्नुकु। यंकान्नन १६

स्रोववि निर्गम यूनर्थ्यं अदर्यस्वनुमसामहादमिषा। ॥ हुं यथायाभाकाबु नामा यथा नेना १४॥ ॥ समदर्भमिमननाम श्रासीनेयिन नीमया॥ केकयाम हिमंदीनेमूरवनयनिमुयमानसकसयवनलोपूर्व
प्राप्ति यद्यक नांजलि॥ मनावचन स्वनन॥ केकर्या स्कुदनन्कुनं सौमिनिविपियास्य पिद॥ यायावनकुनं वववरुयनमश्रीम॥ केकुयाविनूयाविन॥ क्लिनमुस्वहर्मकु दस्कु नामंदहनेश्चैनूयमानाम
प्राद प्रिये कन्द्रुप्रि यं यूक्रमनागसे। नाम स्युक्षायवव नेवायें वेहजती कन॥ सनाहनालयवनाक्षुन किउदयिनं सूर्यमस पूर्वपिरुदं दस्कु विकानेयमिन किन॥ नामार्दे थूगमायन॥ पयास्य
क्षुधयन्न नं। स्मृयस न्न त्रि यं दस्कु लोकस नायविकलं। निगसके यथाना ने दीर्घ मूर्छु बनि॥ श्वसन् ह्रुं र्म्मिमालिनमक्रान्ये कोहि नं मागवे यथा। उपयून मिवादिप मुक्तोन्नमन्निपि यथा।
मूनि मिक्कु विकामें नेदस्कु नाम॥ पिनुस्व। वहवसंकृदन॥ समूहुं हुंपपर्वतिनि। त्रिकृयामा सवेनना नाम॥ पिन हिनम कन॥ किंनि मिलमयी नाजामीनं नङ्गाकिवी क्विदु। उक्ता नाम किक
स्माद्यनान्हूर्षु द्युयहन। किं पिनयानायकनं मङ्गलानाद्यायनवा। श्रयदाद्यमर्गदस्कु कूपिमा पिसमीदकि। श्रायान मां सुदस्कु वकनायासायमीदन॥ समकया पितुनायासमपूर्व पि
य व स्मृल॥ दस्कु म पिकयामास हमूर्धि मूर्धिपमानम॥ मदानं हुंवलाकालि विपन्नवदनमस्थया। केकयीमकि वीस्बेवे नामावयनमवनी०। दविकिङ्कुम याज्ञा नादयनाधं महीपन॥ विचर्यनू
वयनाधीनायन मीनाहि हायन। लोबीनामानसादवि कि पिचवि नवामन। संगाधावायिया मावाइ हूर्त्तं रंहि मुदास्यं। कवित्तरु यमंकवित्कुमानं पिहनदन। नन्द्रुप्रावायिकन्नातेदं

विमाळ्पूवापिपून॥ कृचिस्ययानायह्नां मङ्गानाथनवापिमा। कृपिनल्मे ममायक्वाल्वेनेवाप्रसादय। पिनर्थ्यपनिछस्थ हि कृत्वावाकिं चिदपिर्थे। ना स्राङ्गी विउंद विमह्यमगद्वीमिनय
यन॥ नवीनस्यात्यछि नस्यमङी विनस्यय। कथं नामा पि यैनस्यहृत्वाङी विछमूसहृ। कुछ॥ नवीनथ्यहृव॥ छि य हृहृछि दावनम हिनानामूयदस्वात्वप्रस्यकं देवनं पिना। श्रुयूर्य लाववली विछि
मांकां न्हृछि॥ छिया निछ। पिनेवानाधमीयाछे दे वनं हि पिनामहृतामूनि य॥ र्यांहि नपूग्र याथानिमयस्नाकला कामनमाथपिर्ये हृत्वा पिछुवस्यमहात्मन॥ नकिं विन्यूनूर्थंकं चिदहि
मानाम्यिनाममा। कांथपूकां हवंद्याय यनास्याकृलिनं मन॥ अनदायक्कमंद वियथनत्थनपस्कन॥ यस्विमिनं विकृनायमपूर्वांहि महीयनं॥ शूद्रं स्नस्यहृनवाङ्गा वि लमम पि यावं १७
कांछ ग्यथ्यं विथंनीकृं मङ्गायम पिसागन। धर्म्मात्मना विमूकायपिशामनत्वयापिवा। नवेववचनाद्वं विनाकार्यं विछ्यनमम। य थिवम पिनाघृछ स्वमश्रुयनथ्येवम। नस्माल्वेम
वमीकृंहि यद्वाङ्गात्य चिक्षी पिनं। कार्ल्थ प्रगिजानीहि नछिवश्रुमयहृमभोर्यनगङ्गी॥ पृथिवीनीर्थ श्चांथंजलनि धिर्वर्त्ता। दूनंपिनगकुयामनूनं वाविद धुहे। नमाङ्गाञमनार्थ
मोविदिल्योमह्यवादिनं। उवाचवाथ्यं कृकयीमङ्कुनावाकृद्तमिनाय। पूनादवासूनयूद्व पिछुमनघूनहृ न। छुहृ पिननयीननमशूदलि ववह्यं। मयायया चिनमृळ्छ नननम्याछिय
नैं। नवनिर्वासनैयेववर्षांनि यचतुर्दश॥ शूद्येवचल्वया नोमगंनयंववनास्यिछ॥ वननवासंसमूहिथनववर्षांनि यंचय। यदि समयपनिङ्गं लवं पिनवंकर्तुमिच्छसि। श्रुमानेम

पिवाकर्तुं यदि सत्यांयवस्यसि। सय्यसम्कववर्षानि नगावनचनाहव। ह्यस्कामाथ्वनेयाहि धीनाछि नजरथनम। शूरमूकवमपिनह्वयस्कृदानां धृनममसि स्वछ्नयया दयाग पिस्वचन नियागयाछि माव
नगमर्नसनदायवेश्यन॥ ॥ इत्याआदिकाव्ये वनगमनादि॥ ॥२७॥ ॥ श्रुत्येवनह्वय॥ हस्वा कैकयासमूदाहृनं। प्रिनं हृत्वानमानाम॥ देववचनमब्रवीत। एवमस्तु निवस्यामि वनमवीनज़टाधरः
चतुर्दशलिववर्षानि छिग्रमिङ्गीयालस्यन्पिछु॥ देहङ्गाहृ मिच्छामि किमर्थं मीसव्यर्थछ मृ॥ नाङ्गांयनि विछंथ्र्धधानाम्यनानूनं। महानन्दहाम स्यादाङ्कु पस्यमहात्मना। मयिहृ त्यय पूहृथ किं ना।
ङ्गादविश्रमनवं। दे वनं हि थेवपिनानाजाडवृधम। शूस्याङ्गी निवसाङ्गकनि छामियदाङ्कमां। न त्वमन्यूस्वयाकार्यं स्वथं मवदनावच॥ यास्यामि हवे हृधीना वर्ध चीनजटाधर॥
मानिहृस्यविदुधायर्म्मकृस्यमहात्मन॥ पिछु॥ पूछ॥ कथंनामनकृर्यात्मद्धिलावच॥ यस्नीकृछमनास्थकेहृदर्थदहनीवम। हवमानिषवनैनाज्ञायन्मोङ्गायय निस्वयं। शूहृं हि नाङ्गी
धानां शुप्रानानिक्षान्यनानिया। शूहृमकपयस्कयेहवनायानिधाविनं। नाछु हनवन नस्मे हवनायमहात्मन। नम ह्यदयं कृकं पियाधीनयमन नय। किंयून र्म्मनुङ्गन्दुल स्वयं पितानि
याजिन॥ छुदयांहवनायाहृमपिजी विनमात्मन॥ नदान्थसयनाजानमात्मानमपिवह्व यं। नमिष्ठामाहृमङ्गेवसूखीहवछमपिना। नकूव यपूनादस्माङ्गीर्धं यउविर्नाहर्य॥ हनन्मा
छल्कृत्वादूयावहल्यिछुनवो॥ एवाहमयगस्कामिवनवासंदनकन॥ पिछुर्नियान्नकैकयीनवाद्भृदपमानसी॥ किनामवच॥ स्वाकैकयीहृपमानसा। शूछुपनानाङ्गानत्ववया

मासनाघवं । नवं रवडुयाह्युन्ति नाप्रुप्रज विनेहुथेश्वहवनंमाडुलक्लाइयावर्लथिंडुननाशहवव्वहृकृतीमच्यनाल्लकस्यविलीवनं । नामनस्माद्दिनथेववनेगेडुमथर्ह्सिपनश्वामूस्रहगवकुंस्व
यंथ्रोजाश्विगानुयशमाज्रहुसंनयहत्व न्यामामनीकूनाघव । योवर्ह्वनवनेयानशूनादस्याह्रविद्यति । नावन्नने यिनानाम स्वाल्सीषा प्यावि दूश्विनश्निमीत्रीमकृ । ला नाजाछ्वनेमद्दानूर्तव
च्छश्क्वेक्याश्हीनमानाथा लुह्वायानाम निद्यन्यिसयीर्यहिज्जहनाम्मी लिवाधमूक्वा सूढूश्विनशमूर्क्वमूयागमड्डयशलोकवाघ्यविपूनमनामाथवं वाक्कसंयाकेकयाश्यविपीतिनशकघय १४
वहृयशमाधूह्ननावाच्चनमूथेनमनदप्रियमनिकुनेवार्थ्व हृदयदानदी । छत्वानविथ्यथवामावचनंचदमवुवीताम्नाहृमर्थयनोदविनजाज्ञयूर्न्नेयानजी । सहयवाक्क ढ्वहावा । स्मियन्मीं
वेंयविनीकस । यलुगाचिहव क्लिश्चि ह्वर्ती कनुं हिंगमया । हार्गनदिमिविद्विवंथ्यक्वाबालानपित्रियान । नक्रुथाधर्म्मचवलादन्यद ह्वाथि कीहुवि । पिहुर्स्नेयागकवन्मारुसाद्दविवज
म्यहू । ज्रूनूक्वायुनहुमूलाहवयावचनादर्ह । वनवस्थामि विजमनववर्धानिथेचवा । ननूनमपिकुल्यानेसंहावयमि किंचन । यह्वयाननमस्याथेवाजाविज्ञापितक्षवथे । ॐ ह्वानुना
स्त्रियाच्द विदावाश्वाजीविनिलियींनवेववचनाद्दयोहनमायमहात्मन । वाजानेद्वश्विनीहत्वायूजार्थ नाझलूब्वया । भूयकिंनामसंथाके ह्वयाहुतमलीन्निनं । भूथमानवमोयह्ववे
दहांयविहायच । भूथेववनवासायगक्का मिसह्विनीहव । हवनश्चालयथाशीरुभूमन्वयथानयं । नथाहवश्याकर्म्मयमषधर्म्मशसनानमशॐ निनामवेचशहत्वा । लोकयाघ्ययाविपू

नश्वज्रोघन्नीङ्गानवयजिर्ह्वयामाहमूयागमनाकुन्वाचेवाप्रियाख्यानेनाममाडुस्कूदाप्रियी । भूकश्यूनवचनानार्यश्प्रद्धमरुयसीकिनाहमझनानाह्यागमंस्कृतकोलन्याचानिकदुं । केकयीवचना
डामावने गर्डुं यऋत्रनश्मनिशसंकृस्यचिडुश्यांद्दीलिनमासाशिवाघ्रहि । भूनाथ्याथायक्केक्याश्हल्वायाद्दा हिवेदने । हानांजलिद्दनवर्थकेकयींञ्चयदक्तिनी । हल्वानामलनलस्माचिन्निडंगम
मगूहानियडुश्मनंनामयविनूद्वोक्तालस्त्रदाश्हुहसक्षदाशनिर्गक्कनंहुद्वधर्म्मनूबखाऊयच्छनशमन्त्रिवर्लयिडुनामेवनवासदनायमं । निश्चयमानूनङ्गल्कलेसूलशयह्वगीन्वगतानृ
निमयचनिकुद्रयीकह्वानामश्वदक्तिनीथनेक्रनामसायक्षाद्दद्विनजापिवानयत्र । नहुद्विनदाय चूश्वं पिडुनाम्नविथ्यागजं । निश्चुम्यान्नश्यूबाहुस्माहुद्ददलयूनज्ञानेथदक्कवसस्मिनमूरवश्युमि
गृह्वयथार्थनशजन्मेमत्व विनाद्दचूमानर्थस्वनिवलनं । दूश्वमक्रनीननसानकल्पिद्दवू । शजनशनलक्कलवह्ज्ञयिवेकंयनिसंयमयकसशनक्कस्यवाजसक्षींनावाझना । श्वयकयनिलाककाकृस्य
सौम्यत्वाक्कीनवक्रम विथकृत्या । नवापिधनत्रपूर्ल्लीयजनास्यवसूधनां । यकविववितकस्याल ॐ कोग चिलविकृया । मनसेवमहदूश्वंमूहृहृर्न्ये निमाहिनशजगमममाडुल्लूदूश्वह्व यंवदयि
डुगहू । नथेववामश्ह्वगनं ममागमयहर्षयन्दूष्मनानदूर्धहृशजगमममाज्वनवासमास्मनाविचिकयन्माडुनुथेनिवगनं ॥ ॐ इत्याध्यात्मरामायणेअयोध्याकाण्डेवनवासयानिह्ना ॥ ४ ॥
नामाथदूश्वसंनफशवसप्रिकडुजंगमशजन्मसद्दिगाजाताकीलन्याचानिवंननं । माय ब्बस्यूनूषांह्नल ह्नद्दांधर्म्मयवांह्नथ । हा ह्नाचिनयसंपन्नाचिस्थितामाडुवाह्ण्या । नमेश हलीज

लिहिकूत विवनायछिवानिकः॥प्रथमीनाघवः॥कर्मीमानरीङसूमाङवः॥प्रविनम्प्रथमीकर्मीद्विनीयायीदर्दर्मसूः॥वाम्हलान्हिड़ूवायद्वानऊनाङाऊयूवस्हमानू॥प्रू हिवायसमान्सर्वान्दीननी
वऊयनसा॥विव्वनमाऊर्ठवनेवामस्वविनमानसः॥कीनन्यायिनयादवीयर्वेनियममाकिना॥प्रूकमात्ययमापूर्वीदवानीमियनवना॥प्रूःनयक्कीपूतस्यथीवनाप्रहिमवने॥प्राप्त्र
स्वयसेवीनामनयानानयामानसा॥प्रेद्विम्ववेवत्वनिना नामामाऊनिर्विगने॥ददर्नमानवेनूपदवागमथयनवृनी॥हमाऊतिदवयवीक्किनीमेगसवाद्विनीं॥प्रूर्द्वयक्कीपिहूंप्रूवयवीर्दु
नन्यमानसी॥मामवसूनकावोमावर्वंदविनयानम॥ऊवायवेनामश्यत्यनामाहमिमिनदयनू॥माथदस्तूविनननयीमाहेनन्दनमोप्रऊँ॥प्रूत्यनन्दस्रवाप्रन्याद्धसीजोविववत्ती १२
त्ता॥समानवेमहियसूपनियूक्का॥हिनाह्विकमपूऊयामासनोदवींमदित्तिमधवानिव॥कमूवावनमाहस्त्राक्की॥नन्यापियमाप्रऊँ॥प्रथाऊयक्कीपूतस्यमिववेद्धर्यमामिय॥वृद्धानी
पूतसर्द्वर्घवाऊषीहीमहाप्रनी॥प्रायूस्ना यूथकीक्विवधर्म्मयस्वकूलाविन॥पिनाविहस्त्रामवलामयप्राहियमायूहि॥हमामिनही यायूकपिहूनंदयपूतक॥महत्यमिङ्गू
पिननेयन्यवाघवमाविवे॥प्रूयहित्वींपिनानामाथीववाप्रहिमप्रूमि॥ऽवेकुवादींकी॥नत्यीनामावचनमत्ववीऽ॥केकयीवाप्रसेनक॥ऽ॥यदाकूलमानसः॥प्रूयनत्वेयऊा
नासिमहद्धसननामागनी॥मवहः॥ख्वायमहनाथेदप्रातस्रसेदव॥केकयाहवनस्यार्थनायेदाऊाहियाविनः॥महानयविनश्र्कदेगनवाम्हेयमिनहनी॥हननायमहावाऊोयो

वनाऊँयदास्यहि॥मीयूनर्द्वनवासायनियाऊयमिसोयगी॥साहेवस्यामिवर्मानिवनदविसऊर्दनस्वाहूनिहित्वाप्राप्रनिस्कूलमूलहमासनम्ऽकिवामवचश्रुत्वासाययानमयवि
मी॥कीनन्याइःश्वसेनफोनिहात्कदलीयथ॥समीनियमिनीदस्तूहमोमानवमाऊनी॥वामऊक्कायमामसइःखिमीगनश्चमनो॥ऊयावत्याक्किनीयीमोवऊवाननविक्कली॥ममाऊँयादि
नावामःयोऊनापविर्दुछिनीं॥प्रूथद्विविस्रमान्व्यास्यक्की॥नन्याइःश्वमाहिनी॥ऊदीप्रूवामैप्रावावचवाघ्यगकदयागिना॥निवनामयदित्वमयासथाः॥कवद्धमोमिववाहमिदइःखे
यापूयाहृद्वियागऊँ॥ऽकमवहिवेप्रायादूःखेहवनियूतक॥प्रूयऊाम्नीमिनल्वीदगिघ्रायप्रयविथागऊँ॥नथाकपूर्वकल्यानमयायमियविनहाऽ॥प्रानसिनमसूचिर्वहमापियायूया
मिमि॥नदयविहलीहगममनामविविक्किनी॥दूःखानामवयाऊोहविहिनामेदहागिनी॥मावदूत्यमनाप्रानिवायद्वहदयक्किदः॥सहिधदेसपत्नीनामेववाकीवनासमी॥प्रूकोयि
दूःखादूश्वगनं-ममवामहविघ्नि॥त्रियिसेनिहिममावदियींमानामविङ्गिया॥थामिवत्त्वयिसूयकेनेवनप्रमिऊीविहुं॥याहिमीवीमयकायिस्त्रीम्यक्रूपविवर्कीन॥सर्वाऽवगाद्धहिककें
यीवीप्रूमक्रूगी॥साहेवक्रूत्यनिघ्रानिवावथ्रहदयक्किदः॥कर्यसहिथकेकयास्वयिवामवननीगी॥गदसङमिदंदूःखेमाहूयूतकनान्सहे॥प्रूर्थेवमवदीमसुकाया॥र्थाऊीविनन
म॥प्रूयऊामस्यवर्मानिदनवायीयगनम॥कायिमीनीहकीर्नयोहैहाइःखयमिकयीं॥नियमेयूयवासेथ्रुकर्षयत्याःकग्रवने॥न्नूनसेवमिनानामयाहूःखिनयाप्रसि॥नियमा
गमितानी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] २०
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सद्धिमावउ त्वयाद्धिम सहद्ध्य कुमानामपिरु कदीपयदिवामी यविरवछुवनीयाम्यसिनाघवानमार्ह प्रायमालिथ्यन दिगर्स्वामिर्वर्ङ विडंपमाहहानिमयीघावीगनावाख्यालिकल्मकी त्वम्रह
यमिवाकस्मान्समुद्र ःसविमीयत्तिः विलयन्ती नथादीनीकी नत्याद्दुःखमूद्दिमीपडवीयवामाधर्म्मास्नाविचनैधर्म्मसहिमीपनाहिगद्धिःपिरुर्द्धीकीसमहिङमिर्ङुमम। प्रसादयन्त्वामिबसामभि
ष्वचवमात्यिरुमनखलैगम्रयैकन हि यगपिदन्तसनं। अवन्धवासःमायनीविलघमयनीस्यग। ॐ दवमकथयनीवाक्रमानीयविकिरनं। पूवाकागपिहवधायअचैवपिमाखूति
ः। जामद न्धनवामन ऊन नार किलधीमता। तियापूवैं यकृमुना कद्धस्यपिरुनाङ्कयाव। कटुमापियसिद्धनवानाइमनिवामिना। मह्वयिलोगेविद्रस्ताकथेवपिरुनाङ्कया।
अस्मार्क पूर्वर्ङ अपिरवघद्धिःपिरुनाङ्कयाहनसंसागनायर्यिमहाम्प्रद्दवघःदानःनदयमन्नमथैकन। कियगपिहसनं। प्रायनछ्नुद्दिःसद्धिगमामाञ्जनूगम्यमा। काविः २१
ष्वचवनैतस्मात्पिरुवस्यपुमीदम। ॐ ह्यवमद्दाकीनत्यांनामालसूलमववीऽजानामिलस्कलाहगहकियावमनूलमे। मदर्थमपिमसालाअपिजामामिलस्कल। दुःखवलसा
मविज्ञानात्मैघहृदयासिमपूवःसुमदवकावद्धःखीमयदमामलिगनूपः। दुःखवनमहाविद्धःलगमाहमूयाग्न कःकेकथ्यामुसुखसावनयतिमाधर्म्मसे कट। अहाहाकुमद्दा
द्धःखीमन्यार्य कर्डमिक्कसि। धर्म्मद्धस्यपिरुःकीतमाह। नानाझलियथ्याय। उच्चमयासमेनैजीव सर्वलाक विगर्हिनःमाहल्लकालःसौमित्र यदर्ह गमसनैपिरुः। ॐ क्कयसमवि

क्रम्यमूकूलमयिजीविदुं। अहिपायमविज्ञायमीमेचवक्कमर्ड्सि। सामूलस्कृहसीम्नत्थममयदिस्कासिप्रियी। धर्म्मक्किमिःयमालाजाधर्म्मा अनयगछनःनव धर्म्मायकामन्यपिरुवाचा
नादृगं। कविद्यामीमिसीरुत्वागदई पिमहासनं। नकूर्यायदिसौमित्र सर्वमेव प्रियगुमी। साहनलक्ष्मामिपिरुर्प्रियागन्नं निवर्तिहं। पिरुर्वनूमगमन्य केकथ्यायद्दाहुनं। तदमा
मूलज्ञानार्या कृतविपोकूलामगं। धर्म्ममाद्रियय द्धिमनूवर्तिरुमर्डसि। ॐ एवङ्कावचमेवामालक्ष्मलद्विवर्द्धमे। उवाचदयःकीन्यांपीजालिःमिमहानगःअनजामी। देमीदवि
कविम्रामसनैपिरुः। लापिता नियमप्रायेः पूनवागमननव। मीनूयकिह्नःकूमलीयाद्रोह झामिग पूनअगक्कयीनदनूक्कामा नियलीक नव कासा। यलाद्धहदविनवाछ्ककावाह०प
त्रिपञ्चीसहगंमगस्य। अदीर्घकालसनवलाकजीवितहः। लामिधर्म्मनयदामधर्म्मनः। प्रसादयन्त्वामिनसाघनवुग प्रसीदमकर्तुमविप्रमर्ङसि। वनेगमिष्यामिमयाङ्गयाछुयैप
दञ्जनस्त्रीत्रिवसानगस्यम। प्रसादयन्नयपःसमानवैयद्धकवान ड्रिगमिपूनवद्धुकै। अथक्कर्ह हल मिमिवादिमे नदावकानसाहद्धिजननीपूनःपूनः। ॐ यथायाका (दे
कौलस्यानूनयः।। १८।। ॐ सुद्धामामानवेनामाहयाल क्लमववीऽदद्दाकाथेवसामर्थं निवमक्कमिवानगं। थायमदशिषकार्थगवलक्ष्मलसैगमःअगदवाहसिकर्डुत्वंमस्रकानायसैत
मं। यस्यामममात्रियकार्थमनोद्धियविमघागं। मामामसायथहयःसंकूव्यनथक्कत्नु। नवृद्धिपूर्यमाङ्गानाक्मादृशीमाहनैदन। कृतपूर्वमहवीनस्यवामिक्वचिदप्रियं। गस्माङ्ककोः

३४

धर्मदुःखर्वं मूढानुक्रमयि लक्ष्मणास्तुष क्रिउंमनका ह्मिञविकनह्मिलाय। मिथ्यावचनहीनूष्टसत्य धर्म्मयनायदा। यिनाम निर्ळ्यह्लस्तु मयिलक्ष्मणनिर्गमय कश्यापिं यश्च कन्याकयात्वि न्मयि
लक्ष्मणा। गच्छ त्वंवति सोयोयिलक्ष्मीमाहू न्महायक्ष श्रद्धहि धक्षोहि लाधेयमूंय मैममह लक्ष्मणा। धर्मयथवाह मिक्षामिवने गहुमिक्ष पूर्णात मयिचीनाक्रि नधत्र जहा मस्तुलधावि हि गमनवलेव
कोकयाह विशालिमन। हस्वं। मयियुवत्तिमदवी हनकत्याद्य निर्वृता। श्रीमानमहिजानाउ यिहु श्रीकच्छमस्तु। एवं म निश्रिमावृद्धिर्मनखेव समाहिता। नविली विहुमिक्षा मिमूढात्मयि
कहिविता। कायनहुनान्नोतुड स्वथामद्वि वासन। थीवनाज्ञाहि धकस्यमथेवास्य विनिउड। कैकयीतुयद्धलीवमदा मांप्रति वज्रला। मध्यम न्य विधीतार्थं वलाद्धिवनमाहिता। नहूकैय
नूर्वयद्व नक्लानाह्न हन्स्मन। निर्द्यमाहयूमप्रीतिना। विलेधनलक्ष्मणा। सर्वामूच विलेयदानामाम यिनथमयि। अलक्ष्यपूर्वं कैकयाय दूकैधन नूथंनूषा। कथंप्रहानि कन्याली सात्र २२
उक्लगासती। कुत्याद्वियोहनसीवमीनथायिहसत्रिक्षी। देवैस्वनावसंसिद्धम विंयमिति भममतिअनन्त्वयति कैमूद्विममहान्यथविकृथा। कश्चिदेव नमीमित्रयार्थम लहलमहु।
यस्याहमिग्रहायायानकथंचनविग्रहं। मूरवदुःखवह याद्धगलालालाहनवाहवा। नूमेरुवक्षिदे वननहवक्षियलक्ष्मणा। भूवच्चं नविथमनं ममेम दितियन्धनकाय। याहनयानिवं
कमं यस्त्रिनायानविग्रहं। नस्मात्स्वमयि भवूद्विमनूवक्तिउमर्हसि। यजिसे कैकेयामानेमोच लोकमन। कथा। ननलक्ष्मणस्मि नमनाद्यविधूमामानायवीयस्यहिलेकनीया। नचैव

नाजाप्तविलीकनीयादेवैहि काशिक्रमिउंसमर्थ। ॥ ह्यआत्मा कायुनामवार्थमाले॥ ॥ हिक्वति नामहुलक्ष्मणा। आमूलदशक्रिनम। दुःखवायासयनीनास्यादश्री विधूनलायन। सव
द्वाक्कृदीनायाकुवार्म्म। धीनवर्षक। निनव्याममहासयायिलक्ष्मणंवनाधिन। नूमिनसयचनस्यासीकुकूटीकूटिलेमुखी। कुद्धसांवमूलेतु स्पदर्द्धवर्द्ध विगउस। विलि धूयायहमेचय
क्रिन्नुंवदीउनश्मीथ्यउद्धंचसंयश्रुमिव। संकल्याचोमहा। स्वर्गं यनिस्यनन्ना बाहुकृमर्म्मावुदानदी। संवस्मामर्षमाज्ञाकृष्णाजाजनमवबीत। स्वस्थान सत्तमायस्याजामोयं गमनं प्रति।
धर्म्मलायहयादवलीकवादहयतया। कथंहीहन संज्ञान स्वद्धिश्वक्तुमर्हसि। क्रीयेवाहनसोदाव लीहाव। कृतिआन्वय। गउ। काशी समालेख्यसंतम स्यकुमर्हसि। प्रनीयमयि
हक्रामिथ्यसनायायथूयागनं। देवैपूनुधं काद हाधलिनाहूमनिस्थमाहि कयीवननंतुचकस्माउ ह्लानसंकस। नथासूयलिकर्गंयीनस्मान्यायानूवं धथाध। धर्म्मोधू यायायासंयच्यकृ
ले। यविधि क्रिनाभनेवूयायोवर्थसिद्धौ धर्म्मयनितुमर्हसि। यदिवार्यास्वयंकर्तुं स्वमवन यवस्यसि। मोनियुद्ध कविश्रहं वचनं यदनेकनं। लाकनि द्विषमूत्स्वयनस्माल्लाकथियक्
नू। यदर्थवूद्धिमाहाय मीहनस्वामूयागन। शापिर्मोधमम द्वथाय त्रसंगमद्विमूर्धस। साकस्याप्रियमानद्वे कैकयाः कवलीप्रिये। वनकार्यं नतरुदा कामकाम धर्म्मक। श्रुतिस्य
हि धर्मंचयूनःप्रथ्यवगृह्ननाच्च त्रुनीयकागच्छतकिद्धि वेनायपथन। स्वजायायापहावायोः धद्धविल्याविलेधन। कैकयावचनं क्रूरं नैवेह कर्तुमर्हसि। श्रीवनाज्ञाहि धकैच।

त्वामूयामेत्यधर्म्मन॰ कथंनामस्त्रिमधर्म्मं कूर्य्यात्तदनूमंनृप॰ । यायावृद्धिर्निर्येनाह्लादेवनायितूमायदि । कथमपिमाक्तनीयामामेववृद्धिमतीं हवगा विक्रमादीनवीर्य्यायम सदेवमनूवर्त्तिताः ।
अविधूवमस्तुमऊत्त्वीनदेवमनूवर्त्तिताः । देवं पूनुम्रकाश्रदोयमनमयाक्तिवर्त्तितुं । नसदेवविपन्नार्थ॰ कदाचिदपिसीदति । लोक॰ पेम्मनुकम्पाऊदेवपी नूबयाविदं । अनूकबैकोर्य्याकोत्रसिद्धो
यथ्यीत्यीसदीक्षसि । अथमत्योवृषदृत्देवं पत्रनुमानवामनवनाश्विधामनपुमीयंसमूपागतं । निर्वंकूतंमिवाह्लानंगऊंमदद्वलीक॰ । प्रमीयमागतंदेवंयोनृषमानिवर्त्तयोत्ती
कपालामहस्तुनयौवनाह्लादिभवने । प्रतिहस्तुनन्काश्चक्लिमूलेकाननायियम॰ अर्थ॰ कस्यामिपायानींकंकंयाम्रसवयुगा॰ अलिमकविधाननपूननाश्चापवर्त्तन । येन्निवासस्कवा २३
वालेमिथ्येवामममाच्चिन्त॰ अहंविवामपिद्यामिमानवाधवलादिन॰ यमीयमपिदु॰ स्वायनतुदेवमूपागतं । प्रविविद्यानिवामहीयत्यीनुयसमाहितं । वद्रुवर्षसहस्रान्कुप्रजाया
लनमूहर्म । आर्य्यपूना॰ कतिचिक्लिवनवासेंगमम्वायि । पूर्व्ववाऊर्षिवृत्रनवनवामाहिधीयत । पूर्व्वम्रच्कविनिक्रियानाञ्चवयमिनिर्गते । सर्व्वक्लिमर्थंधर्म्मः धर्म्मलोपविनंकयाः
केकयीवचनाद्धर्म्मावाञ्जीनयम्रकूमहंसि । प्रतिज्ञानामिमत्सत्यंयामाहदस्तुवलाकराकु॰ यदिप्रगीयंदेवंतंनविहत्यामूपागतं । त्वसमवीस्यदेवसायगीयस्यनिवर्त्तनं । तदैव॰
यलसंस्कामः देवलाक्तात्त्रिवर्त्तितुं । अविसफूतमंलाकविधायमनकिंचन । त्वदर्थमस्तुइत्युक्त॰ पविवर्त्तितुंऊं । मंगतैवक्ति । यायस्वमतवैनिर्द्दनाहव । मूलमकामस्य

लामहींयात्त्वस्तिपिदुवला । नहो । मथमिमोंवाक्नुनधनुर्द्धरयम । नास्त्राहिनयलोस्त्राहिनलवाकूंनदनवसमूमितदमनार्थंमसर्व्वमनद्धकुक्षयं । नवार्थमाहिकोक्त्यैलोय॰ लवुवधामः
मम्रसिनागीकूश्रानलविग्रश्चलिमवर्द्धसा । प्रगृहीतनक॰ लकावद्धिधापिमहाहव । रवनश्रानाहनामयपनतुनववालय॰ प्रावकौसममागम्यविग्रमवसमोहमा॰ स्वकुनिश्चयेनिश्चि
ल्यंगहनोद्वर्णनाकथा । पस्वन्वनथमानमेम्मदीनवकुसर्व्वता॰ । वद्धामयंउलिताविप्रहीनलवासन । अथमाचित्रविधकालाचित्रिताकृषिनासनानु । यविभाश्यमहंवासान्नवाजिगऊ
मर्म्मसू । अथमम्रुपनावसाप्रमाव॰ यहविद्यति । वाऊश्रायतुलीकहूं स्वयतुर्व्वंगवपना । अथचन्दनेसावालीकयूनाहीधनस्यच । वस्रनीयविमात्मस्यसूदनीयूजनस्यच । अलियावीमो
वाद्धवाऊकर्म्मकविश्चमन॰ नद्धहिकाद्येवविमूयनीमयानवामूहत्र्यानयलो॰ सूहजोने॰ यथाभगवचैवसुश्वावलोतवक्रुयोद्यमांलोधिनवाश्चिक्तिकन॰ ॐ लिस्रमीनेयविगृह्मोयोनूषस
लस्याधनामममहिपल्लीदयनु उवाचहत्याविपिदुविनियहा यनस्वनोमेयममाय निग्रय॰ ॐ लिवचनमूदानमनूमर्कोनदहिसमीक्षुलक्षीलस्यनाम॰ मधूननवमूदानमूर्थयूक्तपवि
कूपिनंपितनैपतिपगीन॰ ॥ ॥ ॐ यथोअश्रकाण्डेलक्ष्मणसीवैना॰ २० ॥ ॥ लक्ष्मानामस्यसंगतं लक्ष्मतंपितनेपति । प्रक्षके॰ सानुयोत्वाप्ते॰ समयामासवाघव॰ सोमित्रनेनदाश्रयेम
हक्षंयच्वामिक्लसि । यसमानूवसेमनेमहूर्द्धमांवलादिव । पूर्ध्यनीतस्तुधर्म्मात्मा सत्यवनयमायग॰ । पार्थिवानानूनकर्हं स्थास्थालाकतुनूर्म्मम । सत्यप्रतिज्ञहत्वामितिपितवैधर्म्मवत्सलो ।

पुण्यं कीर्त्तिमवाप्स्यामि॥ प्रयास्यद्य च मोक्षगीं। यदि त्वस्मिन् यिस्त्रहाह किञ्चिन्नवलम्बन। तमाभिवर्द्धयमौ त्वं याप यवृद्धिं समुच्छ्रितां। धर्म्माज्ञानं॥ ४५॥ रवनः॥ सुदनस्य महा सममपि तुन स्याप्य यं क
र्तुं न शक्नोमि मनसा पापाहं। अदीक्षमित्रिप्येकार्तुं मम किञ्चिदपि महीपतिं। तमामयिगतह क्का गुड्डु शान्त्रयापि स्वया। निर्ध्यलोकनमनसा प्रहर्ष देवन यथा। मामन्व विलेख यहनुष्टु स्याश सर्व्वस्त्रया।
कवचप्रापि धर्म्मात्मा पापुक्ष्याह शिवत्स्रया। यविपाल्यव्यक्त्यं न ममपुत्रियवि कीर्त्तना॥ धम्मी धर्म्मधुर्नौ गुर्व्वी महर्ष स्यामि वाघव। हवर्मन सहमौ त्वं गुर्व्वीं नाद्य भूवी वह। गुरु कुवव मनामवत
ममलसुलक्ष्यदा। सुप्रकन्यां स्कि न धर्म्मपूर्णं दन मिवानुऊभेला कथेनो। न किर्याक साममायिह विद्या कि। वनवस्या चरमपि द्रुनो मानि वनह्व। त्वया त्यक्ता मह ममपि विनिह्य ऊ महा मिमां २४
त्वद्दगन हिवस्तुम स्वर्गं पिनमगमन॥ ४॥ ययस्मिन यिकस्न द्वारका हं वीवमा मिति। तमामासनूग च्छन्न निवहिरम हंसि। वन मिवसन स्के हं मानावन विद्या निर्दाश्रा हशिष्यामि यूथा
लि स्वादून्यथ रूला न्यहं। महायस्क ह विद्यामि दुर्लभ विमथ यूथ। प्राज्ञा कवह स्ह त्या हं ह विद्यामिमहावन। सर्व्वगावानून कं मानयवि त्यक्तुमर्हसि। यन्मामामार्य्य पुत्रस्त्वं युद्धे क्षपितु
वृथम। यातीय मांहावि ध्यामि युध्य मूलरूला निय। बाधयिष्यामि वाहावं वनमवसन॥ ४ पुरा। श्रुत्वा ज्ञानी हि मामार्य निष्ठितं धर्म्मवसली। स्नू गीन कनमार्गि कान ई लवन्मागन। नन्दिव
र्त्त यिनथ्याह सर्व्वथा वघूनन्दनो। न हि नाम त्वया त्यक्ता जीवयमिति ति ममतिम न निवर्त्तयिहुं न कावृद्धि न मा मम स्किवा। सहवान नूगा नातु मामानूगम मर्नेवन। सानूमीका वदू विधेल

श्रान्नयनद्वि ना। वार सियत्वबीडा मालक्षदीताह वत्सस॥ ४॥ सहयाप्स्यामि सोमिते त्वयाहं गह नेवनीः। लवान् दियवमावी भू॥ ४॥ सखरक्ष॥ ४॥ प्रियपुत्र म। कथाह नामैगमनय नखकं स्मी कदवीनू दनीयस
तुमा। उवाच हृदयाह दयनन्दनमनाम् यस्मात् हस्व विहूनो हनी॥ ॥ इति श्रीमार्य्यजीवामोयनेस्सूयोश्रा कोसल स्मुदानूनयानामसर्ग मा २१॥ ॥ यदि धर्म्म पुत्रस्त्वय पूतवर्कितु मिच्छसि।
नमामवचने धर्म्मो न च धर्म्महा नांवने॥ त्वं गुरुत्नाम याहस्त्री कयोहि स्त्रियमे स्वधर्म्म वचने भल्ल या कार्य मम॥ ४॥ पूत वि। लषन श्र सा लयायवयानाम लिङ्ग अय निया लिक मश्रनत्सम त्येय मादो॥
नोय विनश्किंतुमर्हसि। न वा यि नाम नकाहं विप्रकानान्यथ पिधान। साहंस कोना स्तकत्या॥ ४॥ यनिह ना वि। लषक मनिह कासं सयत्नी हि वृत्तं विप्र कामासनी। पूत स्कायी समाहियत्व हवामि त्व
स्क मानसा। साहमयनन ल क्ष्मा मिजा विष्टुं सर्व्वं वीमि मीं। हस्तिना यादेयन व हस्त कास वियाजिना। मापूतवचने कामी॥ ४॥ स्त्री वि। धेयस्य त्वयर्म॥ ४॥ कामवाक्य स्ह यस्य ह॥ ४॥ कर्ना हु चैव व। या
मीय धर्म्म यो वाते मि स्नायू नो रूला विरं। स्वाम निकुयन्ध वनम निवक्त मिहं स्थि। स्त्रिय यं पूतानी नागन्ध सर्व्व कर्त्तु विधाना। मनूनामानवर्द्धं दानी गुरु स्वाम वच॥ ४॥ कृतव॥ उवाच यव लिपस्य
कायी कार्य्यमजानन॥ ४॥ कामवाक्य हरस्यनकार्य्य कृत्वा गावस॥ ४॥ दनविद्या नूया श्रा था। लोनवना तिवियम ए उयाधा यान्दन यिना क्र त्येव यत्ति विचाराप पिदृहन्द लोकमा नकास र्वा था
पृथिवी विरा। गुरुत्वनायिरव ति कास्ति मोहसमा गुरु॥ ४॥ यन्तिगाउ नवस्या श्रा मा ना न उकथ यनः॥ गर्ह धावनया याल्यानमन मानाग वीयसी। साहं केयिम मानाम धर्म्मता। लोनवक्राथिकामा

ननीयाविनेयवद यथा यस्मविद्याविदुमन्नूकाममापितृकार्यं न सम्नै कृत्वबलन। अहि मिय स्वधर्म्म न नाक्षवा जीवलावन। यदि स्वमम कम्मम नाम नी हि गी कूला विमं सत्युनृपे निर्मविनी। यथा वद्रूकी नक
विश्वस नरस्युमायया ज्यामि मृतायमकृयं॥ ॥ॐ इत्यार्यश्रीनामाय (दा) याश्चकाछु कीन त्यावाच्छे नाम सर्गः॥२२॥ ॥अथ नृ नगु वजो सो मा कनेय त्तमा। क्षि नः। यस्तोर्वि व बी
बी हनुमक्तिष्यवाघवसममवेवरुत्याद्य नाजाप्रवत्क्षिप्रतुमनप्रतुस्वमनक्ष। क्षिममद विलिवर्त्तन। यातुमर्हसि मनूक्षद विधर्म्म हनाम्बन। वेनवामायवर्षालि नवर्यवचसूवग। हर्त्ता हि
दि वर्न मुनी हर्त्ता श्रेण वरदयाग। क्षून नक्ष नामसन हर्तुन्न याहत्ययमवादि। घूनयोगमनं मत्त्वं प्रलक्षि क्षितुमर्हसि। यमत्रमानि सम व हर्दमानाधमं सदा। नीत्नुयतिक्ष्ठ श्यामिक्व त्रुमादा
यहपूनः। प्रविष्टः कूनलीयहनस्मा नेन यामिमातुयभ कूलजानामि विस्कीर्णु वाङ्गमभि ननसमा। याक्षुक्ष व्यानययसां कीन लानी महात्मनी। कूल नील समाचान धर्म्मज्ञा स्थिय
नद्रम। देवनंगयुनृवे व रुत्तीद विप्रसीद म। न स्नानाहमनक्ष स्थ मामक्ष मय निवार्त्तिदं। निर्विवानं गुणो वाङ्ग मशा का यामहात्मनः। एथाश्रुत्वं नवसाध विनिधननमयेवय। कान्हं नाघान
हावाघान कृत्यां यत्यिनुर्वयभरना दुपक्षि विद्ध्या हयत्याविनयवृत्या। किं पूनर्यस्य मदं विस्वरावनियमाममिभ। हत्या विवर्द्धनीयवरवत्याविनयाद्या। ममनाजा क्षि। विदयिवकाना म
दयकृत्या। एमी यमयमीयं यानवकायं प्रसीदम। के कयी याम हारान्म रुवमावा महायना। अत्यमय यिये वाक्नं नवका यो प्रसीदम। यथाहृ भवेद प्याग्ज वनः सर्वथा हृत्या। केक यीह

गिनीवद्धद्रुप्त्यामहतन्न्या। विनूद्ध कनवत्ति हि वुद्धिमक्षः। कथं यन। वनहीमेन यितथा विनूद्धकन संगे है। ततः कथं स हृपिता हं विनूद्ध यं महात्मना। ताताबारु वनं नाय हक्षनाजयकानि दमय
र्म्मा त्मामा विनीमन प्राप्ते स्थाधिपियव। कथं नाम विनूद्ध यं सरुगन महा त्मना। पिता दर्थो वनाङ्ग रुवनाथायावो ह्यामि। नद्र दाषा स्थि कक्षु हरवनस्य महात्मनः। प्रतिपुदर्त्युवा नाङ्ग कि
कयी हर्द्वा वर्ष। यदि गृक्षाति कस्क स्याधा घस्कृत्सवनी मिनं। नाङ्गा यया कय ति हस्य यदा स्य स्य यदा वतं। हीनाभूमाकृतदा सः का नाङ्गः सत्य वादि न सत्य कनवय वं धर्म्म हत्तां कद विमय
न। वनेहि धर्म्म नाजानन सकाना हविश्या नि। हे कधर्म्मा थे नक्षा हि सायू व तं समा स्कि नः समत्यङ्गः सत्यया अज्ञानहि यथोद्य विध्या नि। मातृ सद्र हकू न ला स्कि न्नधर्म्मार्थ सेनया। धर्म्मङ्कुत्वं
नत्रूयक्षि द्वामनागे तुमर्हसि। प्रसीदा नूनया मिक्षा नानून्याम्मि कथं वनः। श्रू नूजो नीहि मो मा नर्द्धनवा साय दी क्षि कं। एवं स नामाय नवृद्धि हावा वनं यवर्धं सरुतमा तेन। हवाय वः सानूनयं
यहाधु मीमानवं धर्म्मरगो वनिश्चमा॥ ॥ॐ इत्यार्यश्रीनामाय (दा) श्रूया श्चकाछु कीन त्यानून यानाम सर्गः॥२३॥ ॥ॐ अथ का हुत नीनामाधर्म्मा त्मानूनयं वचः। स्ति नी आनयनं दीना
मूनवृचन मवृवीन। त्व याद विमयावेवक्षु यं नृपनि नाम सन। जो मो रुत्तातु नूप्रोव सर्व्वामामी वन सून ॥ॐ मा नितु विक्ष रुत्यरुनववर्षानि यंचच। वनयूनन्याव तः का त्या मि पि तुध
मन। ॐ स्यक्ता मात्रि संयूनं माघयत्याकू तं ववः। उवा यवे सयत्रीना वसुम। अन नमकृ मः नयमामयि धूव तंवनं व च मृगीकू तं। यग्ध्यागमन दृष्टिः कता पिवनृपकृत्या। तीन था

कृवर्णी नाम ॥ पुनर्व्वचनमब्रवीत् जीवयन्त्या ॥ शिष्याः कृष्णदेवमैत्रयूनः ॥ सुरशाकवस्यामम वेवाद्यवाजायुक्तवानिप्रभु ॥ सकमाना हिमाहं न तुं स्वामिमानगवाद्धनं ॥ पुनर्वचानु गन्तुं स्वायात्कं जीवयन्त्या
स्वयाप्रिय ॥ महात्मायामहात्मावाय मिवेवनमि ॥ स्त्रियाः ॥ किं पुनर्नृपमिद्ध विमहात्मादयिकधृय ॥ कुनकश्चापि धर्म्मात्मा विनीतोऽनुवत्सलः ॥ अुसि नये यथिवाहं पूत्रस्य धर्म्मकृष्ण ॥ महा
थिकमवाय गौरवमादय्यवाप्यसि ॥ न किं किं विदकल्याणं कृस्मात्स्यन्मयदं गव ॥ यथाऽनुमयिनि स्त्रोमकपूत्र लोकनमयिता ॥ पू किमार्थं मनत्वमकथाव्यकर्तुमर्हसि ॥ कार्य्यश्च त्वया तव
यसिनयथ मयाविधूव ॥ यतो वृद्धगन्धकार्य्यं त्वयामश्लोककविता ॥ सा धर्म्मचारिणीनाम यत्किं यत्किंयवायन्तनानु वर्त्तमधर्म्मद मासङ्कि नृषुम्मयाम ॥ हर्षव मातरूपनानाम नीरहं
पवायधा ॥ ० ॥ कर्कोकिं पनीयायाप्रत्यवले महीयमा पुत्रस्मात्सदेवकर्तुं स्वं तु नू मानिवकारह ॥ स्तु तु मर्हसि धर्म्मदाम स्त्रीणां ममयन्ता यथेऽ ॥ मे हन्त्य धर्म्ममयादवनाधननील्या ॥ कर्हं
विकानुवर्ति न्या कर्तुंसयः ॥ ० ॥ कल्पया ॥ स्रोतस्वदविद्युषः ॥ पूजयत्री यकृवमा ॥ वसरकर्तुं समहिता ॥ ममागमनकीर्तिनी ॥ कुरु सकर्तुं समहिता ॥ ममागमनं पुनः ॥ यदि तावन्महि
हीनाथावयिष्यति जीविते ॥ ० ॥ स धर्म्मार्थसहितं ॥ वाममलोकं वराबयकीन्त्यामा ॥ कुलाचना ॥ गत्स्वपुत्र लिवेंमस्तु कृवल्त्वेपि कृतां सनीक्षे स्त्रिमक्रमविष्टवाड्या मियुनवागमं
हे पूमानिवगात्कर्तुं विमंथ यथान्कर्म ॥ यज्ञान्यदपि कर्तव्यं कवियानन्सरवीवेऽ ॥ गथाऽनुमार्गं वनवासनिश्चितं समीक्ष्य देवीगतसत्त्ववेगना ॥ वकुवकुयः ॥ मूकसं वक्षुः स्वि २६

॥ ० ॥ किसानून यवार्थं २

नामसमदेवास्य कल्पप्रलापिनी ॥ ॥ ० ॥ इत्यार्षे श्रीमामायणे अयोध्याकाण्डे वनगमनानुज्ञा नाम सर्गः ॥ २४ ॥ ॥ समाप्तस्य न मातुः ॥ यः कोशल्यानाम मब्रवीत् ॥ स्वकाकृतमिदं वाक्यं दीनासा सा विनय
नान्मदयलोक धर्म्मात्मा लोकप्रियचित्रांजनकसमयित्वंदनवथाजानः ॥ कथं दुःखमवाप्यसि ॥ यस्य पश्यापदासाप्यहं नानानि दुःखजं ॥ तस्य पूत्रः ॥ प्रिय यात्र ॥ धर्मवत्सुगमनिहांजनं ॥ कथं
द्भुमादिदं ॥ ० ॥ स्वाकस्यवानरायं इत्व ॥ नाज्ञानिर्व्वासितः ॥ पूत्रः ॥ प्रिया मिनुदावानिति ॥ पुत्रे यथाकिमीदीनो पुत्रलोकदूतानम ॥ वियागार्ति समुद्भूतं हृदिया गतमिनतन्विकः ॥ विक्रावायमहाभूमस्तु
कुली यमहंतन ॥ मोऽपधर्मरत्य येनु मैवसीयां श्लोक यावकः ॥ त्वया विहीनामवसी ॥ लोकाप्रियमतिसं दृष्टवनु ॥ तु ष्टकरु स्मिवासाय खित्रानह्निमोलयं ॥ वन्मनस्वाय्थमध्यनूः ॥ पूत्र मनुभावतिमा
थ स्वामनूयास्यामि वा समस्यादि किमममतिः ॥ ० ॥ किमातुर्निगदिता काकं समकनूतारुनं ॥ कौसल्या नामावब्रवीद्धृत्यकौसल्यां ॥ लोकविहृत्वानि ॥ केकयार्थं विमानागामे यिवावन्धमाश्रिम ॥ रुदत्यावयविता
कानमप्यावर्त्तयिष्यामि ॥ हर्तुं शेव यविहत्ता ॥ नश्यमननकथंचन ॥ मरत्वेत्यानकर्तव्यामनसापि विगर्हितं ॥ यावज्जीवति मे कर्त्ता लोकस्मिन् गुरुजीव ॥ नावदृच्या देवत्व शुश्रूषा नान्य हृत्या ॥

नाहं त्वयानुगतया लक्ष्मी ह्निनवदेवगं । तमव हृवसकीलमावाधसितुमर्हसि । वाजा ह्निगणुरवति प्रादसनां जीविकस्याव्व । अनुगतु समादंखिनमामर्हसि सर्व्वथा ॥ ॐ स्य वमुक्ता वामनकोमल्या
धर्म्मदर्शिनी । तत्थक्तुवायङू ॥ स्वाक्तो वामे सीव ह्नि गवने । निश्चितार्थतथा मामे विज्ञाय गमेन्ना स्नकं । प्राक्षानि कस्व स्यायसं कर्तुं समूपचक्रम । मे निरुक्त लमावाथी मूपस्त्र स्यउ लेयवि ॥ भवकाव
दवीवाम स्यगत ॥ स्ववास्यण ह्नियां मूमनाहि धेसं । मेद्यमनाङ्गई र्वलिहि रूथा । दवानस्यथ विविव न्यवमधवउ तयमा । गश्चमार्तेई विश्वन्यएं जोमायव हेया द्युत । मूर्द्धिनेन मूपसा ययमि ॥ २१
धयस्य यीतिनभवेक्षा घ्रीमेषधीयो । धीदक्षि । तनिववैधसा । वाय स्वस्यपणार्थं हि मत्रुमम्गजाउपव । स्वाक्ति स्कर्व्वरुतसार्द्धं दवोधेवमहार्षिति ॥ स्वस्ति प्रमाविधामाव स्वस्ति पूषारुता
र्यमा । वयून ॥ स्वस्ति वाजावक वाउवसूति ॥ मह । स्वस्ति मित ॥ सडादिसे स्वस्ति पूडादितउक्रदितण्ण विधिवण्ठव मामा ॥ संवस्सला ॥ क्रया ॥ दिना निवमूत्रलप्रिय स्वस्ति पूजादिनलुतौ । मन्म
भली महलुस्य सर्व्व देवै ॥ पूनसक्तानं । दक्रहुं तुस्थ यामस्यवसात क्रसुमभली । यस्य भली स्पपनुस्य विनमाकल्यय स्नाया । अनुमतार्थप्रयामस्य गहल वनुमंगली । वदा ॥ सांगमस्कथ हिताम ताया

थर्व्व मामर्ग । ध्य ति ॥ स्मति शमधावयांउलां पूजसर्व्वनम ॥ सिद्धादवर्ष्यय ॥ सर्व्वतमाद्धवर्ष्य थामलाभमामा ॥ सूयर्पु ॥ पितनाव कंउलांमसनूत ॥ स्कन्दश्च सूवसनानीस्तथैव च । मरुद्गणाश्च ॥ सय
र्थयानातदत सामस्रउक्ताहहस्य ति ॥ मत्ताता हितहाअ्यथान स्तदवकामक्रोगां पितृविय दियानि या उच्चांपूज सर्व्वनम ॥ महाव नविव नामूनि धर्मधवस्याग । इतव्यविमोनामा ॥ सौम्यव्रयाव
तुग । नाहसाद्ध यिनानाथ्य यक्षग र्भर्व्व कृतनाम शिवाहत्वंउतपूज यालाधान स्ववासिन ॥ यट नायु । पूका ॥ कीहादं नोवमस्यक ॥ महा । सवीहया । अतिद्रम । शिवाय विव नउग । महानजाव माहात्स्व
स्ना ॥ सि हाल्कथैवव । अक्ष्यम हियाते व शिवास्क संउपूजका । यवासिषाशिनाशोजा मानामुपमगदिगा ॥ मयाहिया थिमा ॥ संउ शिवासउवनयवा ॥ स्वस्ति गस्वन्नविकह ॥ याथिवयस्य पूजका
दियाल तेवजं उयाजलवाविहव व । सर्व्व साकप्रउर्द्ध स्नावषहीकस्कथैवच । तं लाथ्कनाथयवनवकउच्चांज मार्द्दन ॥ आमोग स्कशिवा ॥ संउसि ध्युउयमनोवधाम ॥ सत्ववनयाउगं काल ॥ स्वः
स्नि प्राप्तृहिनाघव । सेसिद्धार्थम वागत्वाम स्ना ओपूनवागर्न । उक्तामिलेंक दायूतद्वर्दवाउहि ये पूत ॥ ॐ स्वस्त्याम् । दूयाशाय यश्विस्यांहित व्याव । पूनवागमनाथहमंत कपूजस्व वागं । नीधेवी

वने

पुनश्चा यान्तिप। अयं मुहूर्त्तः क्षणो। वनवासमनूलोर्न्नं पूर्ण्ठवन्दु मिवादितं गमयाज्ञिताद्वगमर रमिवादयामहन्तं य छ्वेव पितामहे॥ सुतो। ॐ कश्य यान्य विनायत डिनोपि त॥ सुउ मया हि यापिर्न
म सूर्येन मन्त्र प्रति पूर्ण सो चनासमाप्य माच स्वयन्ने दत्तौज लि भोद क्षितं वेव चकावनाधवं पुनः पुन छवेव निर्यायसत्तज॥ ॥ॐ स्वार्ष जीमामाय। तेनू आया काले ष्वत्स्य यतो जिया नामसर्ग॥
२७॥ ॥ कौन न्याममे जिवाद्वेवं ले यो वा मय वा धुवः॥ कृत स्वस्थ यना माता प्रगच्छ सहलक्ष्मणः विजायज्ञा जसूतो ज्ञान मार्नय दई तन॥ कृत विवजमी घस्य हृदया निजधर्म सत्यं विदन्या विय २८
तस्काले न त्यजानत्य मानसा आर्ते सीतो वसात दर्थी विनाद्याजि घयन॥ दवानि दूंष्ट्रम नवहीनत्वा निय नमानसा॥ सूक्ति द्वा वाज धर्म्मादी वाज पूजीय मन्नज्ञा॥ सहाना सकृमयना। हतु दर्तन सा
लसा। नक्षो स्वव ममः अमा वामागमनकाले हीन प्रविवि लाय मेहसा वामाव न्मालनकृदा॥ हि क्रियम कृ जने॥ कोपं जिया कि विदवाघ्न स्वः॥ ॐ मद्दीनमूर्ख॥ कामा ममो दूः स्व सम क्रि नानि
हृदयमना हसी मोद दर्शाथ प्रवि। असह कसी वीवन्नम मध्ये लक्ष्मी विनयाचन नौ क्रि ति मुविनयाचा नमे यन्त्रौ प्राणेत्याचि प्रियाचि प्रियानि। मातु हृदूव हत्यमेव प्रमम्य प्रदामर्य। वामगा ने विक्रि नोद वी वामेनेव
मूरवीन यदा। श्रुति वी शूव वा मा हा वय मानय म प्रवीतादृष्ट्वा कृर्णन दूः खार्त्तः किमन दिति विकृला॥ किं न वा दस्य माया॥ नो सुकृतः पूष्य दीना दव॥ प्राप्य तवाद्भुत ... स्वम सिद्धर्म्म न

स्मा क्रमगेना यकन पूर्ण प्रति भनक॥ आह देवदने बानूक त्व दानवि वाजम॥ आम न य ज ना त्वी व वाक्य प्रदत्त करी॥ मावी त्रम मूर्ख कस्मा लूर्जेन्दु सह णप्र ष्ठं॥ श्रीव वाद्या हि मरू तु स्त ममाग
धवं दिनथ वाक्षिनाह न्यज मया। वद्धिना नस्तु व क्रि त्वां मयना घ वसे न म। नन क्रोड स्वदधिव स्वास्म नो वदयाव नाः॥ सूर्द्धि मूर्द्धा हिम कार्थं द धर्म विधिवत्स वि। कस्मात्त्व हा नि मूस्याक्षे
ध्रुतिम् मूर्ख राघव। किं कवामा धिजिल्क्षि यो वनाद्य हि घयन॥ आ त्व वथ सू कृ क्ष म ति कौ य मन्त्र हृदा॥ नाग पुष्प वथ॥ द्रूकः॥ कस्माद्विपू निषूदन। प्रिय तसानाग जबुस॥ दुहलहत्व
लक्रिनः पत्र क्षणानाथ यम त्वं कस्माद्द्या हिमव्रत। गुरुसत्त्र सुयत्नः॥ न्यक्त्रुरुवारु तेलम॥ नग याति पूनकः॥ कस्मात्त्वं विजयावहः॥ एवं कुवो हसेनी यामा ज्ञातदं कौसम्ये पिलीर
वाचं दववा धीवः॥ सुतु नरोत्थमा क्षितः॥ वाजर्षि कुलसे लोनाधर्म्मज्ञ सत्यवादिनि। दमें मैथिलि धीमानत्वं हत्वा वाक्य मिदं मम। वाङ्गा सत्य सु तिङ्क न पिता दत्त न च धनम। कैकयी प्रीत मनसं
दरलोकिन पूना वको॥ मम ज्ञ कनवे वाद्य यौवनाद्य हिमवन॥ प्रदत्ति नमनौनस्या धर्म्मज्ञनाय वाज्ञ्मन॥ मयाव र्पा हि वक्तयै चतुर्द्दशवनत्रिय ग्राहव नमायथा याध्रायौ नाज्ञ ता यमनि नि
न। साहं त्वामागतानाद्रष्टुं प्रक्षिप्ताविजनेवने। आलय नाधे यमा सयामा मनू सुहातु महसि। त्वमश्त्र त्वगत्तव माहा तु वसाश्व वसमूयाहिता। गुरु बायनमा हत्वा यावदागमनं मम। मद्यं यारे
यजमान मोहि लव नवस्तु निहत न ना समी प दनमसुनः॥ कयोचनागे न्वर्यमदमला हि न सहकृप न स्वपं॥ मध्यालय यातुना॥ सुरया हत न ना गताना न मनु॥ अहं हि पितन्म सवं त्रिकीर्षि

र्गमिष्यामहस्त्वं वनमध्येव आस्यामि कृ नूनं हृदयं क्लिदीनम यिर्जाणतद्य कन्याहिं वनेमूनिजनप्रियं त्वमायवास नमयाहं विनयं त्वयास्त्रिय । कन्यामूर्च्छायदवानीद त्यायूजाहिं वन्दनं पुवन्दितथादन
वथः पितामहे वर्गं यथा । माकत वत्रैव मसर्वा यथाक्रमम । तद्वनः । त्वयार्द्धं नीयासनर्न्ते समाहितमम मानव ३ तानवीवाचिम होनया । ताया पिप्रिया वृहोः त्वया जनन । प्राघ्रौ कृष्यो जाहयूत्रव
नवकृत्या प्रियं सीन मन्त्री त्याव वनत्वया । सुतु नूत्रैव सर्वव्यादन याम्य प्रियतमे । सूता धिमादि वाजाना दववद्धायस विना ३ नूनूत्वद्याजय क्लिन कृष्णघ्नक्लिविययेय । उत्तमानं पियूतां
त्रुविहिंसे त्यघका विदः नूनूरक्तक्लियथीता । पवान शूपकोविलं । त्वं चमनसहलक्ष्या वने विधाधिनम मचि । तस्मात्साश्वेव लिपेथात्रैल पितृहृति कृष्णं ३ ममममातावकीनेत्याद्यघा २९
मत्का यकेषिंका । मत्ती त्यर्थं प्रियसीत तः ५ वा नय विकृत्या । सुहृं गमिष्यामि महावने प्रियत्वयापि वकृयमितावृयासम । यथायती कं नकन्याभिकृष्य विकृथत्वया कार्यमिता गतम
पिवा ॥ इति श्रीभद्रकल्पावदाने सीतायाय मन्त्रे नाम सर्गः ॥ २८ ॥ ॥ ॐ अथ प्रियमिदं वाक्यं श्रुत्वा सा प्रियभाषिणी । सा सूयमिति कृत्वीं सीतावचनमब्रवीत् । सूर्यपुत्र
पिता माता ज्ञातयः बान्धवाः सूताः । प्रयत्येव हत्वा न्नामि सर्वसकर्महन्तेयथक । न पितु ३ कर्मणा पूतः पिता वापूत कर्मणा । सूरवमाप्नोति दुःखं वा स्वकृतकर्मणा हिनायर्ग । हार्येकाद्य मितां
मितुं कृयमिति यवायता । साहं त्वामनु यास्यामि यत्र यत्र गमिष्यसि । तद्य हं प्रसादनजीवितमनववाघव । यथानक्लामहं वत्स्यामि पिन क्लिष्ट्वया । त्वं मेनाथ गुरुन्नत्रैव गमिष्यसि वन

मवय । गमिष्यामि त्वयासार्द्धं मम मनि दुर्ग्रहयनम यदि हे सृयकागतुदुर्गं वा कथितं वचनं । सूत्कं मया त्यामि सूद्वनीकृतकन्तकं । न पिता नात्मजो नात्मा न माता न सखीजनः । मकिर्व
मित्र सृस्त्रीणां पतिरेक गतिः सदा । तोनि ३ सृ यायदि यं समूत्रुत्यपीन । न मिथ्यावदकं । नमीप्रवी सत्याकृ ३ पार्थं मयिन विज्ञामे । हर्म्यप्रासादकं वनविमानस्थापि मप्रकृता । त्वया वावाद्य ३ थेयं
त्वनीदयि सूदुर्लभः ३ कृनूपसादं गर्छयं त्वया हं सहितायनं । सिंहव्याघ्रजन सौ द्वलवनाहंमूनि सैं विनः । सूस्वैवनपिव त्स्यामि नवयादय यात्रयाः विहवकी त्वया सार्द्धं सृस्वदुःखव
नगथा । गुरुसमो तव त्यामि पादौम निय नखता । नममा मात्वया सार्द्धं कानने सहूगमिष्यूः । तत्र कृतुसमः । नौ थ विधूत्वय वाक्रमः । त्वंहि सा कत्रय स्यास्यममथः यविया लमेः
नममात्रितव नकौ महद्दापित्व दायाः । सूतानार्कसिमी तकौ निवतं यितु मातुतां । त्वया सहतविष्यामि हलसूलक्षणाननाः । दुर्लभनत विष्यामि वनमहं कथं वचनं । गत्वामि
सविम ३ लेनानूतां मित्वचना नि । उस्यैव त्वसमे वीना त्वया नाथ नवक्लि ना । हसका वैतवाकी द्रूमः य प्रिनी विमला दका ३ सूवगमञ्छा हि नैंत्व हं त्वयैव सहवा घमे वनाद्धं । मूवत्ये
यू नाना कृसुमगमिष्यू । वैतुमिष्यामि मूदितात्वया सहत्वकानने । सहसा स्वपित्वर्मीवकूनि सहिता त्वया । ममनीलानि समर्थाहं यथैकदिवसं कथा । स्वस्वपि वीसं नहिता त्वयावीनः
कामय । नवकं वापि मस्त्वमिविशि ३ स्या त्वयासह । पिता वाथ नूनिष्यामि यात्रावेंधू जमनचा । विनाहं त्वनिवस्तुं तीत्वयति वघुनन्दन । सुद ३ यनम्यायायस्वीगमनं कोननित्वया

नमामर्हसि सीदयूं मिति कर्तुं यन्मां यन्ति वने गमिष्यामि सह त्वयाहं नमां यवीत्वं लिम्र्य्यमर्हसि वन यिवत्स्यामि यथापितुर्गृहे तथैव यश्यामहं त्वं वक्तिमां वने ॥ अनन्यहावामनूवक्कायवमार्ग
त्वयाद्वि मूर्का म त्रेहाय नि छिर्गं । नयत्वमींमां मूत्वकप्रियेयेमम योनरानागुनूमामूयेश लि । ॐ मिकुवा ंामयि धर्मवादिनी मुखं नवाभाद्यिनी युवत्स्यति । निवर्तयितु त्विहसनीमदाप्रि
यामूवाचदाषा त्वनवासिनामथ ॥ ॥ॐ त्यामथीनामाय । हुमूयायाकांड सीतावाक्यनामसर्गः ॥ २० ॥ ॥ तां तथा ब्रुवतीं रामः प्रियां हार्यां मनूव्रतां । उवाचर्दद्व ध्नो षान्चनवा
सदूदाहरन् । सीता महाकुलीनासि धर्मज्ञासि च ममहि । मत्सेयमवचने कार्य्यं स्तदुमर्हयति निद्वि ममनाहि त्वयिनिः क्लि भवीर तेवकवले । गमिष्याद्यवनः सीते कानने पितुर्गृह्या
। न स्याश्चथावि वझा मिन थाहीं कर्तुमर्हसि । वनवासचदरुवत् ॐमदामामहाच्याः । मान्रुसावयजनो हीमूचनवास तनो मतिः । कवानूकं यथ वाहं वनदोषान्नूदानूदीनं । जानीमस्तान
कं तु वनं न त्रीसमूतह । वनं च सत्ति शार्दूलाश्रु सन्नजनघाति नः । हृनथेचसदाजमस्यनदुःखं प्रियं वने । प्राहि त्वकवठानागमवहुव्रः सत्तिकाननः । श्रुत्वा याविनिपुक्ति । ततदुः
खं वनं प्रियं । श्रूयुमनिनीतंव कटहरकत थेवचा । रुयानिचवकृयत तनदुःखं वमेत द्धनं । सर्पाः सवी स्याश्रु न्यहस्वि कादौ महाविषाः । चवक्तिगहमव । तनदुःखं प्रियवने ।
निविकन्दग्रामाणां नाना व्यालिवासिनीं । उद्वजनानीं सिंहानां गुयक्क निनदाचने । प्रस्तास नद्योहसहसादे वहुवावने । सिंहकमग सार्दूलवचाहा वगवानशाः । प्रात्सति

याकि नाधावास्तथन्याम्रगजातयसस्त्ति दुर्गं वनं तस्मात्त्वगकथं त्वयाप्रियं । नदीकटि लग्नानागमहाविवनलीयिनः हस्त्यम्बु वनमार्गास्तु दृप्तिद्वेषां महाविषाः । यनअमत्तिकाकौठादंत
श्रुमनार्दः सहोमे सत्व । तस्मात्पुवेदहि सीकूट्ठुनियोनिनः भूगताः यैकयूकाश्चमहानकसमाकुलाः सवितलविनयाश्चहूवयावाह्नामयाः कृलक उक यूकाश्चलनाउसहता विनाः ब्रु
र्गमाः सत्तिये थानः सतो दुःखमतो वने । निर्म्मानूत्या सवत्याति नदी कन्दवकिचा । दृढदृढकाश्यपलतागहनो निरुत्विविस्मिग । सीत्तादयात्वेवदहि दुर्गमावकृयाजनाः । पूर्व्वोदकदृतेहीना याव
सत्वसमाकुलाः । गिरिकंदरदुर्गानि यत्र लादकवीमिच । तथा नूपानि वेदहि संत्यगन्याति काननं । मूत्वानयप्तु वयासूदलत्याम् वेवनं । स्ववर्यं क्तमासुदुःखस्ताहूनलनिर्जनवने । श्रीदा
नं भौपिकत्याचद्वामतर्केगुवे : तथास्यामाकनीवानकवायकटुतिक्तकैः । वनेमूलस्वमानचवचमूलफलं पूनः वकृथहामि वस्तूर्थनि वाहानि विनारोमेः । वल्कलाजिनपट्टानि वसि
तयानि काननं । वनथूतविनवींचदीर्घम्मकुजटाधरैः । दीर्घामामधवेश्रेव मसयैकसमाचितैः । वालामवयविदुष्कोन्तैः प्रियदुःखमितोवनं । स्त्राने वीवासनेसर्यमूवचासर्वमेपि लि ।
कर्त्याद्वृःखदा त्रेवनियमावनवासिहिः । ग्रीष्मर्यंचतथा हि घवर्षा स्वताव कालिके । जलवासस्वलिलिमहायं वनचवेः प्रियं । स्वगाहिमाउत्वने तपस्याकर्मिनवन । म यानतत्काशीनिर
कानमिर्वाहविझ्यति । मीवासमनूनकुहानियमत्रुन नीलया । त्वयापिहिवनतत्कानमिर्व्वाहविष्यति । वानानमविनार्दुश्री तथानियमकर्षिणी । दुःखमीत्रीवनं दृष्ट्वा हविष्यामि दुःखि

कश्चन त्वां नस्वामि वेद हिमक्षम लोक कर्म्मिनी। दुष्टूप्र मिरुयनाल्प्रकृत दिदयिनासिम। नदरी मवनं गन्नावनचर्य्यो नर्ग कमा। विमृष्व वकृदायं छिव स्वामि दयिनवन। नरु क्ष स्वायिम निर्त
हृदयत्वं निवत्यमि। ॐ हस्तापिन दुनर्त्वं त्रियाहिरुवनीममे। एवं वर्नं नरुम निछिन सेडक्का त्रियीनां विवनामवाम॥ मू। भाकु ब्रैसानूदनीमृदीना सीना पूनर्व्वाक्ष मिदंजनद॥ ॥ॐ स्यार्यती
नामाय लेजूथाथाकाउ वनवासदर्शनेनाम सर्ग्गः॥ २८॥ ॥अथ सावबनं रुस्वा सीना वामस्य दूः खिना प्रनक्का रुमू खी दीनाॐ दवस्वनमवृवी। वनवास त्व याधा वायर नर्ग यविकी
हिमा॥ मानार्यापूतमथ हस्तरुक्ष सर्व्व। नारुलान्। त्वं हाद्रुउ फान्त्रवमामे पिदवंतन कुउम नक्का नरु विउं लाक्व कूना न्यवनवा विनः॥ सिंह व्याघ्र वना हायीनू कुवान सियद्दन। दुनासद ३०
स्व मनस्या रुयं किं विन्न विडाग। त्व हाद्रू वलउफायाः कुनाम वियगरुयं। विपत्ति वपिवानरु उथ्याम नरुजी विनं। त्वयावासरु नमूयं त्वदनूडानयावनं। त्वत्य विलय कयावापि त्य कवी
जीविन मयो। नाथारु दूय वित्य कुजीवन्धो पिमृदुः खिना। मूखा मगारुवस्याय्यं नस्मा कुयाअम मकिस्मू पिचे वारु मादि ल्हा लक्ष्यो वेकुं जाक्किरि वनगविजन सोगवक्षय मि कि नाघव
गं धों लच्छि लिनीरु। वोवचनं सत्वेवा दिनां। वनवास त्यहा निदिं हु दिमय निवेल गरः सव दवन्याफयः सिंहादन रुथामयाम्। सरु त्वयारु वरुन दोष्का मिन मचेथा। ज्ञापदनारु
विद्यामिगस्वाहंस हिनान्त्र्वया। कालस्थायं समूत्पन्नः घत्यांक सरुवेछिजाः वनवासरुजा नामि दूः खवानि विपिथनारुः। जाझ कयानि मूनि हिं वनवासयन। स्महिः कचये वमया सर्व

वनदामाः हरुनामयाः। हिक्षयाः मायूदाः याः कथयं याः पिरुथं हु। प्रसादयन्त्वीलि नसानयमाम यि वाघवा। वनवासा हि मूहुनं का किनाम त्वयासरु। दामरुन्तासि हर्डे न गमनं यमिवाघवायू
त्वं हि वनचर्य्यं त्वयासरु मथा मिका। पूनानयारु विद्यामि पूथयावनचर्य्या। विरुवको त्वयासार्द्ध हृदयम वनसदा। यो हुनीयारु विद्यामि लोक मूक्ष्मिन्ति देवरु। गरुलान मनू गक्षको हक्वो
स्तीनं हिदेवगं। त्वयाहि सेरुसं थागः प्र ह्यहाय पिमरुथ। ॐ यनानूग मिथ्या मिन्नाम रु हु नलि प्रया। पूर्व्व मयाकथयनौ रुत्वं प्रथदर्शिनां। वा ह्लला नांनि सर्गेन धर्म्मनिश्चयवादिनी। नाका
वं किलयानानीक्षायवानूगना सदा। भूनूगक्षामि गक्षन्नं मिक्षकं वानू मि बलि। उद्वानलाव निवनानन्तं धागयवायला। नमवनूयारु पालमान्य व्यात्र मूगक्षकि। भूनूनक्का त्रियीना याम्भूव
गीयमि दवगी। नत्वं वावयस मउं मामिनः कनरुउना। उत्यनी लवनावानी क्षायामनूगना मिवा। नउ मिक्ष सिमीवी नवनं मू लिउने त्रियं। यदि मां निश्चिमांग नुं न नउ वे त्व मिक्ष सि। सर्वं
नालस्य याहो मनरु विद्याम्य सेनयः॥ ॐ मुह्ना प्रनूदामा मे थिली लोककर्म्मिना। नाकाथ्रूव हि वर्षक्की दूः खजैन रु विदूक्ति॥ घोनानमावयमि नो मूदवो मूयया धवी। दूः खवा मर्म्मयनीनामों॥
सचनं कलनाथिनी। एवमा कमिपि मूनी विलयक्ती मूदूः खिनी। नामः प्रियामनूगनीनें वनरु यवस्य मि। दक्षोया धामूख कि विरुदग्नीमारिवी रूजनां। वनवास त्वाद्गा न्दावा त्वहि याहि वि
यांवयतू। विमनसमरि वी रु विकूयक्ने जनकमृना यनि मयनीयनूयं। हनमानि नवायरा मगतावचनमूवाचयून निरक्तवाष्पं॥ ॥ ॐ स्यार्यती नामाय लेजूथा थाकाउता मानूनया

नामसर्गे सारले॥ गाया मस्याग म ल्यूछ्व माथलाकेग निघ्या। आवांमु हूं निगोस्थु सायू नर्वव न मव वा अउ म्ह वालिय त्म्व कोल हलां न वियूल रूगंम। वामाव मा क्षियक्लो वधुलयां यहिमालिनी।
रूगा थँ मन्याग भूर ४ स्वमा। मानं धिनाम म। आमे जामा म वल खालक्षी वँ यूनू धमालिन। अून नँवद लाकाय मङ्गानां दयिम न्मलि। रुजस्ती वा मु उविक ४ मू र्थंव। लू लिमानिकि। केवायन्न विमर्नू ली कूनावाल
यँम क्षि नँ। स्यकुमिक्कु सिमायन द्वियाँनान्यधनाय लाँ। दीम स्नेनमू नँ बीन स खवुम मनू वनाँ। सावित्री मिवमां विक्ष्णि हर्षु गलि य बो यलाँ। अू न्याग लिम हं नँ हुं मस्न स्यिन कामथ। त्वया नाथधनिथ
का न स्को मिरु बना ह्व लि। को माली ददि गाँ त्याग्नी स्व यमाहू ह्य माँ कथं। नैमू शुं बया मा थेंम न्यम्मेदारु मिक्कुलि। नगं हम यना। थ्यामिक मंहा मन माथिवा। वाथाबा सकथे मी खँ स्यकु मिक्कु स्यो ३२
का न ले। यथाथ स्थ्यय वाय स्कु म याक छ्रि नूनाक म ४ मू ड्डा ना यदिवा ड्ढा ना क्का मय त्वय सीदम। अू र्थ्य यूग्य निश्यथं मर्गं न त्वँ गंरुम हसि। वाम ४ सम व स्व ल कुत्स्यासहु ह विश्वामि। यूथ क क्
व ग ह्व न्या विहान लयन स्व यि। न ह विश्वामि मनाथ मार्ल वा मिय मिद म ४ कुल कान लवै थी कान त्येव हु म कं न्ह का ४ माल मम ह विश्वाक्षि स्या। ल्क्षो धयमं निहा ४ लं त्याधेवे नवा सभवन यर्घु
रूला स्कु गा ४। आ अवा जिन सं स्य ल्मां ह विश्वाक्षि त्वया सहु। महावा गसमू हू नँ या। ह्याम मकु वि श्व गि। वजाममाँ लसँ लग्नँ घ ना च्छ मिव च ह नँ। ग ह न स्म यद्या ल स्व वि वि क्व घूव ना घव। कू ला स्कु नँ
लक स्यँ यू क स्यँ मूस्व कवँ क ये ४ य न्म मूल हु लँ व थी वँ नदा स्य सिनाघव। स्वाद्वाय दिवा स्वाद्ग ह विश्व म का यमं। न वँ धू नी स्न विश्वामि न मारु न्नं यि रुवँ म। व सकी हव गा सार्द्ध स्वाद्मू ल ह ला

नना। नम हगं यलीकग म वा किं चिह्न विश्वामि। ह विश्वामिन चेवा ह गह हा व स्कु वा न घय य त्वया सहु स्व र्गं गायि न न कं यत्व आ विना। कू नू म द थिगं कां मं ग स्कुयं सहिना त्वयां त्वयां स्य क्का न ल का स्मि उां वि
तुं न घु न त्व ना। त्व द्विया ग ह या द्विं प्रज्ञे य स्व ल नव हा ग ना। अू थ न स्कु सिथ न्ने हुं मो म वँ स मू नू वनाँ। विधम घेव ह ड्डा मिघ न्थ म रुछ नू या स्म अ। ॐ दहू ४ वँ ह्सिँ माइँ मू हू लम यिना स हू। क्षि यू न ईन व षी खि
गी लि स्व व वना घव। ॐ गि ४ ला कालि सँ ग का विल खुज म स्का स्म आ। या दया त्रिं घया नाथ ढुस्व ग म न ला ल सा। डका वा र्थं स कनू नं ता य स्व न य मा मि मि। नू बा द घ लिना ह मस्वे नृ मू हू हा खि ली। सा
ग स्या ४ कनूलि वाल्लि द्दं दि हू ग ॐ वा रु व ४ मूमा चेवा थ्यं। ल्का धूं स्थै थे स मूहुंमा। स्य न ४ म ग स्या ४ लला का ६ र मूघूं लाँ त्विया क नू धर्ड ग दा। मू साव वा बि म ता लाँ यू स्कु नां स्था मि वो द कं। सगा मू कां थ ल
लक्षि ४ धाद आ ४ य। मिगीं त्रियां। उवाच म मूवँ नामा व व नँ यम्ति लाँ व मँ न। न का मय स्वर्ग म यि त्व ह ग हंव माज न। न व म क्षि ह यँ कि विद धि सा का त्व यं रु व ४ धर्म्म रु ना गमा सानू स ह्मि वो व विमं। नाकि
व र्कि रु मिड्डा मि ध्व लामि व म हा द थि ४। ग था गुरु नू निआ ग हु यनं ध र्म्म विदु धुं धा ४। ग थ म क म यिरुं ना ल म हँ द्द वि क थँ व न। मय त्थेवा मू हिंस्कु स्मि यि ता हू य म हा स्म ना। ग था व हि हि मिक्कु मि स हि य म ३३
४ म ना कन ४। ग था व क वा ल्कि हा सू त्रि घु थँ ल ह नि घुथ। उ क्क वा न्न न यि थ्यं स्वा मि ग ४ ल का यि न कि हुं। य द थँ चैं व सी मन्वाँ न स्को मिरु ह द ग न। व न वा स ह वे ई ४ स्वँ यो कुँ लाँ मू स्व सा वि नीं। सानूहू स्क
न घ कावव ना अ म द य हू या। न वि हा ईं म या ल क्का की हि बाम्न व का य था। व हि ग क्कु म था साईं म था क नू खि गं त्रिय। ॐ क्षा मि हि थियै क हु नि धँ ग हमनि दिगं। वा स्क्का ल य हू सा बू हा वा सां स्मा ल
व ला निय। सं धि ग ल स्कासन न्ना द हि या ना नि जा न कि। व थूं वा म हु यधु ह ग गा व उ म या स हु। ॐ गि हु गां य नू ड्डा गा म त्वा ग म न मा ल म न ४ दा इ स मू य ना वा सी वा सीं स्या ल व ला नि च। ग ग म थंध

मायनियुर्घुमानसास्यनस्विनीरुत्तुनवक्षमानसे।प्रयक्षमयादुमनामहनीमिदाधनानिवासीसियक्षुद्रमनिय॥ ॥इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये ... सर्गः॥३०॥
ॐ सूक्ताराघवः सोर्ता समाहूयाथलक्ष्मणं। उवाचदेवव्रशीमानवक्षुपयानकं। ... यत्रसमाना ... यत्रकृष्णाययतानकर्मयानकृष्णम
यासहकथयन। वीरथोरवकाशनः कच्छिदर्वसमूयजः। ॐ देवहिमहाकारावारथीरवमानघ। ॐ किमामवस्तवरलक्ष्मणाहीदीनमानसःभवोप्युपर्याकुलमुखःआईलोकमनप्रवनेस
नमयवहोताहः पविनरावपीतिनः। सीतायाश्चमहाप्राज्ञकृतागोरघवं महावीत। ॐ नूनंरा ... पूर्वमववमेप्रति। सहगंतुमिनःकस्मात्रिवर्तयसिमीयूनःशाननिवर्हयिकाद्यं जीवा ३३
ः यदि कसि। णवर्तचाप्रपत्राप्तिप्रसीदार्थमयसमीनमवीकृमानामः पिनंलक्ष्मणमप्रजकृत ... नमलिनसावयमोनेहस्ताउर्ति। गनमयित्ल्वयासार्द्धमिमालक्ष्मणकाननं। कारुवि
कोनरोयामूमिताववत्स्विनां। अतिवर्सितकामेर्थामामयोनोनराधिपः। सकामवलोयक्कनउक्तियथायूना। सर्कमवलमायज्ञामहावाउःपितावया। उवर्त्तसमासाय
कैकयाव्यवसानः।रात्त्वयेमदा ... कदाचिदपिकैकयी। सुसामुत्रनियम ... जीनामवनान्तस्तव्याॐ उक्तन समावय्यविलोमनः पविप्राशयसीमितु याचदागमनेममसाय
येवाइनतथेवज्ञनयाविदतविक्षिः। पूर्वावर्णयितुं ... ःस्वयवक्षिता। ॐ किमामवमःपतस्त्ररलक्ष्मणःस्वीमर्तीवने। कतारुलितिदवत्पायामावचनमब्रवीत्। मद्विधानांसहस्राणि
कौशल्यांविहयाद्विशः। यत्राःसङ्गीमामानामृते। ... वपराजीवनं। ... कौसल्यां ... शरामः ...
लितः प्येश्वरसहा ... विश्वामिवनकव ... वनितविकद्ध ... स्ववनानयतुर्वहमसूदकरविश्वामियै ... परिलमयनवयानिवाहविश्वामियुप्रमूनरुद्धानि। गयायकवनानर्थवस्रक्षमर्षि
मानिय। रमार्थमहवर्षज्ञवनवामहिवैस्वर्ग। यक्षमस्वीनमिच्छकिनाउरामजाग्रनमपूर्यलिखाश्रिदासा ... रहशैलं ... मवाहसर्वदासा ... दनयमामयिभवाशानानहुप्रीता
नामानलक्ष्मणमब्रवीत्। आगहुवतसीमिता ... मपदु ... जनी। भवनाजादहदिये महमी ... सर्वम्।भयमूर्मानमहा ... मेकुयानिपुर्यो ... तोत्रकैययनकृता ... माताप्यतीउवं। लक्ष्मणा
विमलाकाणवर्षीसिदिविमक्षवयच्चान्यार्यपद्यवधिर्यायेनसिक्षकिमक्षिमे। ... दवनयज्ञन ... वावानिहतलक्ष्मणा। ॐ रामालं लक्ष्मणःसीतांममायहक्षमहनक्षाने। आर्याक्षलमीमानमागनडान्याह
सुखासम।गमसमाद्वायमनुर्योमय ... मूर्तिर्यमा। दर्शयामासमामायनिवर्त्यः। यह्नवान। नमूवाचान ... रामालक्ष्मण ... प्रियदर्शनं। काल ... सागनः ... कोकिममनलक्ष्मणा। वातुमिध्याति
विप्रशावाभमस्राथैसर्वं। ... ज्ञानस्येवानांकृञस्वादामयवादिजान। पथाप्रमासमसहेहकृानिवसकीहलक्ष्मणागमीवाप्रियदाशामि सर्वम। मायवाविनी। वनिप्रश्नर्वमयकृमार्यनमाः
नशातुप्रवर्वद्विजानां। सियंसवीर्यसमवीर्यवर्तिनं दनयथिषाम्रथमर्मविधाने॥ ॥इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये ... नामसर्गः॥३१॥ ॥तातुःलमनमाज्ञाय
लक्ष्मणत्वचितःस्वयं। मूयंनुरहमागयथावविन्ययविनीमवत्। अस्यावसपथमयहरमूयकृतं लक्ष्मणोब्रवीत्। ममयवृहित्रपस्यवान्वादकमिककि। ... चानलक्ष्मणवचःश्रुत्यकृतविल्लवाप्यि

रांकवा २

नश्यप्रविवन्मस्थ्यागम्यनामवन्मसत्र्काहाश्नमागमंवदविदंसीनयामरुवाघवसंत्रुपूक्रायाञ्चयामास्यदानेवरिकांक्रिमेश्मक्रुतांमादकयूनमूकामगिविहूषज्ञोश्मरुहौज्ञेववासारि
र्द्धिनश्चाश्री गुयूष्कलेश्नमूवावनमानामः सीनृयाहिप्रवाविनश्मस्त्वाचेदविमिकाहास्त्वङ्क्वदयावनं।हावेंवहमहूं च्युताच्यारुवनानिच।वासीसिंचेवदियाहिवाक्क्रञ्ञेमयुयक्कति।
वस्नीरसिनींसीमादातुमिक्कतिमस्त्व।वाउंवाक्रवदंचेवयर्थंमंसर्वकांवने।सयादयीठहाथ्याथेसत्त्वसीकाददामिग।नागंनक्तुमेनामयंमञ्रेमातुसादंदी।गंमददायलेद्वलमह
मुनेगवांसेरु।युक्तिगक्रुवनत्सर्वस्मक्ञमक्रुवर्द्धनं।वामासेयेरुवेदक्रायंप्रायूकांतिमश्तुशा।मूयक्रूवसहार्यविमच्यांज्ञेवाहमाद्विजात्।भूयथाचिददोनामःमूहहचःकामक्रोध ३४
नं।रुज्ञाप्रश्राउनत्सवविरुवस्यानुयूयनमनित्यिस्याथूयकानिल्योददोवामामहायनीः।नमाजांनवमोहायाल त्रुनेवाघवाववीतददहत्तमयिप्रिविद्विजाज्ञाहमायनं।मूहहचंत्रनःका
मानीत्रिमात्स्यनिवर्ञाच।नमहिधनेचथान्येनुराजनक्कादननव।ॐ ध्यांक्रचंयसोमिप्रवाक्रमांवदयावगन्।मूहृदक्राईनःप्राचीकामेश्सविहवेत्रिमेः।अगहुंकोतिकंचेवगामं
न्महलुत्रमवव।ममाद्रूयाहिवर्त्तवंधनमन्नोयवक्तिहिश्मूहृत्मीयनेयारुक्ष्यासोतिहयूयासुमत।भ्रावार्थक्तेहितीयाहांनमानयनमूवुगं।नस्मेदानानिदासामिवत्तानिविधि
धानिच।नूयिवाहिववासांसि यावन्मत्याहिंबीक्कति।मूनं चिरवर्थंनामसत्त्वाचंमत्लेमानय।नक्ष्मेदासामिविरवांत्मदाहानहिकांक्रिमोन्।यथाश्रवद्दिनःसक्रियथायियवि

यावकामसर्वाक्षिर्ग्थयकामेस्रांसमाद्रूयातुलुत्रलायेलुप्रत्कालकायवयवन्मरुविकर्लकाश्मसंकोवहासकाञ्चेवस्रायकाश्रनूसयकामसंवाहकाःसलिलदाश्यूनमाश्रवकाप्रयसनमोः
निष्कसहसंखंदयर्थमूयकल्याय।क्राउनार्थक्रूनगं।नानीनांहृयदूत्रुउ।यंजनार्थवमोमितु।नामुत्रेदमूयाक्रूमन्नानीआयकानांवन।त्थेदर्लनजीविना।क्रीतकानांवनिक्कानीमहूय
मयवर्ज्ञय।कोलयाप्रश्चवर्तांयश्वतुत्रुवयकिलमूना।मूभिर्जाचेवनस्त्रिचेमूल्यद्वसमूतृउ।हिकाउञाद्विजाथयकोल।र्यांमानवेमम।यर्थ्यामरुत्तमसाद्वमहस्वसमूतुउ।नथेवयमू
भ्रितीयहिरुवःसमूयामन।वनहायिद्विजाञ्रुःमरुसमयवर्ज्ञा।यसंसीदकियथाक्वाप्रमयिविप्रामिनवने।भूनूजीविजनःसोन्यनथस्त्रेकईमरुसिनमक्रुदयंसाधुयामनुविद्धा
यनमूला।यामक्किविरुवःकक्रिकेविप्रानयसर्वनमक्र्तुत्रूकासत्रू।जाताधनेनामयामर्थनःयथादिष्टंददोमन्त्रःसर्वंहडयजीविनः।मविरुत्रुनमानामःसर्वानाद्रूयप्राववीनकायोहि
वहित्रोक्कलवर्थवेवूरहंममे।त्रुजस्ववयक्षेनयावंदानमनंमम।प्रमूजाविरुमेनामर्ञ्तुत्रूक्रुलेककर्षिनः।मनाक्षकमूवायर्दसमाद्रूययूनर्वयमयथाक्रेविकुलंदंभनदिर्द
नयमहदेवः।भूनयखेत्रुनायामिनमयारुमनक्तिनः।ॐ लुकांसमूयाउद्रूर्थनं।लेममल्यवनमेवामाक्रुयामनाश्रक्ताःममूयाहायसर्वनःमनद्धनेदयलेथाथविकुलस्यग्रनाघवःदं
मिदसयंसाधुत्रायदोसर्वम।लयनश्मूथरुक्कादमिडप्रवद्रूनत्रुउनाद्विजःश्रडयायाक्रिक्किउनामंविजयानामविञ्ञ्तनश्सत्त्वामरुवनंप्राश्वविथ्ययतिवानिनःश्रउवाचनोममासायवंप
नत्रासीहासगोगार्ग्यीविजयोनामनामतः नंदन्नंतरुरागीभार्यावैलानामायदारकाः।उचाचब्राह्मरागीवांचंयदारिद्र्यनातिपीडिता।अपास्य हतकृदालेकुरुष्ववचनंमम।।रामपरपत्त्वधमरानां

आवेष्य दलं विक्षेप सर्वप्राणेन वेगितः । स नीत्वा तरसा पारं दलं तस्य कराच्युतः ॥ गोवुजेव कुसा हस्ते पपात क्षाराणमंभसि तं परिष्वज्य विजयं स ततस्मात तरसा सतत न । अतारयत ततो रामं विज्ञप्ता याश्वमं प्रति तमुवाच ततो राम
मानं कुर्वं वचमद विडाम्यसमर्थं ग्रवानुपूर्व्वं वाघव । समामहं सिविकिन सविकुर्वं यथार्हन ॥ न मूवाच वचानामा प्रद्धप्र विक्रमसन्निव । विप्रमागिनसंदीन वित्तार्थिन मूयागन । गवीसहस्रमस्य
कृयद विज्ञानि र्मि मसा । न मांगहानमाव न्त्री सुर्यं नक्षा सिन मिउं ॥ᳲ॰ किनामवचयः रच्चो त्रिजटा नाम संनिधौ । सज्जा स्मनाद दाक कोंवष्नुसताप्मानसः ॥ देवमृद्ध्य समहसा प्रकम्प । प्रावनेय विद्य
ढ्गावाद्धय मानाः ॥ संकम्प विद्धुत्वा यो । न मूवाच नमानाम त्रिजटं द्विजसहर्मषं य विहास ॥ कगतुदुद्ध नियवर्कुम्भ किमि हुक्षि । वन त्रैन स हसी नगवी । गमेय वहीं सहे । धनं ददामि दृश्य व्रयावयि
कृसिसाधिमाॅ ॥ᳲ॰ विपू कृत्रिजटा वचः यजयमि मिनाघवं । नक्षै नामाय दद्दौ दयौ प्रहृतं यज्ञसिद्धय । समर्म सहार्यो त्रिजटा ययो प्रियं य मित्रह वा पाय समृद्धमानसः ॥ प्रलस्य नामं मूदि नीऊग २७
ममप्रजास्तु नामस्यायतः प्रकाणय नन ॥ ॥ᳲ॰ व्यार्थनामाय । दमूथा धाकाण्डे विरूविज्ञान नेनाम सर्गः ॥ ३२ ॥ ॥ दसो उसहवेदस्याबाद्ध । दाप्या धनानि सः ॥ उगाम यिन वेदहे
सीतया सह राघवः ॥ आयूधानि गृहीत्वा सो सर्व्वाय कवचानि च । पतस्त्र । लेन सह गणा तस्मात्रि ॥ स त्यवं स्मन ॥ संगोचीहीत्वा यूधो वीचीगानवी नाम सत्सु । तेनाजमार्ग समायाति सीतयो
नुगमो भयाः । तत प्रवनमर्गग्मा नित्यो लिन समक तः यदहत्सा सदानूहयो वेगानयदत्ति य ॥ स्वर्णं नाजमार्गे पूनवासीज्ञन संयदा । गदामूवाग मःसुक्तान नामम्या मिन गऊस
यदा कितं समायाति नाघवं सहलेन ॥ त्रुघुर्दष्टवक्र विधा वा वाद्रु ॥ स्वसमस्त्रिकाः ॥ अनूयाकिय याकेयं वहुनेगं महद्वते । नमिमं सीतया सार्द्ध मनूगच्छति न कृतः सुर्व्वे त्र्यर्थमम
प्रहननवैद्धिजोत्तमं ॥ ५ ३२

इहिगाक्षिमान यिवीर्यवान् । अतः तयि मनं कर्त्तुं धर्म्मा सानायमिच्छति । समनक्षायूनाविष्टं दवेनाकाणजे न यि । सीतां नाम यिययत्यक्ति नाजमार्गे यथ गणाऽसंतं नाम नागन हूविमीव
नवर्हिनीं । विवर्णूमीन यिष्यन्ति सीतां नी नाम वाघवः ॥ नूनं ददसे नो । आगमन सर्व्वनाविष्टयगन ॥ यथाविवासयत्य प्रियं यू तमकायत्य । यदि हि स्यादनाविष्टः ॥ सर्व्वनाग्नन धर्म्म विजाय कथं विवासयदनमकस्मा
दुषोमागनं । का सार्थी निरुणम यि हजसूत मध्यावत् । प्यिं नाम स्थगुन्ते ॥ कष्माला कार्यं मनूनं विमतः ॥ आत्मनः सीत्कामालीलीह्नत सत्य चनावमे । लो रयत्कित्सुणनाममत्तय हूय पिनातु वि । विवासयत
भवायेद्रुः ॥ विकाश्रमहाजन ॥ अजो दकानीव सन्तानि सलिलस्य यनिरुयात् । लोकनाथस्य नामस्य पीतया पीतिर्मजगः । अयर्व्वली वसामस्य याद्रूयहू नियीत या । प्रदानाहा गदानानां यप्रियाद सूर्य स्थया
नथ्या रुय यदानस्य दानाग च्छति नावनं । सायूलक्षूह्य स्त्वं सत्रकृहाग यप्रियहा ॥ नाम भवानूगच्छामः ॥ किं माया यीह्वमनवा । सयूत धनया मोप्रसयन्तु हयं संवयाः ॥ गच्छाम्य स्ततय याची सा धूर्गच्छ मिता
यवः ॥ विहाना यानत यन ननासन साधनं । यत्रियज्ञानू गच्छामच्छ स्यादूः ॥ खामयालभर्तें । समूद्धृत निधनानि नीर्णूसृकानुया नित्य । यशीन धन्यकानानि हीन संमार्ज्जनानि च । यिशावच्य गनकाहि हय
न्यूकिष्वराजमे ॥ अवल श्रीश्यमना ज्ञानि यवि यच्छानिहि वर्णे ॥ अस्म त्यकानिवप्मानि यकयोय्य मियश्मा । वनं नगवभवा स्नुय ध्रुगक्षित नाघवः ॥ अनव्यनोय यक्तिय क्लमस्मात्ति यात्रि दयूनं । विलानिर्द्ध
क्षेत्रः ॥ सर्या वनानि मगयक्तिलमं स्यवकोगरुआद । यनाम स्वव सभी वन । वनाञ्च याद्य विविधा वाच ॥ यो वजन विनाशः । दष्टनाभाय यो मार्गे वनवासकृता श्रमेः ॥ अव व्रूमानाय यिजगरुदाहमानार्ह

नृपः पुरुसन्निवार्यं ॥ राजगामनामः चित्तं विदितं ॥ सत्यं प्रतिज्ञं नृपतिं चिकीर्षु साश्रु सास्यं च ह्ना कृतं नय सुनामाम ॥ चित्तं तद्वत् मन्दार्थं वृक्ष ॥ यतिस्थितं तद्भ्रमतानि श्रावणं स्थितं भूमन्त्र प्रतिज्ञान मिष्टं ॥ ॥
॥ इत्यार्यश्रीनामावल्यां श्र्यशोकावदानोद्धृतउदासीनवाक्यं नाम सर्गः ॥ ३३ ॥ ॥ प्रास्थान मागतं नाम सहार्थ सहस्र स्मृतः ॥ मदकं च समीपावाप्तं विलापो कृतं नृपः ॥ हन्ता नाथ मिमा मितं सकामा हृदयं केकयि ॥ मः
तं म यिगतं नाम वनं मनुज कृ जनः ॥ सजा मिहन तं स्त्री च जीवितं च दमात्मनः ॥ पुत्रानपि विधवा नाशं निर्घृणेव हि नाम यानः ॥ सहं विहीना नाम दीर्घ स्वा जीवित मात्मनः ॥ नरु विश्वा मित्र याथ हुत्वा श्रवं व
लानुगमः कं न मनुजस्य समूर्च्छं समर्थयसञ्जुहोमम जीवितनाशाय कृ स्यंदन कर्मीदृशी ॥ अनवद्य राजनी नाम हृदयमावारिषि यतां ॥ ॥ किं कस्य मतं यार्थं मूर्च्छकस्य दुर्मात्मनः ॥ वाला श्रुसीकथं ताङ्ग हनतः
कान यिष्यति ॥ अस्थितिस्थितिनाश्रार्द्धं नाम मजीवलाचनः ॥ भूञ्जानाकालमातीव रार्थानृपचलं केकयि ॥ कथं हृदीदयूलन्येन मयाराम द्वृष्टिमा ॥ यालीयान विषवल्ले मयाबुद्धा निष विता ॥ ययादक्षावि
याशून्दृ श्वाले निष्टे ॥ भूतनच ॥ स्त्रीणां प्रियतमु नार्यानां हृतघ्नीनां विलयतः ॥ राजक्रिवगतारुदं न्यालूद्धाधन फीकृयाः ॥ निर्घृणे निवनूक्रागे कीदृशीं हृदयं गत ॥ लनवलागतं याचमानीय मां लं राक्नुमिच्छ
सि ॥ नृदंसमामसुत सोकायनाथ मसूत्वा वरुश्य मां प्रियजन पूर्तं न विधाजयसि ॥ ख्यितं ॥ उ चितंहितं विकानां च यानानां येव मभूत ॥ का कानं वन दुर्गानि कथं यास्यति मित्रा मि ॥ स्वादूनाम न्नपानानां भूवि
ता यं मम सा ॥ जःश्च मूकुमाना विलासी च हस्ता हनन हविनः ॥ कृ टि कक माया यानि मूलानि च हृता निय ॥ वल्कलाजिन संवीत ॥ सक थं हरिश्रयि प्यति ॥ यदि ना मसधर्म्मा सा म मा मिश्रा यल सनं ॥ नकृ जनः ॥ यि ३६

यं महृ्यान्नगुर्न्नसकनिष्यति ॥ मृत्यु हृता वधर्म्मात्मा चित्रीमतुलवत्सलं ॥ मयामि वीर्यितः ॥ पूतम्रीवनेनाकृतात्मना ॥ शीलवृक्षतुपाश्च स्थेयालेस्याधिप्रियं सूनं ॥ कथं स्याक्तुतन नामं नाम मय्यीय रमनः ॥ नृशंसाङ्गमनार्या
ह सर्वं थवविगतसुमां ॥ उभू मत्न ॥ यितं पूतं स्त्री हि नायम्हुजा सहं ॥ किं मीव श्रु किलोकाथं नृतं संयाय कामितं ॥ यः ॥ पूतं स्त्रीहाणं मूर्च्छा जाम्यनय कामिनी ॥ वनिष्ठा नाम दुश्च ऋजावालि ॥ कन्यस्य प्रथा ॥ किं मीव श्रु किंकृतं
दं नथा नृवक्तृवादिनः ॥ विघ्नमिनादयः ॥ उद्वा सूयावन निवासिनः ॥ पथि पीय पृथिवी पालः ॥ किं मी वश्रु किं सा धव ॥ यस्कासमय नन्ताकं पतिम श्रास्मि सर्वथा ॥ कैकयीनाशलूत्वा यो पतिं हरेवत वद्धयी ॥ हाहतास्मि
विनष्टास्मि दग्ध्वास्मि चयलस्त्रिय ॥ कैकय्या वनमायत्नः ॥ या या यो ॥ या यमाहिनः ॥ गुरु हिर्वृक्षवर्येष्टं हृत्के वाञ्छी वृक्षस्थितः ॥ सूरवकाल श्रमपूजा दुः ॥ स्वमवायता श्रुतः ॥ अनियाश्चैवहृ ॥ स्वभूनामं नाजीवताच
तं ॥ नदं वमवनेमद्धा व्रदं याय मवापूर्यो ॥ किं नाजाद नवथ ॥ पूत लोकावृतं त्रियः ॥ अनिन्द्यन्मराज्ञानं सुनीथी लववद विलयं विलयन कस्य दुःखार्त स्यमहीपतः ॥ उयत्सावदया मासमुमन्त्रा नामम
नतं ॥ नः ॥ स राजा सम्पूयानतं सूतं मूमन्त्रमात्यसत्तमं ॥ लर्ल मानसः ॥ प्रव्रव्यक्तं माधि तिरं मदावच ॥ सुमन्त्रमद्धी श्रुत वाचनं नृदन ॥ ॥ इत्यार्यश्रीनामावल्यां श्र्यशोकावदानोद्धृतदशरथविलापो नाम सर्गः ॥ ३४ ॥ ॥
उवयतां नामन्तुं किं चारुसूस्कान नो ध्रियमानीव लोकसमावि श्वाहु पाभाद्द सूपागमः ॥ सूक्तार्लं सिवनि प्रहृष्टाहृत्सामाहयनायदो ॥ प्रविस्तृत्य नगर ॥ स उन्नीसिंहासनगतानृपः ॥ लब्धसंज्ञं गतं हृष्टः ॥ सुमन्त्रः ॥ पृथिवीपतिं ॥
उपसृत्य प्रांजलिर्वाक्यमुवाच वदं सूद ॥ खिनं ॥ दत्त्वा धनानि विप्रेभ्यो हृत्या स्याप्रापयजीवितो ॥ सूनघ्निहिनिवादिक्यः ॥ स्वागतानाकृतकोष्ठ हि ॥ अग्नी नकं दिनसाधाय वनं गन्तुं कृतं कृदनः ॥ लक्ष्मणेन सहन्तात सीतया

वन नाथिय यं सुदं पूरागतः। पादौ नमस्य सदिम वचस मुवाच। राजा समुद्रमारुह्य तद्वचनमब्रवीत्। आकर्णय श्रेष्ठ धर्मा स्मानि यत्त्वया कृतं सुदुः खितः। समन्तानयनं क्षिप्रं यावन्मुहूर्त्तमात्मकाः। यदा नाथ त्रिवृतास्के
हृदय स्थितिका मिनाथवं। उवाच गत्वा समन्तात्वा वचमब्रवीत्। आर्य्य कुर्वन्ति राजा मा चिन्तयतु गच्छ मां। एवमुक्तः स्थितः सर्वो समन्तं तं त्वया त्रिवाः। नराजश्चरं पदं सूर्य्यं नाम्ना यथासनं। अर्द्धम
कर्ण्णं मानाथा नृपवरः सु स्वलं हतः। उपयुक्तो यं ति दस्य कं कं स्याम हि तं गत। समयं श्रु गतान्धा वानतं। तथा तत्रानुपसमन्तानयन क्षिप्रं पूरा मित्रस्य रात्रमनः करः। समन्त स्त्रि विनानामं ल श्रु होमवयः प्रवं
शयामा सगूढं नाकु स्त्रीयै वसे धिनां। हृष्टुवचनमायान्तु दूरा नाम हंसो राजा। तदुप्य यानासनादात्तु राजा स्त्रीजन संस्थितः। आगन्तुप्रभूत नाम कि सयमित्रश्रमो हतं। श्रुयायौ च वसे गान्त यथानपमितं ३०
मूतं। प्रीदकं तं समसत्य त्वं नामः सेतान्तु मान सत्र श्रुया कम वधनघां य निरुत्सयंगतः। तत्रैव कृत्वा सर्मूर्तं नम्निन वा सम पूनः अनश्च। तेन सह गतासीन यानानुवदा पुत्र। तजन नाथ वकं नेत्री वयामासम
स्कि तं। गतः स्त्री दीर्घं महा हस्तं वेदजन्म नाम वध्यम नि। सूकृतं दवनं नामा लब्धसंज्ञं महीपति। उवाच यौ जलिर्ह त्वा। श्रीपूर्वं कोवय त्रिभुवनः। आगत्य स्वं महाराजं उन्मना सिद्धिनः स्फुरा। पश्चि तं वनवासाय संयथा कू
लत नमां। लक्ष्मीवानुजानीहि देवं हस्तीच महीपतिं वनवासाय गमनं नृपमाकन निवृत्यान्। लक्ष्मीं नीच सीतां च समनुज्ञातुमर्हसि। श्रुत्वा क्षां त्कितं नाम सिद्धिमान् महीपतिः। उवाच सश्रुदीनास्मै वाचाय
याकु स्तकं। वदानाथ कं कं याः। पूर्वाहं नामवंचितः। मस्मानि ग्रुम मां मूर्तं राजा हृतिमुमर्हसि। एवमुक्तानृपतिना नाभा धर्म्म हस्तांचनः। पितृणं पत्ति पयति पुष्प वाच कृताञ्जलिः। हवा निसगुत्रे

व राजा हर्ष सुत्तम। देव मं यूजनीय गुगनीया धर्म्मवत्। उदितिमिया गस्तगयं मया राजन्न प्रसीद मनननिवर्त्तयितुं। यत्र हवसहनघ मितवन्स राजा वर्ष सहस्रायुर्हवानवासुन प्पतु भयप्रश्न त्वया प्रमित्रान् कं कं यास्तत्थ
कृत्वा त्वां यकृत्वा हमनुनं। नाशाभिक्षु यमिस्युत्त। तेला च स्त्रा यकृत स्थन सकासार विशुभितो दृत्वा नद्वनं नामा सत्य यानयानापन उवाच कबूतं वाक्यं वाष्प गद्गदया गिरा। निष्ठिनं यदितं नाम मस्तियार्थ मि
भावनं। नन्तु प्रभादितः पुत्र नगाग हुमया महरन हि त्वया विनहि तानाम जीवितुमुत्सहे। मयाश्च या वन हि गं राजा स्तुतवनः पूर्व उन्मि कृवानं नृपति भामा वचनमब्रवीत्। नाहं सिक्ष भिनां तुं मया सहवनेय
हात्यं नानुर हि त्वया कार्य्या ममराज कथं च न। प्रसीद नाग धर्म्मदाश्रु महति मां हृवान्। सत्य प्रतिज्ञामात्मानं कर्तुमर्हसि भामद। स्वधर्म्मस्मावयामि त्वा राजन्नाय दिनामिव। स्वधर्म्म मामम स्त्रहात्र निर्तुं नत्व
महर्षि। एवमुक्तो दशरथो रामं वचनमब्रवीत्। कीर्ति मा पूर्व्वत्तं सौख्यं धर्म्मश्चायू हि तं श्ला च तं। यशसा हृद्य यत्तु यः पुनरागमनाय च। अनिष्टं गच्छ यथा नेमस्त्वं च पिघासयन्। उं मां उत्तजनी मका मिरुत्वं वसुम
हसि। अन्यत्र त्वा मया सार्द्धं हागमिष्टं पुनानिव। मीना त्वं प्रसादः श्वाहं मा नयंगमि श्रसि। उं किं नामा वचः। कृत्वा पितुर्वाक्यस्य धीमतः। उवाच यो जलिर्ह त्वा राजानं लोक विश्रुतं। समुत्सृज्य सर्व्वं हत्यानानुवर्त्तितुम
सहं। यानप्रहागात्या प्रया मिकाम त्वक्षा यदापत्ति। तस्मा हमन मवाहं वृद्धामिन निवर्त्तनं। धनन्नाद्य ना रमि विश्वं मरुच संचया। सह स्वान्वेन पुन्नमार नाय यदीयं। सुतं वदं पितानापानत्रिस्त्रा
गा धनानिय। हवन मनुमं कर्तुं न च्छिकुयं कथं च न। श्रुयन्तु प्रतुज्जः वै नृपमम द्विशागजं। कृत्य कि म धिपानेवं माधवः सागवाय माश्न नाश्राय किस्का मिन सृत्वा निमहीपतः। त्वसत्य कि ज्ञा म मि

स्त्वामिमं सर्व्वं कर्त्तुं प्रत्याभिमौ । अनुजानीहि मां सीघ्रं वनवासकृताञ्जलिं । अनुयान्तं मन्ये त्वं ह्यस्य यमिपालने स्वयं सुमन्त्रस्य पूज्यायम दिनीमयाविसृष्टा हनमाय धीयमानां । अरुढुं सत्यं रुवनानुयालयन्त्वं नगमिष्या
मितयानिष विदुं । मया विसृष्टां हवनामहीमिमां सनाष्ट्रहेलां सपुरीं सकाननां । शिवौ सदी मामनूनां सुवीर्यवा त्वयायदूक्तं नृपयन्तत्तथा स्तुन्तं । नत्र्यननमयापार्थिव धीयमानेनो मरुत्स्य पियोनि मूरवभूवन्
तुं । यथानिदं नोनवनिष्ठ संमनाय यस्तुदुः स्वेनवमद्धिथाः मर्ज्जं । ॐ ददं हिनेवानसूनाशमथर्थं नवाधिराज्यस्मुरवानि कामयत्नजी विनत्वाम नूर्जनथाउ यन्त्वां तोमिबाउन्त्वकान नने हायया । ह्रुसोनिसूसा
नियरुन्त्यच्चन निनौध्रयन्तस्मिनः सनीमिय । वनं निवत्स्यामि सुखी न गच्छता नो त्वापै तु दुःखैनवविप्रयात्राजौ ॥ ॥ॐ श्रीमद्रामायणे आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे दशरथाश्वासनं नाम सर्गः ॥ ३७ ॥ ॥ ३८
ततः सुमन्त्रं नृपतिः शीतिनः स्वयुनिदूर्ध्या । दीर्घमुष्णं च निःश्वस्य एतांसा दुःपम स्निदीं । चतुरङ्गवलं तुर्णं निलक्ष्मा हत्वदासं वचनं । राघवस्यानुयात्रार्थं क्षिप्रमवायकल्पताम् । नूपयोवननाशिलिच्या विलासिच्यामहा
धनाः । अनुयान्तु कुमारस्य नहार्थं नूविनाननाः । सुहृदाप्यनुनक्रादुनामन्त्राजीवलाचनं । मर्येनमनुगच्छन्तु संविहृत्का महाधनैः क्रान्ताः सुश्रमसर्व्वकामसमादाय संवेवृः । नेष्टुं मनुगच्छन्तु नामन्त्राजीवलाचनं ।
मृगयो विहृतन्त्रानमर्हं जानन्नाश्यशौर्यिना तू । वनं स्थापि वसतामाशाकाना अरुर्वानि सेयावाम्भविरुवः क्षिप्रयन्त्रमल्पूयजीवने । अनुनेषयत्नेवन सर्व्वमाममवानुगच्छतु । ददच्यानानिनीर्थिपु विमूर्जमुध
नानि मः । नामायं वनवासयिना राजधर्म्मं समयन्नूनाः । रुनाथ युद्धदनधनामयाः अयाननयत्विमं । सर्व्वकामैः पुनः श्रीमानामः सेसिध्यमी वनं । ब्रुवत्यवं दशरथे कैकेय्यै हृयमस्तुणं । मुखं सुनामयेवाख्या
वक्त्रं च विशिश्यतः । सा विवर्णमुखी भीता राजानमब्रवीत् सं नक्रामर्षकामारौ च्छायाघसैनकन्नायना । हृतसारमिदं राज्यं पीतमण्डां सुरामिव । उदुद्धयामत्सरं विषण्णोनृयानदं नन्नीसमाहृयावाक्ये
वारिपीति नः । कैकेय्या दुःखिताराजाषामिदं वाक्यमब्रवीत् । वहन्तं मामभूर्नवुद्धीमसच्छीसा धुनर्हिनरानृत्तं सक्षितुदसिमां वाक्यमर्द्दैः पुनः पुनः । ॐ ॐ कैकेय्या राजानं कैकेयी पुनरब्रवीत् । पापस्वरापवचनैय
सूर्यधानविद्ययायथैव पूर्वं सगरोऽज्येष्ठं पुत्रं किलासमञ्जं । असमञ्जसमप्यासीहृयश्चैनाध्ववीशयक । एवमुक्तोऽधि निसृकं राजा दशरथस्तदा । दक्षीवीतान्विमः कष्टिन्दिवः संकल्प्यधन्निवामनमाव ब्राम
होमात्यः सिद्धार्थनाम वि‌हृतः । हृदी वदूसमना राजा कैकेयीमिदमब्रवीत् । पूनासमञ्जसं दविसगतः पथिवीय निः शतुनासाध्यनस्त्व वनत्कैनिवाधम । असमञ्जः किलादायपथो वालाद्यानकान्
कूले । सनयप्रसि विक्षयदीः शितान्यांनिनदितंमनविपकाः क्रुद्धाः पौराराजानमब्रुवन् । असमञ्जसमेकं वा हृधजा स्माच्चामहीपते । नानूवाचनतो राजा किं कार्यं भयमित्यपि तु शर्त्तं तदा नृपः । तान्
कृतराजानमब्रवीत् मूपूतस्तवे षयदीः शीत्याद स्मात्कं किलदानकान्यान् । गतस्त्रानगम्याद्य दनयोर्हिपतिः स्वयं । ॐ निजमीवच हर्रत्वांधोनादीसगवानस्य मस्माउदयितं पुत्रं तं सप्रियका
र्ययाः । अविनीतमवसगनस्य वकवास्त्वं मूर्त्तं तदा । गुणवन्तं पूतं राजा नामैव प्रधूपयकथं । ॐ नि सिद्धार्थवच तं हृत्त्वा दशरथो नृपः । शोकयाकूलयाकैकयमिदमब्रवीत् । अनुव्रजामिस्वयमवना
मं राज्यं यत्रिय सर्वसूखानिवेव । त्वमया नार्थरतं नसार्द्धं भरतेत्त्वयाविद्द्धवितायनाथ ॥ ॥ॐ श्रीमद्रामायणे आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे सिद्धार्थवाक्यं नाम सर्गः ॥ ३८ ॥ ॥ कैकेय्या वचनं श्रुत्वा पितुर्द्दैन

वथस्यय। अनूनरामगधर्म्मात्मा नामस्कृतमहात्मयक्षसे स्वक्षसर्व्वरागस्येव याह्लानन्निध विनमअनूयागनमनाऊ क्किंकार्य्यं विज नवन। आवेह त्वागऊ छ्ये स्थैम ऊक र्द्दव हन्नूयस। किं कार्य्यं करयान्तस्यह
ऊनः। श्रूऊवारूमे। तथममविनकस्य धक्रि मा। किं यथाऊनं। सर्व्वमवाव ऊनामिचीना। ध्येवाह नाम्य हं। स्वनित विकरव्याऊ मनि श्व वनयनय। य उद्दन यवर्षा क्षिवन वस्यामिनिर्ज्जान। अूथवीव
लिकेकरयो। स्वयमाहृत्यनायवे। उवाचयान्विध स्वमिनि र्न्नऊ ऊनसं सद्विस्य क्रियाञ्च वगचीय श्वकेकयाह स्नगस्कृगहा विहायवासस्रीदृ श्वेनामं यथेदधत्स्वयी। अूथवेस श्वह च्छायि विहाय
वसन्नेतुरु। चीवथविदधवीनस्कृत्येव पितुरयगेः। अूथास्मयवि धाना ययोन क्री वयवासस्रीद्दश्वास मूञगचीय केकयाऊनको समऊा। लक्ष्मानाम्नि क्रीयाम्बे नामस्यस्तु उ दर्गना। ऊअव २२
हनमू क्किंश्च मृगी दृष्ठ्व वाउना। पतिगृहञ्च वगचीनसीतास्मसा विगरु धा। गं प्रवृतनाऊ यक्तिमेहर्त्तान्म मिदमवत्रवीत। आर्य्य पुत्रकथं चीनमनू वधामि इसम। ॐ सूक्ष्मा चीनमकं वस्थितिके। ६७।
समासऊ। क्वि मी चीवयविदत्वधी चीनमादायमेथिली। चीनस्याकूनला दवीसम्यग्विवसन। चीनवसनां गीदृष्ट्वा मर्द्दनाथ मनाथवत्। पक्रूकं सूः क्रियः सर्व्वाक्षिक्षि गिरयवचावत्रवीत्। धिक्कृथेन
पतिः। धर्म्म त्वास्वक्षा तिः समूहा विगं। विक्कृ दऊाविगए द्वाँ मूरवणशोंचदूः खितः। मनि त्वस्याप्नू। मिन्द्रा कूर्ग थाम्ना मिदमवत्रवीत। नामस्य येवगमनं वनेया चितवसि। भ्रसो मित्र्र्गज्जानक्या नृ गं
सदृष्ट्वाविनि। किमनयो श्रीनत्वं हि ददामसुरदर्ग्नम। याधयाय समावापमृती सकूलयोहलि। केकयिकूंग चीनदं सीतांवासिह मर्द्दसि। अनूयश्यास्मभनावस्याय नामा। विवासनं। किमव

नि मिर्हृहि स्वऊयम स्त्रिदेवतस्यान्निययानसमयास्तु रुत्य वव्रगं ममपयेदेवतां मदं नूनमनूयसञ्चास्मि साय गं। समञ्चय कृति कल्याणीं द्वीर्व्वद्धयस पूवः। ॐ मि सीतावतः हरन्त्वा धर्म्म कृदयनंदन। सुद्धसत्वामूमार्य
हरकीनस्याह खर्द्धपूनमयनिश्चय श्रकोनस्यानांवधूऊनकोसमऊाम। उवाचयनमथी ना गर्द्धदयथिता हृता। अू नाथ्य यमि दंपूजितवनेगवमेथिलि। यावृष्टविदायविस्मृधौरङ नस्य मिथ्यक्रिया। ऊनकस्यनवन्दृथ
मैथिलस्यमहात्मनः। श्वयनसीव्रउधांवेनां सदृशीं त्वं विरूपयदे। अद्दयनस्याथचाचय स्या इत्वसमूय क्रिया। उ तञ्चवह रागञ्च धर्म्मज्ञानयनस्विनी। निर्द्दला द्दं रुवि श्वामि त्वयासरु वनं गता। नामनाऊीवनकाङ्क्ष
सीकं ममूनयागतं। वनपूत्रनयूस्निराश्रमवोप्रमकृत्याः। लक्ष्मणस्यचवीनस्यत्वेरुकोस्यावि। मघगः। एवं संदिव्यसी गायञ्चयगस्यावयगस्विनी। मू श्रीयाया घायसमृह कोसल्यानामव्रवीत्। मिथ्यानाथवसी
तायाश्च विनयीसमीयगः। लक्ष्मणस्यचवीनस्यत्वायिहक समानदः। कर्त्तव्यश्वायमादस्कनकस्यद्वनयादयः। तांप्रांऊलिनकियञ्च माहमाध्ययवेक्तिकक्ष नामः। सधर्म्मां धर्म्मज्ञामातरं वाचमत्रवीत। अूयसी
तां समाक्रिष्यनत्वं मामनूनासिकं। लक्ष्मणस्यादाक्षि स्नेवाहु श्रुथवममेथिली। नविहाडं मयासीव्धाकी र्त्तिन्नायवगायथा। गृहीयनवयायसकूमंक्तिमिरयेममा। अूपिरयातीन्नाकानामीन्वनाद्वागत
क्रमांश। अूयमाद्रूः। ख्विता हस्तं हृह शौः। पितनममा। कृयास्यवनवास स्य रुविश्चितिवनम। अूस्या क्ष्यसादनवर्षा। ध्मानिमन्तुरं। सूखनेवगमिथ्याक्रिययेश्च कथिवसेनथा। स्वक्तिमन्क्रमयाय्यं
मी पूनवयागगं वनात्रस्वि नवसूर्क्तं ऋषिवक्रवेंद ककसि माद्रुचः। वनावदहीनानाथमूहासऊनींवयः। ददत्वंयथस्यमाहृतं मर्द्धसयकदता निमहः। समूयस्यचमादृक्ष्माः। दत्ताञ्जलि त्रिदंवचन

ऽवाचनामाधर्म्मास्मायुक्तयावनमस्कृदाःसीवासान्यूनूष८कछिद्विन्ध्यसार्द्धपूनाश्वमिपमामधनामु८हनिय्य८सर्व्वासूवामध्यामिवम८अज्ञानाद्वायमादाद्धामयावैयदिकिंचनप्सूथयञ्चमहानादस्कासौनूयाकि
यामिकी८क्रोयानामिवसर्वकंदवदैक्रुवनिवाध्यव।मूकजयनवनादनाद्विगं८कैनथवन्मेवह्वधयश्रूना।विन्नयिमयनिद्दविमस्वेनेर्द्दघनकवैस्कददह्विनादिगं॥ ॥ॐस्यार्म्मैजीनामायलेसूयाश्याकाल
सीतासमाद८लोनामसर्गः॥३८॥ ॥कृमीजलिस्कमानामालस्कूयग्रमह्रायमामविद्दह्रोनाजनाजानंघविजमूश्यदकिंदी।कृत्वायुद्धकिंनीश्वैवयलियस्थानूमान्यव।नाम८लकपयविमूनानीजननी
मस्यवादयत्र।भूरुवनस्क्रगद्विमानूदनीमस्यवादयत्रमनामाप्तु८सूमिताया८यादीकअहलस्कलमनंधदमानैववलोमूमिताभूतमववीत्र।मस्नहान्नहूंयाधायपवित्रलावयीतुगं।भूविधूंगकु ४२
पींह्वानेसहनामलस्कल।तुधूसगामानंस्कछनामेलाकल्हिगवनं।सभूतहल्वयाभूततविनादहसवीधवा।यस्ह्वयस्काविया स्वानामांयवनाममनूवृतभममस्काविसमस्कावानामस्कवयवागति८
प्राणेस्थापिपियकवास्कास्कावागाश्रुभूधगं।तस्मादस्रोधमकृह्वीलनैवेवयानय।विज्ञनवसमान्र८ध्यसीनयामस्कृकितसाव।धयभूतसनोधम्मीयीह्वैसवितुमहस्ति।तस्माह्वयाकेस्यागतशुद्ध
श्यायैश्रुलाकव८वामाश्रुशुप्रमकलननामावाजीवलावन८ह्वेयाभूतवनसय८यवियाल्याशुसर्व्वथा।क्रियमव८कूलैवसञ्जकृगामानूयालयश्नाद्यानैदीकामयश्रेवमनूस्योलक्ष्म।श्वेभूव
सुकृतानस्कलेभूतंसूमितानाममवेवीत्र।ह्वयावभूतनज्ञायंलस्कूल८नकृकर्म्मपदा८हकाहिवक्कायामायहय८भूत८सूहक्लेश।ह्वयायंसर्व्वथावश्रौह्वीथैवाननताघव।एवमस्त्रिकिनामस्कीस

मित्रीमह्यनायमत्स्वक्रस्कनीजलिह्वैनामह्रिवाय्यपदक्लिली।गगन८सूमञ्च८काकृकृंयाजलिनीर्ब्बोस्कमववीत्र।वीहीनवदयागस्थसमीयंनाघवस्वव।नाजभूतनमस्कृसूपुक्कायंगमहावथ८।श्रूननत्वौं
नष्यश्यामिगकृथैंवनमाह्रिगं।ऋढदलिववमीलिवस्कूयानिल्वयावन।नाज्ञापिन्यायिमागंयंस्कक्वश्याभूह्रियाविनमसुमन्तुवचनंह्रव्वानमानाम८सलस्कंल८सीनयापैवसह्रिग८श्रूनूनाहवथाकु
मीसगथेवान्वनगागानिहूर्गंश्वकववानियउयगस्कुहिविन्यस्यस्वनित्रंयी०क्ननथ्य।गग८कथिनकायसुसुमन्त्रानाजलाममनात्र।गानानाथ्यनधयभुद्रदोलनायानावनूनाहसमनांस्रीनथिनथानूदान्दस्कुहि
भूनयकम्मा।वाद्यामासमानल्योसमन्त्रानाघवाजयापनम्निग्रयागसहुसावनवासायवाघव।जानामंःतिविकूधूजनीघनसमकृगमश्रीहनाबीनवगहीगस्त्रीगाकृजनाकूलं।पूनमासीदनीव
र्कंनामश्रवविजिगगथा।सुरहूबालाह्रिपूनीनामस्रगायविकला।नामभवाह्रिदूडावघम्मार्लि८मलिसैयथा।यापनिग८यष्वगथ्रेवजना८भूननिवासिन८गंगदावनूगस्कृम्नावाहूनूख्रियहू८ख्विनाध
सैंयस्कूवाजिनैंस्कूगनंनेयोह्रीजिवादिन४नामसुदस्कूमिकामिमूरवचन्दुमहात्मन८।मनास्मिनाहवययवसर्व्वयीननचन्तुमा८।यन्य्यामस्कावदवेनैंउश्यामाह्रिकदाभून४लवास्किगावनमध्यानैनाथे
नाधर्म्मवल्लल४कदेंनैंवनकास्कवोड्रिस्कूम८पूननागनं।श्रूयसैंहृदयैंत्रूनेंनाममातु८सूसैंहनें।यनादीर्यूंश्रियभूतवनवासायनिर्गगा।एक्वैंवहनयू।थ्रेयैंवेंदहोगनूमध्यमा।यानूगस्कूनिगस्क
कृश्रेथैंवानूगनायगि।ह्वैउसस्कलसिद्धार्थ८कृगपून्धध्रय८प्रियं।हस्क्वोनूगस्कृनि।ध्वपूंजागवैंधर्म्मवल्सलै।एवागमहूनीसिद्विनववाल्यदथामहानू।एवमस्वर्गस्ययस्कास्कूयज्ञाममनूगस्कृलि॥

तर्वेकुवक्रस्थे यो नाम्नाथस्वदमूर्यागमाश्रयदान लेकूः सैनाद्धं दूःखाल्लीनूदूरुदा । कनूगरू सिद्धंखाल्लोनस्मानू स्तु अनाघवश्नयास्मानयियतत्त्वं गतुं नामं समूयमा श्रूथनाजाद नश्रीहि विक्रवाः
दीनमानसश्रनिर्कागामात्रिथैयूतुं दक्षु स्मि कन्धयं गहाशक्रन्दगीमीनयश्रीलीरुरवंगतनि सुनश्रकमनूनामिवाक्रुदावद्धं यथयलोवने । सव नाजादतीव थ्रेगनदीर्न्नवक्षेनथ्य । विवस्मिःदर्वहीय
नूर्जहनायहनयूनिश्र गमाहादृनिकवूलः नद्धः समरव महानूनदूःखिवीपुत्रनाजानै सदानै निर्गमै गृहात् दानामभिजनाः कथं विदाउस्त्रिमिवर्वे यमं । ज्ञानक्रानूयामि नराय विवश्रुः समक्रनदा
समवश्रूगमानामःपितवं लोकदर्मिगं । यदाभिमनूगरुकृ याते स्व निहतं कृपाय द्दयाक्रीनयथासार्द्ध विलयकंयदयदं । धर्म्मयामां क्लिमादीमी नानक्रादहि वीक्रिउं । यदामीमाव दूःखाल्लीहतक्ष ६२
दूःखसमक्तिमी । पितबोर्द्धनायामासनाभायाहीनिसावचिश्रनहि नर्द्दनेने नामरूयाद्दूःखयदीनथाश्रननालकमाहूर्दूःखाल्लि क्षाजाद्धिगुरुवद्धियश्रहापूतनामहासीमं दानस्थलीनयस्वमीः
रुं तिनाजावदवीचकान कावथ्रश्रवनी । उद्धस्थवाद्गूकनूर्द्धकाणकी कूबनीमिव । अयस्मकनदानामानरथक्रीमिवमानदनं । तिष्ठतिष्ठ तिहाक्राणडाजायाहीतिनाघवश्रसूमकुस्यावेहे कृतलोः
यक्रान्कविनामजिःनासीयमितिनाजानं रूनवश्रूणिसंगमं । यितैं दूःखंहियायीयरुं तिनामावधीद्ववः सनामस्यमनं वूद्धासूमक्तादीनमानसश्र गूंडलिनयमं ः दस्लोदणयामासमान्दया
न । नीवुंधुउविनै वर्द्धेश्वयानूमथनाघवं । यदानलंकूथ्रलितुं यीनाणीवक्विथकूदा । च्यवर्द्दकसूदूःखाल्लीनिनासीनामदननिं । मनाहिस्त्रानुवैतेचनच्यवर्हगसर्घतश्रयमिक्रुवयूनर्द्धः

नूनगंदुवमनूवजगअवतिष्ठथमूरवाविधाउं स्थूवूलंनूर्यनदानानमंगदानद्धवनंनिनय्यनाजाथुनूलींविनिरद्धवार्घं । नस्त्रोप्ययामंनमवीरूमानावि मादलोकयथितान्कनास्मा ॥ ॥ रुं स्यार्थद्दीयाम
यलनूथाश्राकालुनामनियीनेनामसर्गः॥ ३२॥ ॥ नस्मिन्युयागत्वनिगवनवासहगीजली । श्राल्लयाहिसीजइस्त्रीलसमकःपूयनदा । अनाथसजनस्यास्य दूर्व्वलस्यनप श्रिनः । यागतिः लं
वनवासीन्सुनाथःकनूयाद्या जिनयःक्रुद्ध जिनथ्वा यिक्रा धनीयात्रि वर्त्तयन् । कद्वान्युपादयासर्घान्सनामःकनूगरुति । क्रीणस्यायीमहागजायथामात्र विवर्तगं । गथेववर्तिगं न्यासूमहान्माक
नूगरूतिः । कैकयार्क्लनमानानींनादृथकापितनयः । अयूद्धिवंगर्विनाजाविपवीनमजिनूकिं । यानाथंसर्ववहनानांयत्रियदजतिनाघवं । रुं तिनाजमहिश्रक्ता विवस्तारुं वाक्यनवः । चकृनुथेवदूःख्या
र्लीःस्तुवैथानूवूदूश्वगं । सनमकःपूननादंकृल्यानासीमहाय तिः । पूलोकार्ल्तमंनपः सनादगनस्वमनःनाभिहाजानिदूयनं नमःसूर्यं समायद्दीःनयदूःकवतीनानंनकूर्वस्तेचथ्रनवश्र
चुकुसं थ्रेवदूःखाल्लीःसूर्याभ्रानकनाहवः । यानूलाः समवर्त्तेकनगहाःसर्वयदक्तिलसनकणलिहनाद्धीमिगहाथ्रायहत्विपश्रविलिखाधसधूमाथ्रनान्नयःप्रचकालीनं । श्रकालानिसवंगन
महादधिमिवाद्धनश्च नामवनेगडुडंगं भगवैयचवानस । दिनःयर्याक्रलीहृतादक्तिभिनहासमावहाश्रनागवथजनः सर्व्वंदूःखलोकसमस्त्रितश्र आहानवाविहानवानकश्चिदकगौम्नः
वाष्पयर्यक्रूलमूरवानाजमार्गगमाजनश्रनहृक्षालस्यूनकथिसर्व्वःलोकयनायनश्रनववीयवनःनीलानमगायदिवाकवश्रनवनाजनलीवापि सर्व्वमासीसमाकूलं । नाविकयन्तूनकश्चित्

हर्ष्ये तथास्तु यमनकान्त कामिनी वाचिनव कामीव नाशनीं । नासमादनाति कश्चि ख्याकसं विमानसः । सर्वैः सर्वं यनिश्चयं नाम भवान्न विकृयताय सर्वं नाम सुहृदस्तु सर्वभूतच्च गसभ । लोकलावसमाक
न्ताजकृत्व नयनं नदा । विनर्हकृथ केकयीं निन्दकृश्वापि हृयगि । आत्मत्यागात्रसूयकृ यदेव भूपागताः । यदा त्वयाश्व वहिनाम हात्मना । पूर्वदन जेवनदोम नावनी । यवाव सर्वोद्य यहाव यीतिना
समागयाश्वन्वसमाकूलापूर्वी ॥ ॥ॐ॥ आर्यश्रीआमोघपाशावदाने पुत्रेशनविलापोनाम सर्गः ॥ ४० ॥ अथावज्ञगच्छन्तः स्वयं नाज्ञापृयमथ व्यग । निवन्धाकृतवल्लावस्नीजहानाम्नवरक्षीसर्य
वडाज्ञायिपूर्णयश्वति सवयक्षा । उत्तमक्ष्महीना वलुदादूत मिवाकर्ते । यावज्ञायि यपूर्ण मयथ्वगंकृत धार्मिक । नाव प्राययगीनहावकृ मीयध्वनः । मूर्ख नाम प्रश्रवजायथा हमियः । सर्वदायध्वानम ४३
यार्कु विवर्ष्न बुधव अनियपाद । नहोद क्षिणमत्वस्मि कौसल्या नवदश्नात् । वामश्च साध्वगादशं केकयीं इवमथियाः । तौनयनवसंय न्नाधर्म विनयनवाः । उवाच नाज्ञा केकयीं सर्वेयाय विनिश्च
यीं । केकयि मामसाक्षानिसाकी दृष्ट्वा विनिन् । नहि त्वां दृष्टुमिच्छामि नष्टार्थां त्वमसेसुगा । यव त्वामनूज्ञानं किनाहं नयां नगममः । केवलार्थयतां हि त्वा त्यज धर्म त्यजाम्यहं । सूर्यं दृश्यत्रागया ।
तिम त्वीययोत्ते नयंयय । शुवज्ञाना मिनस्वर्व मिदलोकयस्य वालहनक । पुत्रस्य गीतः शस्या डाऊ याचे गदूलसं । प्रमार्थेय त्मसंदयामामान्नैनभूयागमत । पृथवलूयविश्वस्तगमूलाप्यमहीप
तिं । प्यवर्त्यहदादवी कौसल्या । लोकक विनाहेतुत्वं वश्यातं नाज्ञा यदास्य । थ्वमनआपिमा । सूनूनयानधर्मा त्माघूतं सं स्वयनाय संयं । नहि निवर्त्य निवत्यासौ सीदमानथव स्मृति । नाश्रुस्मृत वरोत्थम

४५

श्रीसुमनायथा । विलनाय ववद्रः स्वार्ते । प्रियं पूतमनुस्मतन । नगतीं नाम नूयाद्य त्यक्ता पूतमनाथवत् ॥ॐ॥ मानिकृयमूर्ख्यानीवकर्मा गंमहात्मजं । यदा निसृविहृदयकम महात्मानदृष्यैंग । सनूनं किं
विद्वाल्वकृत मूलभूयाहितनमक्ष सवीयदि वा स्नानभूयधायनयिस्याग । मडन्याय चेम दिन्याः कृपदाः यीसुगुं थिन भवि निज्यस कमूर्ज्मकृकत्वयूनामि वर्महं । उख्रष्किदृमान्यूनूपादीर्घ वादू वनयवाश्च
मभूत्वा यनस्तुग्लोकनाथमनाथवत् । सकामा हवकेकयि विधवा नाशमाहि णयेन शूद्र्यूनूघ्याश्चाहणी विउभूमर्ज ॥ॐ॥ यसौ विलयवाजाउमोध्यना हि संगनः । अयस्मान्मतं वकन्दं स्यविवनयूतीं ननः
नूथ्यवत्वेवव्याघ्री समूलाननीवनीं । जनेन यत्कदूः स्वार्ते वना कीर्णं महायथः । नमंत्यनउनः सर्वा नामसर्वात्मनागतं । विलयन्याविणडाजानकं भूर्ख ॐ वीवथा । नंदूदेगनूतनवसमाना हताव
तः । आत्मनात्मघथनयन्तवकृयापूलिनं मनः । नकः सवाज्ञा । लोकानुकूजावूद्यथ्य दूः । स्विनं । दृष्ट्वा पुत्रागकनूनं हा वाध्यवउहासिमां । दूःस्विनः क्लिनदूः स्वान्तं जीविष्यन्निननालमाः । प्रतिप्रयानययाम
दृष्ट्वाञ्चिपूतनागनं । नहीं यश्च मित्रौ सल्याप्याहिनासाश्चिमी स्यप । नामेभमनू नणाद्धियश्चाषिनिवर्त्यते । मंनामायाणामनू विकृयत्ने समीयद्वीनयमनन पत्नुं । अथ पयविज्ञा श्रिक मार्त्तनूपाविनिय
सक्तीविललापहस्रूणा ॥ ॥ॐ॥ आर्यश्रीआमोघपाशावदाने दशरथविलापोनाम सर्गः ॥ ४१ ॥ ॥ ततः समीक्ष्य शयन सन्नं लोकन कर्षितं । कौसल्या पुत्रलोकार्त्तं नभूवाच महीपतिं । नाद्य वनयन्नि
ईद्रविषम्लूक्षाद्विजिह्वगविहतविष्ठ किकैकयी स्व यथान्मसमानथा विद्रास्य नामि सूत्वा सासकामा मनस्विनी । नायं पिष्ठ किमों दृष्या दृष्टाहि निववंश निः । अथ्राक्षिप्तगतनामः ध्वसकेशु पुरुवस

कामयावाद्धवै दाउमयि दासमनास्त्रऽी । यातिनः सद्दिकेकन्याक्कानादिष्ट्राय । थकूनःअप्रदिष्टावकसीकागः यद्ध्वीवाहिमाधिना । गऊवाऊगलिद्धीनामहावाहूर्म्महामनूभविवधयनर्थ्यं नूनं ससर्य्येकोः सहलभू
नःअवनभूदहदूर्य्यों धेकन्यावचनोन्नूया । यक्कानीं वनवासाय कात्त्ववक्कारविश्रुमि । गहागहीनाकूनूनाः हसकालविवासितामःअवनेवस्यक्लिहृयत्मामभवसाः सूखाचितामः अयोदानीं मेकासेः स्यात्ममनोकह
यभिवःअसनायमेहि गताजाय । अयं यरुनं सूनं । कदाया अोमहावाहूः यथं अमिसत्त्वमूत्तमप्रनस्त्रायन । थसीनीं वृधहावासिनामिव । एतं दायस्थिनं नामे कदाया आहविद्यमि । हनहिनीदहूऊनाय
नाकाधऊमालिनी । कदास्स्रूनवयाद्यमवक्षेम्त्यूनमागनं । नद्धिद्यमियूवीवध्याममूहं विपद्धीनि । कदालाकसहूवानिवाघवीयूनमागनी । लाऊँ नवकवि श्रुक्विप्रविनक्काविनिंदमीं । कदायविनकाः
वृद्धावयमायामनयुनःअ भूयूयोभ्यमिधर्म्मऽः सवत्सनूं वमोलयनू । कदामूमनसः कन्याद्विजाः योनामहकुनाः अप्रविनक्कीयूवींहरद्दोकविद्युमप्रदक्लिनं । अविनक्कीकदायाधीं द्रअमिनुहकूनुः ४४
लो । दृदयोहनलोवीमोनिम्सूहनानअविलनी । साहं जोनिववस्मनविवसावह्मलासीती । केकन्यामूनूयपायवालवस्मवलाहना । नमहं सङ्कुलेर्य्यूकं सर्व्वनामुविनानदं । उकयूनाविनायूर्गुनीवि
र्मुनामहूसूनं । नस्मिमजीविननहकिं चिन्माधीं क्लिकन्यानं । अय थन्ताः युयोयूनं लाकयार्न महानुऊ । अयं हिमीनायय नंमूदानूनं मनूऊ । लोकयहवाकूनानःअ महीनूहेनमिः । हेनूह
मयहायथानिद्याधहनवाद्धिवाकनः ॥ ॥ ॐ स्वार्थ्यनीमामायनिनूयाव्याकाकुकोनयां विनायानामसर्गः ॥ ४२ ॥ ॥ अनूनकामहास्त्रानेनामेसलयनाक्रमे । अनूनूऊनुः अयुयाकेन

नी२

वनवासायमानवाक्षनिवर्ह्यमानाः मूहनंमूहद्दर्गनमाद्यवानस्मम विनिवर्हलक नामस्यानूगनावथं । अयाभ्यमिलयानीं हिऊनानीसुमहायनाः । वहूवपुनसीयनः यूर्णूवपुं वद्विजअवार्य्यमा
नायिकामूहः स्वाहि स्वकृनिहि र्ख्युऊमे कुर्वानः यिनवंसनवनमवानूवर्हनः अवअमानः समह स्वकृ याम यिववि वि । उवायनामाधर्म्मानानाः अयुजाः यहविक्रुवाअ याधी निर्वद्धमानअमयायाश्च
निवासिना । मन्त्रियार्थमदनयनहवनयानिवक्षनीं । सहिकेन्यानचाक्तिः केकन्यानद्धिवर्द्धनेः । कविक्षमिसुर्वेवीनः प्रियालिवहिमानिये । सज्ञानविरवें रुद्धेः नीसर्वां श्रुतुनास्त्रिनः अनूनूयअम
वानाजाह विश्वामिमूखावहः असहिवाजाउलेयूक्काः यूवनाऊः यनीऊनःअ अविवार्यं सद्यानस्यकार्यं वाधर्म्मनासन । ज्ञानवद्धावयांवद्धामदृष्टीर्याउनाक्तिनः अयनहु स्थियवादीवनिर्यवंयूजनसि
यअसंनयम यथानामीवनवासगनमयि । महानाजस्नुः कार्थामम प्रियचिकीर्षुहि । अयथयथायानवधिर्धर्म्ममवानूक्कीर्न यजानथानथायहनयानामममवानूवस्थिनेपवाश्चनयिहिनदीनेनामःसी
मिप्रिहासह । मेव कर्म्मपुनेवद्धायोनजानयदैऊने । नथाद्विजानयःनीलवयानूयपुनाक्तिनामनयसादीयिमानानावश्यमावमहोऊसअनयथकंयिनिनसाहूनाहूनूनिदंववः अवहनुऊवनानो
मेहाहाजाह्यामुवहमाअनगकृयीनगकृथीहिनाहवनमर्हमि । कनूवक्किहि हमानिवि । अमनुवअमाःअयवाश्चाहि मनह्लनायवाद्धः यूनाद्धने । निवर्हथं नगकृयी कहुनमद्धि । आहेनीउव
माद्धियलायां स्नात्वा स्तानानीनिनम्यसः । अयअमानानामाथवथादवननानसः । यत्नामवऊगममाथसमीनः सहलस्त्रनः मेनिहयूपदन्यासानामावेनयनायनः । हिजानीद्धियदानीं कं

ग्रामश्चलितः सम्भ्रान्तमनसो लोकसङ्घाश्च ॥ ५ ॥ यत्रिगीतं तथैव सम्प्रागच्छत् सम्भवनं दृष्ट्वा वने सीताकुमानसं ॥ उत्तस्थौ समसीतं तत्रागमत् नान्वास्मिन्दिदृक्षया ॥ सूर्यं वाक्तं न सा घातसुप्ताया कमनागच्छति । दृष्ट्वा सीसाधि
नूनं ग्रामवधूर्यान्तानुयाप्तिहिताः वाजपेयसमूहं ॥ तिष्ठन्ताः अगानि पश्यन्तः ॥ दृष्टवान्तानुयायानि दृष्ट्वा सानाभिवर्यकन्यः ॥ अनवाप्त तत्र पत्नस्थान तस्मिन् सीता पितृस्वर्ग । तद्दृष्ट्वा यो कपि ग्रामः ॥ स्वे प्रयुक्ते वा उपस्थि
के ॥ या हि नः सकलं बुद्धिं च दमस्तानुसारिणी । चलन्ती सा कन्या श्री लिङ्गमवासानुसारिणी । हृदयस्थानुगिरस्थितिवेशास्यनः ॥ यत्नं वने । तथियाम्भिः वनाच्च वस्त्रे वाह्र वसनं हि ताम्र नयनं त्रिपुरं ॥ कायं वृत्त
मनिस्रिता वर्यं । निवस्यक्ति गृहस्थवदानामाश्रमिकृतनक्तिताः ॥ त्वयि धर्मस्य पथस्तु न्याय्यं धर्ममय हितं । यदि धर्मं न जानासि प्रजानां न कालेषु वे । वाक्सामान्यनीयाश्च प्रजानां हितकाम्यया । या विनाशि
निवर्त्य स्वहृत्सदुत्कलिता नूर्ध्वं ॥ तितां हि तुच्छयाचानमहीपतनयां तु तेन भवद्भुतां विनतायज्ञ द्विजानां यत्तु इागताः ॥ तथा समाधि नाय त्रोतव नाम निर्वल तनुं तं सानि तानि दृष्टानि । उत्गमाउगम
निश्चयावेष्टिता तनुता निजः सौख्यं नृदयां प्रशान्तां । याचमान मृगं गृहीत्वा हि तत्क्षणं सुदर्शयत । तत्कालो हि प विलापगतेव विदिता यथा । अनुगतु मनसा स्त्री मूले नूपी निवेशने ॥ उद्धृतसारवाः ॥ स
कपूतं विक्रान्तस्य वपादयाः ॥ नियतलद्दान संवादाय तत्स्थं । अथ पुनः स्थिताः ॥ नामैव पत्नी त्वं पूर्वं यावत्कस्य वचः ॥ तद्दृष्ट्वा भवत्यो वा भीनामः ॥ सौमित्रिश्च सह । ततः सर्ववाथ सहसा नाम घवाथ सर्व
सत ॥ उदयं तमसी कल्पवानयक्तिविलापम ॥ ॥ ॥ इति श्री रामायणे अयोध्याकाण्डे वाक्यविलापो नाम सर्गः ॥ ४३ ॥ ॥ ततः सकलमालोक्य वासमुद्दिश्य याचवः ॥ नदीमुद्दीक्ष्य सी

४३

ततो मिथिलेन्द्रं वचनमब्रवीत् अथ प्रथमं यं निभासौम्य सौमित्रे यत् पूयस्थिता । वनवासस्य तदर्कं त्वं नाम कृत्स्नं तु मद्रस्य । पश्य नूनं तन्त्र स्यानि नृपकीवसमकृत्य यथा निलसैलाने हीनानि मृगयाश्रिताहिम सूया
श्रोसौ यत्नगवीव उत्सानी पितृधर्मम् । सुवासहृष्टानि यतमस्मान् लोकविलसद्धा । अनुनयकाहि मनुजा वाज्ञानेवकृतिस्थितिः ॥ सौवर्ण वमहावाहान तु यत्र वनं तथा । पितवैश्चनु लोकावाभिमान वैश्यपति
र्नो । अपि नाम सौम्य वत्सलौ नृदक्ता वाचिकारतौ । तत्ततः खलु धर्मात्मा पितृ नैमातवं तमः । धर्मकामार्थसहितं द्वौ दौ नाम वह्निस्थिता । तत्वतस्यान्तः समवेत्स विधाय हृद्ययूनः ॥ पूनमनानु लोकचमिथितवी
मातरं चापि लक्ष्मण । स्वयायात्स्वनवायद्य मामनुजकाक्षतो । अपि नस्याद्धि वैदेही कानस्य यथैव सहायतो । अपि नवतु सौमित्रे वसामाज्ञा निभामिमां । एकाकी या चतमखीवश्च पिविलिवि उसति । एव
मुक्ता च सौमित्रिं रामस्तु मयि नाथवः ॥ अथ सम्यक् स्वमद्ये सूरवसीथ शुचावहो । मानवं सुमन्त्रः ॥ संयता सूर्यकृत् समूपागतं । तत्र तन्वप संदत्त्वा वक्रवयस्यनकृत्वा ॥ उपायस्तु निर्वासं धर्मं इद्यानाति
मृगं पक्षिणो वनमथ्यान्यां संयतः सूतः ॥ सौमित्रिमसहायाः नौ समयाततमसा लीनं तु तत्पश्येद्दृश्यतां नाम ॥ सौमित्रि मामत्र सहायः ॥ संविवक्षसहायस्यसहार्यं सुसंभूषं तामवेदी तल्लक्ष्मीलाः ॥ कथयाम
सहसा तायनामयापि विदिता तुलानुलोकलाकूलनीवेतुममत्सामीथमामि ॥ पुत्र स्नूवसकृतनाम नाति नाम ॥ वत्कलिनि ॥ सह । जातमानवसानाति ॥ मातत्र थेलक्ष्मी सम्पन्न । उपसमतमसामीयनाम स्वकुवर्म
गुणतनुः । उत्स्वायाधनवाय सप्रजाः ॥ मूलानिलमध्यश्च । अब्रवीन्नृपतिनामासं स्म तीर्थं तु तलकी । अत्र स्थापय तथा यानि निवपन्ता नाव स्थिमान । तत्र मूलं पृष्ठं कान्वे पन्थयोना नाव स्थिव । यथैगति

त्रिगताः सर्वे यतन्तस्मिन्निवर्त्तने । युक्ता हि तत्र दक्षा न पि नैवात्र संतयः ॥ यावदवतु संसृतास्तावद् वचयं सथूः । तथमानुसृगञ्छाम ॥ यथ स्यन तथावनी । ह्याधिमयश्चन्दीनी मित्राकृपुरवासिनः ॥ स्वय
यूवनूनमाथ यदृकमूलान्युपाश्रिता ॥ अयोनासूर्थ मनादूरवा द्विपमांत्यानवाधिपेमनतुरवत्तास्तमसायाश्चा दूरः ॥ स्वनपुरवासिनः ॥ तथा हृत्सञ्चलान् रामः सौकद्धर्मश्रीवक्षिनमनावनमहोमेप्राह्न वथसानुज्ञ
नामिति । सूतमादूतनावाम स्वविनष्टुवत्सलः सुमैः ॥ उदञ्चूरवश्च याहित्वी तथमानुसृत्सारवत्थे । सूकर्णेचवितिगन्त्वानिवर्त्यद्यवर्षं पुनम यथसपुनर्न्नयौ रामौ तथा कृतसमादिनः ॥ राम स्य वचनं श्रुत्वा तथा
वङ्गसमावधिः ॥ प्रत्यागत्य च नासयंदनं प्रत्युवदयतां तस्यन्दनमधिष्ठाय राघवः सपविकृदः ॥ नीसुगमभावृतो वद्धीमकत रुमसीनदीं । सतीर्यच महावाहुः श्रीमच्छिवमकण्टकं । प्रयचनमपामार्ग ४३
मतयं कमदर्शनं । प्रवृत्तोयो नासुतमाभिनाकृयमथ स्यनन्सीदहनु निवर्तनं । नृपात्मजः सानुगतः पुनीति मितियथकृयाम नगरीं पुनर्यपुः ॥ ॥ इत्यार्षे श्रीरामायणे आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे तमसातीरनिवा
सोनाम सर्गः ॥ ४५ ॥ ॥ अनुगम्य निवर्त्तानां रामं नगरवासिनां । उद्भ्रान्तानीव सत्त्वानि बभूवुर्गतचेतसां । स्वं स्वं निलयमागम्य पुत्रदारैः समन्विताः ॥ अश्रूणि मुमुचुः सर्वे सस्वनं लोकविक्लवाः । न स्मस
ह्यामहनात्कश्चित्त्रियान पिहितां धवान् । तथालोचयस्याश्च आपणानि यथा नामनिवासन । नचतौ नाविनष्टं विशेषं कृतवन्तं द्विजातयः ॥ न च स्म प्रविदन्कश्चिन्न च धर्मान्यवर्त्तत । यथापूर्वं त्वाथ स्नग्ध्रकचि
रुतं सूतः ॥ स्विनाः सनायन स्वयनं ध्याय्यं निःसृतां । न व यादयाः ॥ नापचन् गृहमेधिनः । अत्र मकृत्किजानप्रसारयन । न चाशोभन्त पण्यानि नापचन् गृहमेधिनः ॥ नष्टं दृष्ट्वा नाभ्यनन्दन् विपुलं वा धनागमं । न

त्रात्यनन्दकामनी दृष्ट्वा प्रथमं सुतं । कुलं कुलं रुदन्त्यस्तु राम एवं गृहमागतं । विगर्हन्ति सूक्तः खार्त्ता वाक्शल्यैर्निवर्त्तिया ना । चित्तं न मां पुत्रे हकार्यं दाराः न पिधनेन वा । पातेर्द्धाः किं सुखं ख्याः पि यत्र नयत्र क्षिमा
पर्वं । उत्कः सपूर्वमालाकुलः सूतैः महसीत या । यानूनमचि कापूर्वं नामेयविचवन्त्वं मं । अप्यनाः ॥ कृतपुण्याः स्म यच्चिन्त्य पवित्रं नत्तुहाः सया उयास्यति काकुत्स्था विगाहू सलिलं शुचिः ॥ विचित्रकुसुमापीतासकृ
तीमयूक्षाविताः ॥ पादपाः पर्वताः श्रावमयचित्रवाराघवं । अकालसुपिमूर्च्या निमूलानि वहूलानि च । दर्शयिष्यन्ति मानुन्निगिरीन्रामं समागतं । कानने वा पिलेसेवार्यं नामारिगमिष्यति । प्रियातिथि स्मिवप्राक
नेन्नं स्त्रात्विनाच्छिदं । सारयिष्यन्ति काकुत्स्थं मरुद्युच्छ्रितकाननो । श्रापयत्सु मञ्जानुपाः सानुमन्तश्च पर्वताः ॥ समहितस्मिन्मेसायावसुमत्यामहायशाः ॥ धर्मपालस्य ला कस्य धीमान्दशरथात्मजः ॥ यतः
नाभालवकृतात्मनाकिं यनाकवः ॥ स हि नाथो जनस्यास्य स गतिः सपरायणं । धर्मयनायम्ताः ॥ युनाच्यातिमादूवादनुगच्छाम राघवं । यादृशी यागतं कस्य निवत्स्यामा वयं तया । अवध्यं यद्विपन्नित्थाम ॥ सीतायूपवत्ता
पर्वं । अस्माकं राघवानाथ यागच्छन् भविष्यति । यतनामानवता हि त्यजन्तं वयमागतः ॥ स हि मूलामहावाहुः ॥ पृता दत्तनथ स्यवे । कौशल्ये नानुप्रतीयेन नामनाद्धितमानसः ॥ सेवी यतामनाङ्गम सूतकानि
तजाननयः । कैकेय्या पुत्रदिदं नासुखस्यादधर्मं मूलाथवञ्च । नातनाभौविता नार्थः कृतः ॥ पुत्रैः कृता धनैः ॥ यायूर्वपार्थिवं तु स्य प्रव्राजयति निर्घृणा । गच्छेयदि महाराजस्ती नाशुम्लहि मयि कृत । न हि जातु विनी
औयका जायतमहः ॥ रविकः ॥ गतं दनवच्छगम धर्मं प्रजिय स्यान । अथ आपूर्तप्रहताय चक्रवत्ये र्घकावसी । अकथं सानक्षितुत्तकाकेकेयी कृतसयो हुलानकेकयाने वयं नाशकृताम पि वसमवे । जीवंत्या

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ४८
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नेत्रं भूमि। सिद्धार्थः चितनेवृद्धेन स्मि [illegible] सङ्घस्य कृतं। पुनकार्य्य सर्व्वपूजां स्मृ ति स्थिति नायकं। नयचललेनसंस्थानां सुविरक्त महायथा। दर्म्मप्रासादसंवार्थं मलिकाचन [illegible] नि। तथागतमैत्रा धी
सूर्यधावत्रिनादिनीं। सर्व्वकल्याणं संघत्रींद सवसूवडनाकुली। आका माझानसंयनीं समासाली नलालिनीं। सुविमा विसवि स्थिति नाऊ आनीं चितु र्म्म म। सूचिमत्य प्रतिमन सार्द्ध कुललिनावर्यं। निर
कवनवासस्मिन्नयाश्च प्रविन महि। यनिर्द्दवयमानस्य दुःख्याल्लि स महात्मनः मिष्ठता नाऊ भूत स्य नर्द्दं नी मान्यवर्त्तमान महिता सिंहवती प्रज्ञा दिनं न मनुष्य विकसोद्दा दा लुहम सूमाचवा
यैं यथ्याभियो तिमा हा साउ आना गरुंवाहि पीतिन ॥ ॥ इति श्री [illegible] वामायतने सूर्या श्राकाउ सैमि ति विलायानाम सर्गः ॥ ४८ ॥ ॥ एवं नायीउनर्द्दथ्यां पथूव का महायना ॥ उवाचना ८९
मः हो मि [illegible] ल स्व र्णा न नेगुरु। हास्वा द यक्ता सार्थं न ना हगवनी निमा। अस्मी सूक्ष्मा विहग काचि सस्क [illegible] वर्ह यै वैवनि पीय [illegible] यतनदनीवन। न नाम काङ्क्ष वीं सौम्यो लीखुसागरसंगमा। वि
ज्ञायया मस्य तिं सोमि ति [illegible] दन [illegible] मास्वामु गंव सालि [illegible] कसायोसनसू। स्वज्ञीवद्वाचध त्रिनी। उ अउ यनगं गं वै सी न या सहवायवी। यां मवउ धर्म्म इ महिगमा विनी नव कि
महंकमवी नीकि सून। इहीं। लि म उ वी अनिवर्त्त [illegible] वाचनममाव द्धि हि गं कृतं। शानन यछा मवाहन मिशामि महावने। आसाने स्वयं नूठागं मस्वा वार्त्तः ससान थिः। सूमनुः यू नू घ याघ मिदं

वचनमवनी। ऊनगर्ह्मि नाय लोक स्व यून्नु मनद कन क्षिणनव सहादरा र्ग्य स्या ना मधुव कुमवन्ध न। नम नयवस्ल वर्थ लि सुधी माया रु सी दयः। माईवाउं वि थ्याधी पिन्नी यछा सनमा गगं। सहवाघवेदसा
उत्ताव त्वंवनव सन। नगिं पास्यान स्मीं मी ज्ञाका सिंर्द्र यन्नि व। वर्यं स्वनूहनावी म य स्थ्यान वह त्रिनाः दे क्त्या व नमन्नामः यायायाकु स्व हा निन। ॐ कि कुवन्ना समम। सूमलु सानचिक
ना। दस्वा वनगर्म वा म नूमाद हल दूः शिवकः नकामिन कवाश्ये उ इ स्वा म स्वादर्ल स्विमनाम सूमधू नीवाधी पून। यूनसूवाव ह। ॐ कायूनी मृदहवान्य स्था याउ ल्यान विप्रान। यथा मा जाद गन थ मां नुन
य हल थाकू सू। दुःख्या यह न वना हि द्द प्र ठ गनीय मिः म द्धि या महर्गीनय कू स्माद र्द्द वीनच्छे। यज्ञ दाय्राय यक्ति वि सत्तमहो आमहाद्युनिः। वें कृत्याः पिप्रय कामार्थं कार्यं नद विनेकया। एतद थं मि
वा आनिय तसं क्ति नन घनाः यद सा सर्व्व कार्थ्य सूमना न घ मि ढ न्याम। मय यथा समहानाजा नाली कमधिगच्छति। नवानू विनूय निमी सूमनु स्वनयान्न नू। सूहमदवचनानां गव लिसं सूनय। सिमा उया
यां व्रसं प्रायाद्य याश्चमहि वादनं। कें कं यींव सू मिति वि या स्वान्याममभा नन शनी वाल्य रा अकी न। त्यां य दि ऊ वति मीं विना। दें अ सद्दः स्व नाजाने मद्धि यो नन कर्षि ग। द्रुया श्चमहि वा ये न ममद
गा वि दं वयः न वि षा धान सं नायः कर्ल्य ममका नहा ताल स्र हीय कि ना जाने वे दहीं वान वाधिय। अपि वर्ष सहू सा निगाम श्या वचनादहं। निवस मव मन ८ म स्वर्गलाकं ॐ वामनाः। यस नीति
पि उः यू नाद न दका पिनलान्ध मि। अन्न याय पि वा स्कूली वर्च कृति नि वद्धनं। यमु पूजा न यू ता थं पि उः कू या द न ह्नि न। आ आनेया स यन्ना सी उ यां वानिव नि। [illegible] यः ननवै वा रु ज मा काहलि नी

वाक्ता ततः स रुरुत कर्म्म कृत्वा तथ नवाय्यः पितुर्भ्वजं नैव हि तत्ता वितथ्य कृ सीताया नयल कृतः शूर्याध्यानि ः सु ता प्रेवितव नवस्याक्तिय मिता । वचईन सुवर्ण्ण पूर्यती तपू ननः युतमल कृ तीवेव
मीसी गीरु सूसि क्षिप्त मागतं । एवमुक्ता महाराजं कौसल्यां मातरं स्वम । शूर्याध्वदेवः सहिताः कैकय्यावपूतः युतः । दूर्याम्बस्त्रमाताम्मथ या यादि वैदनः । सूत मद्वचनाद्वी सीताया लक्ष्मण
च । विज्ञाप्य सुमहाराजा रामं क्षिप्रमानय । आगत आहितं कृत्यः क्षिप्रमवत नवर्षरः । सूतिप्रियः कवतरवत श्रीवराजा यथा स्मिकं । राजमलोयङ् दुःखेन रामं हि रविषादितः । सुवन्न आपि वकाथ
यथ — — नि वर्त्तस । तथा माहपूर्वर्थथः सर्वास्त्ववाविलं समृतः । तथैवतनवकैकयी भूमिता यितथैव च । तथैव दवीकौसल्यामम माताविलं यकतः । तातस्य प्रियकम्म नरत्नौ वराक्षयर
या । लाकत्रा तूरयाः तत्त सर्वं थसूरवम प्रितृं ॥ ॥ ॐ आर्षश्रीरामायणे अयोध्याकाण्डे रामसंवादो नाम सर्गः ॥ ४२ ॥ ॥ एवं सीदित दत्तस्य राघवस्य महात्मनः । लक्ष्मणस्तकृतं मासाय
सूर्यं वचनमब्रवीत् । कैकय्यां प्रतिकृत्वापि निश्चसरु कृतीभूरव । शूमम्मा प्रथयाद सृष्वा वस्त्रधामवसाकयन् । ममापि वचनात्सूत नवकथा रवताम्रयेः । पुनर्भ मिनसा दत्ता वैदमानः युतः यू
नत्यैकन्नाग्र मयाधेन नाघवात्सकवंस्वलतः । आत्रोममगुणस्य आत्रवयातोन विवासितः । सर्वथात्तवताकार्यं कैकय्यां प्रतिवेषनान्न तसंच थात्मघ्नसमहदुःकदानं । कैकय्यावसे
दत्यात तस्मायाः सूदानृतं । यशोवियदयं सकृः । किं नाम सरह्नीरमं । पुत्ता कृत्वार्यनीत यसर्वरत प्रियं वदः । रामः किमकचा त्यागी सकार्यं सदुयअयायात्प्रितदयीताम स्वाराद्यक्षो यदुनमान ३०

३२

मः । हीमतत्यन्तदादं महाग्रार्थिकत्वा गुरुर्नत्सनसदैतं सकुः मथमार्थविनातं । सुविधेयम कृवतागुणवकं विलमयमस्यद यथावनकर्त्तव्यं यशोधर्म्मं वकृता । तदकर्त्तव्यमत्यादायं वत्सायपादितं
पितृ यदपि कर्त्तव्यं यशोधर्म्मं वकृता । अर्थं सर्वं यत् कैवसन्न्याप्तदन्तूक्तितं । पूर्वं वपियसूनस्य प्रतनसहयाथिवि । अपि वितस्मात्स्थ सियुनः साधुः । यो स्वववातृणीं स्वद्विधा हि महात्मानो महाराजानं वर्ष
राः । पविनायत्रेष्यु आपत्सु कार्यसत्येतस्तां । तकृतं लक्षितं कोई कुवातं यतं वंवयः । विनिवायाश्विवीजामः । सूतं दीनमध्या सूरवे तल कृतोऽयम तिकृदुः । सूमनु यदहायमं । यनूर्थमनैर्मनाथीह
वृत्तावसधा पियः । दुःखः कवृत्तयथीय । तत्त कसेनाय दुःखितः । सहसायत्नूर्थं कृत्वा रघुनन्दायि हि शीविरं । स्ममनु यनूर्थनस्मात्रयायस्कमहीयति । विप्रियाणां यशो थहि नवद स्नातूजी विनः नया
आत्मिन सन्निरक्षयक्ता नातनगमीय तिसत्यवाक्सूनवद्धस । अर्द्धक्षयन नूयते । कैकय्या वनवदानं मे यिनामसक्त माहितः । मीवनसक्तवान्यूतमवतः । सत्यय तिनहा विधवासाभकस्न हालतूर्ध
यममानतः । वाक्षि कि मिवनवृयाक्य तिहार्यं स्वयापूनः । सर्वथैवप्रियं वाच्यं प्रियाहौनूयतिस्त्वया । शूतिवादमयूर्वसकृततेकूतसाक्षयि ॥ ॥ ॐ आर्षश्रीरामायणे अयोध्याकाण्डे लक्ष्मणसं
वादो नाम सर्गः ॥ ४० ॥ ॥ निमन्त्रमात्ता नामेन सूमन्त्रः । तकात्म्य मत्स्यवैवनेहत्वाम्रहाः । कूक्ष मरवीत । दीना यद्रवतावाम । कुया श्रीमलहविक्रवः । तथा मानितिहत्वद्धार्थं मन्त्री तु
मर्हति । कथं नू स्वविहीना हवप्रियायां त्विधूर्मां वों । तवत्यातविधान । न पूत तत्कातृ सामिव । तूयांवायि नवद्दृष्ट्वा मीवं दृष्टुहतयसः । स्त्रीमाविही गैणदृष्ट्वा विदीर्य्यतव सायूनास्दं यदि

नगरे गच्छद्भ्यः शून्यामि मे नर्थ। स्तनाव । भायकनाहम वीतव सेगत। दूनयि निवसके त्वामनस्यवक्षूर्वे स्किमें। चिरुयस्यावसहृति निनाहानाभयजा॥ कनाः॥ भूर्लिनादाहियः॥ योने सूक्तत्वद्धिग्रवासन।
मथस्क मीनिनश्ची कं कूर्यः॥ सनगुनं कनं। शूर्हं चायियवत्स्या मिदवीं नवसूतामयानीगाङ्गो माउलकलें मंनायें माकथाञ्जि। मर्येवेवप्रियेंयेवकुवन्निवचनेगुद्रूं। कथमप्रियमवाहं कुर्यो वृमिदेव
व॥। ममृत्तिप्रत्वमायन्नाओं ह्मी धूकूलवाहिन॥। कथंवाचत्वयाहानेकथंवश्चलिवाक्तिन॥। कविश्चलिवनयानि कयाविघ्नकनोतिनं। नथनयति वाषिश्चनानिसर्वातिनाघव। त्वत्कृतंहिमयाप्राप्तं ३१
थवर्यामनंमूर्ध। धर्म्मार्थसहितंवामवाङ्म॥ यनमर्संमन॥। प्रसीद स्वामिनग। ध्वं कविशुध्यनकन॥। ओं हापियपिवंवीन निवसत्वनवासिन॥। यविवर्या महं कत्वाप्याप्यामिघनमीनार्ग। नव
गुरुघनं मूर्द्धा कनिष्ठामिवमवसन। भूयाश्चौ नक्षार्दवासत्यमववगाम्बं। नन्कार्येग्रवं धूवामयाप्याश्चात्वयाविना। राजधानीं मङ्खुस्य सथाद्र॥ स्कनकर्म्मला। ओं महिमहयावीवव
सक्षावनवासिन॥। यविवर्याकनिष्ठक्षियनमान्गतिं प्रति। वनवासकृयप्राप्य ममेवहिमप्राय॥। यदनंननं थनेवत्वावडुयंपूनीमिक॥। यन्हूं तहिवर्षाणि महिनस्यत्वयावन। कृत
हतानियाद्यक्तिंनं नवगुविवयर्यश्च। हक्तिवत्सलतनिष्ठत्वं यिकपूरुनगयथा। हृष्यंतकेक्तिर्ग। क्तिषीनत्वंमीलकुमहंति। यदिमयावमानस्यवचनंनकविष्यसि। संतप्राप्यगवत्वामिन
योव्यामित्वयाविना। एवंवक्तविधंदीनेविलपके धून॥ धून॥। हत्यानूकम्पीकाकुत्स्थं ओं देवचनमब्रवीत्। नानामियवमीरकिंमपिनंधर्म्मवत्सल। नन्द्रयापिमदर्थं त्वंप्रवयामि धूनीमिक॥॥

नगनीर्गवद्धस्तासाजननीमययवीयसी। केकयीयसुयीगच्छ स्यक्तनामावनंगक॥ यत्निहुष्ठाहिसादवीवनर्वसंगतमयि। राजानेनाहितंकनमिथ्यावादीति मर्त्यके। नममयस्वम॥ कामायदव्यामृयवीय
सी। हवनाइ स्त्रिशु स्क्रीहं धूतनाभ्रमयागूर्ग। ममप्रियार्थनाङ्गश्च मिवर्त्स्वधूनींवृज। संदिष्टास्त्रियान थ्याक्काम्नु याङ्कथामदा॥ ॥ओं तार्यतीनामायनहूयाश्चाकानकु सूमनुखलाघानामसर्गः॥३०॥
ओं सूक्ताववचनं सूर्गंलाकुयिन्त्वायून॥ धून॥ गुहंवचनमब्रवीत्। नामाहर्तुमदव वीनाजधा॥ कत्वागमिष्यामि न्ये आवश्कीनमानय। गत॥ कीयं राजपूनागुह॥ दीनमूयाहुनेगलस्कन्धा त्मनत्वेवनामप्
क नकोयवा॥ दीर्घयतगुजीवीनीजवामयुस धारिनीलीं। भूनोककामासूषीवकोजानवीनामसस्कलो। नगानगाममतिसूरव॥ धूआसविकमूलमीं। नाघव॥ ययोमार्गमास्कित॥ सहलस्करी॥ नायरी
वूकमाहिव्यनामागुरुमूवावह। भूयमायाधनकायर्तनेजनयदंतथा। कार्येस्कन्दहवाभ्रहिसवाव जिममवेवनजागनस्नेममनूक्षाघागुहमिश्र्केकूनन्दनू॥ जगामाधवप्रविलपेसनार्ये॥ सह
लक्ष्मणः॥ सगुह दृष्ट्वा गगनीश नाव मिस्वाकूनदन॥। सविनंतिनीपूर्ग गालस्कनीवाक्षमब्रवीत्। भावाहलेनन वाघ स्तिनां नावमि मीनु नीमसी नौचानायघयगोनि॥ यविनस्यनयास्विनीं। सलाउ॥ त
सनंकूर्लहंनमवगजिकूलयन। भूनाथुमेथिलीं पूर्ध्वमानूनाहासनानात॥। भूनूनाहसनंजस्वीस्वयंलस्कनपूर्वजः॥। भूमज्ञासमूमनुंच सामावर्य वनकागुरुं। भूस्कायनावें काकुत्स्थ॥ सममृ
यनमाविके। मूंघमों हद मावें त्वंघवीयानंनयस्वन॥। तनस्त्रोभाकयो वीवीनावयामासनाविक॥। प्रविनायां गमानाविघाननयोनामलस्कनो। वानयस्कोगुह स्कीनोवीयुग वाककिङ्कवो।

नाविकेर्द्दुतिकासानोध्कर्णधारवती दृढाम् । सुमहद्धङ्गा विजगाहे गाम सलिलम् अथ गाम् प्रध्वंसमनुप्राप्य हागीनथ्यमथयनोमवेदहीपीजलिर्दुत्वा मयागंगमथब्रवीत् । पुत्रादशरथस्यायं महात्मा
जस्य धीमतः । निदेशं पालयत्वेनं गङ्गे त्वदभिरक्षितः । चतुर्द्दश हि वर्षाणि समग्राण्युष्य कानने । ह्लातासह मयाचैव प्रत्यागमिष्यतिः पूर्णीकृतमर्थं विसृष्टः । गङ्गे मनयून्तागता । यक्ष्ये प्रमुदि
तागंगे सर्व्वकामसमृद्धये । त्वं हि त्रिपथगा देवि ब्रह्मलोकं समीक्षसे । भार्याचोदधिराजस्य लोकेस्मिन् संप्रदृश्यसे । सा त्वां देवि नमस्यामि प्रशंसामि च शोभने । प्राप्तराज्ये नरव्याघ्रे शिवेन पुनरागते
पुनस्त्वया । गवां शतसहस्राणि वस्त्राण्यन्नं च पेशलम् । ब्राह्मणेभ्यः प्रदास्यामि तव प्रियचिकीर्षया । सुराघटसहस्रेण मांसभूतोदनेन च । यक्ष्ये त्वां प्रीयतां देवि पुरीं पुनरुपागता । यानि त्वत्तीरवासीनि ज५२
नाशानि वाहृ वीर्यप्रदलिता । गृहीत्वा राजपुत्राणां यदि यान सूयागमः । तीरं तु समनुप्राप्य नावं हित्वा नरर्षभः । प्रतिष्ठत सह भ्रात्रा वैदेह्या च परन्तपः । अथाब्रवीन्महाबाहुः सुमित्रानन्दवर्द्धनं । भव संरक्षणार्थाय सजने विजने
पि वा । अवश्यं रक्षणं कार्यमदृष्टे विजने वने । अग्रतो गच्छ सौमित्रे सीता त्वामनुगच्छतु । पृष्ठतोहं गमिष्यामि त्वां च सीतां च पालयन् । अन्योन्यस्येह नो रक्षा कर्त्तव्या पुरुषर्षभ । नहि तावदतिक्रान्ता सुकरा काचन क्रिया । अद्य दुःखं तु वैदेही वनवासस्य वेत्स्यति । प्रणष्टजनसंबाधं क्षेत्रारामविवर्जितम् । विषमं च प्रपातं च वनमद्य प्रवेक्ष्यति । श्रुत्वा रामस्य वचनं प्रतस्थे लक्ष्मणोग्रतः । अनन्तरं च सीताया राघवो रघुनन्दनः । गत्वा तु गङ्गापारं त्व वत्सदेशं जगाम ह । समृद्धशस्यसम्बाधं नानाविहगसंकुलं । स तत्र मधुमत्तानां नानामृगगणान्वितम् । गुल्मवल्लीसमाकीर्णं चक्रतुः

कायन्ति मे । दर्शयामास राघवः काकुत्स्थो वैदेह्याः ... ते तत्र हत्वा चतुरो महामृगान् वराहमृश्यं पृषतं महारुरुं । आदाय मेध्यं त्वरितं बुभुक्षितौ वासाय काले ययतुर्वनस्पतिं । ॐ हे वायनि
वत्साम भयविभ्रान्ता हि मे पितसी । तस्याः पुत्रस्य विलीनां यत्र वासितमानुषं । स्थापयुक्षविलीनां प्रमवनीयसल्लक्षणाः । यमानि समवलानि सुगन्धी निवृक्षविषाद । त्यागिनी त्वासीता येथी सर्व्वं समप्यानयत
आदोयमानिवेदहास्यमाहीविवाहवत । तयस्कृहिति नाडीहि मृगालसेश्वानआवनी । कुत्वाचयत्र धमागम्या ताग्री वासम कल्पयत । उदेन सार्द्धं तु गतः सुमेधा नामर्नतरकैयसहितनितीश्च । सुश्रय
कर्याद्विनिहत्य देहवि सुभाचवाथ्ये यथिमेनयस्तीः ॥ ॥ॐ इत्यार्षे श्रीरामायणे अयोध्याकाण्डे गङ्गोत्तरणं नाम सर्गः ॥ ५२ ॥ ॥ स तं वृक्षं समासाद्य संध्यामन्वास्य पश्चिमां । रामो रमयतां श्रेष्ठ इति
होवाच लक्ष्मणम् । अद्येयं प्रथमा रात्रिर्निर्गता जनान्तिकात् । यतीनामिव पुष्पाणां सूजनं तुविप्रतिः । मान्यरीत्यसुमाता न समायाथ सुजनैर्विना । सुमन्त्रुद्यापि नहि नरहितं ना कैथितुमर्हसि । सुश्रु
ब्रह्मणि क्षिप्तस्य सीतायानकृतं मया । त्वया च सततं कार्यं मयमहं न लक्ष्मण । कुत्र त्यागं सौमित्रे ममानुतनयतं कृत्स्नं । महत्त्वाविदूरं तं तयर्नवचयान्मनः । धूमं कालस्मृतमृगा(?)तु । नयी
कथास्मनः । सद्रूपसूक्ष्महेतुरिव नतथावस्त्रादनम्यागतः । तसंविशकाकुत्स्थो मन्दिनयनाचितः । वक्ष्यसुदक्षक्थं नाहो सौमित्र्या संलक्ष्मणं । तु न मद्य महाराजः सुर्व्वं स्वपिति सलक्ष्मणः । सकामयासु
यमानः कैकेयाः पितुः । वाक्यं त्वारन्तं सा च कैकेयी गते न वापि यः । आगतः त्यक्तप्राणो हि वैयायाद दयति । अनाथश्च वृद्धश्च मया चैव विनाकृतः । नावं किं प्यति कामात्मा(?)न

स्रुत्वा बालेऽपि कृतपयोधिः कामयत्र लभत दृष्टं दीर्घसंगागमे। कामतवार्थधर्म्मा लोगमी याति जिमम जिक्षकाहं विद्यां क्रिया धर्म्मं प्रमदावनमागतमथ्यत्र दक्षावही पूर्ते धियधह्ला नुवर्त्तिनी। सूरवी वयसम्
ध्यं शुरुतनक्षत्र कयी सूनहामूदित इष्का नलाम का हासूनयाधि वाउवत म हि सर्व्वस्य नासूत्य मूरवमयम हाव थ धर्मागत वयसा गीनम थिवाम न्वमाहि नय विलयश्व धर्म्मा ल्ये कामम वा नुवर्त्तिनी।
सहत्र्हम हत्प्राप्ति वोजादतव। थम यथा। मर्यादत नथास्त्य मम प्रवाजनायर्वै। नृपतर्के यीनकानाज्ञा यहत्वनय थवा। मूयिनामाश्केकयीसी स्थासी हात्य नर्व्विका। प्रवा। धनन मध्यमा ल्केोजी
त्थीम द्विनाकुर्णा। मत्य स्थाहि मीं निरीसूमित्रीवामयशीनीं। ह्ममूही र्य्यपूनर्गगां मूमित्रानन्दवर्द्धन। हुदानीमधिक्स्वान्वमया आंगकुलस्वत। सूरुमेकागमिथ्याभि सी क्रया सद्रिभावर्ने। शूनाथया ६३
सुममाता गतान्नाना। या हवानघ। कृपा चाभिन्न नीसा चक्केकयीयाय निध्रया। सूणीस्यसामद्ध माव्कीन ल्यो यातयिश्च कि। ह्ला तियधश्चयमन्या मूस्थियः पूर्ते थिया जिमा भजननामम सो मित्रनदर्श
स मम्यक्षिनी। मयाहि शिवपूजनदुःखवर्द्धिनान्चा। क्षिपमूक्रम कीनन्या हृत्तकाम धिग सुमां। निमूसाहं निरानन्दं निर्व्वीर्य्यमभिनेदनं। मास्मसीमक्तिनी का चिक्र नयत्सुत मीदमी। सोमित्र्यं
हमैवाया जानतः। लाकायदुःखितः। मन्यपति विशिष्यसा मल्लाल स्नन सा निक्ता। यस्याकृत्रीय गकार्थं उकयादमनर्दनं। यावदक प्रकथ्य यावदयमूरवमयि। मावदा अविमा कार्थं
उक याद मनर्द्दन। त्वं सामीदलाम्धा यान क्विं विदूयकर्द्वन। धूर्तकि मयूता याम न्या कार्य्यम विद्धम। अन्यहा आहिमे माना दुःखानामवकवर्तं। हामिनीतुसोमित्र दुःखानामितिमम

६२
किमस्य वनाम यिन क्षाइं वलेकर्तुं वसूधनां। यत्तकृन्नामनूया प्यानल्य वीर्य्यमकावर्ता। सूधर्म्मप्राप्ति हीमाहं लाक वादहयनत्व। नक्षायियस्त हदुःखमिदं स्वयाहमायथा। एनदद ध्यायु कनूदीविलथ
वहू नाघ वः सूमादत्वे र्य्यमूनूय सत्वनैवाघा विक्कवः विलायविकन। धैर्यं सकाद्विपमिवानलं। समुद्रमिव निर्व्वाणमिशिहावाचलस्त्र हामम हामसत्वेन लोकस्य वनुमानं तु मर्ह सि। त्वद्विषानहि लोच कि
कृष्ण यियसनागमे। हुंदतुनैवधसननम वगन्धामाहं यशा। सूनूना नाद्वियो वाधीमन्याम सूद याग मे। न त्वद्दुःखकृनैषाज्ञान कश्चिद नूमन्याम। एयमल्यस्य सर्वः प्राशाननयस जनमत्वाम याहि
यगलाका यसनयितु नादनः नवान्दयमवाहं मन्यनयसनागमे। सूया धाम सायूनी हृष्टान्नमयमूहः खिता। नवाउमिस्त्र याही मा हीनवस्तुवल र्व्वश्री। नेम द्वीय यिकंम न्यकृद्धं कन्यविदः
विदु। मीना विषादयस्यवं विलपमीवाघव। नस्माश्रीकृन्यान्मा नमा न्मे वार्यमातु वः। लोकयैकनिमयं हि सीदं नहक्रतवृद्धयः। नवक्रमवेसीदन्न् दक्षाहं मेथिलीं नथा। नाचि वै जीवि
तुं नकीमशिलान्मत्याविवाहृतो। नमानम्चवरूदृत्र सूमित्रीवायवैनय सूया हतुकूभिक्षा मिस्वर्गवापित्वयाविनो। सनस्तनस्यार्थवद्द्र्कंनवचा निनस्यानामावनमान्नि कः। यतुः सनूष्टः
लाक यविनयस्त स्वर्त्तगमास्मि लाकादि किनाघवाउवीत॥ ॥इति श्रीरामायणे भूयाधाकाण्डे नाम विलापो नाम सर्गः ॥०॥ ॥श्रीउ नाति मूर्छितास क स्मिन्चन्यम धयादय तु र्य
यसधामूर्छित सूर्य्यस्य स्तं क्रि नं। यन्तु रागविथी धूर्स्थांय मूनाय जियशक। जन्मकृदन मूर्द्धित विमगतस्त मह दर्श। कहू मिनागम्ननि विद्धं सांभ्याश्रिमनावमानं। यहकृक्षू सूर्यान्य व्यक्
६१

मृत्युतत्तयत्विन॥शिवनाथयथागच्छन्त्यर्थं श्रुविविधाद्भुमान्। निवृत्तिर्किंचिद्यदिर्ह्यनामालस्कन्नमब्रवीत्॥ श्रुआगमहिता॥ यस्यसोमित्रधूममूच्छितं। अनुर्नहंगवत॥ कतुस्मन्त्यसंनिहितामुनि
॥प्राप्य॥ स्म संगमेनूर्नंतंगमसमूनया॥ शिव॥ ॥ यगंहिमहानआर्द्धांतिमेघहृतजा॥ स्वनद॥ यानू॥ भगा॥ निवस्त्वर्थंतग्नानिवनर्केर्ब्बुन। हवद्धाजा॥ मर्वेमद्दस्य स्कंविविधाद्भुमा॥ यतवेकुमतागर्ब्बे
संवमानयिवाकनं। हवद्धाजा॥ मंयूनमामसद्दूत्यमकर्यिगा॥ ततदा॥ मयदंप्राप्तनाम॥ सोमितिनामद। ताम यन्मूस्वमूर्कार्द्धे विवलमृगया॥ किं॥ आगयया॥ महावेमूनर्दतनकीकृया।
तस्को नाम॥ सहृसीमान्मीतयासस्कं॥ तनय। श्रौविदिस्नागनीयायिता॥ तनरोनामसस्कं॥ ली॥ पुर्वेलयामासमूनि॥ स्वमा॥ मयदंगदा। कृगाग्रिहात्माासीनेमहाराग॥ कृगाजालि॥ नाम॥ सोमितिनामा ७४
हृसीनयासावाद्य॥ आमृगयक्तिहिनासीनेहृथामूनितिनवद्य। नाममागमयर्च्चासाद्यनंदनगंमूनिं। निवदयतवास्मानगंस्मिलस्कतयूर्ज्जेर्द्धं॥ पूजांदगवथस्यावी॥ मगजोनामलसर्व्वं। ली।
ताय्यामभयंवेदहीकस्यालीजनकामजा। श्रूवृत्तगत्कामामवनयावनमूयागता। पितापुत्रावमानेमांसोमितिश्रान्नजा॥ श्रियश॥ स्वयमस्वगमजाताववमेवहृदवृता॥ पितावियूज्ञागवन्
पुवझामिमहावने। धर्म्मभवचयिश्यामिव ययमूलहृलातनभ॥ तत्यतद्भवनेकृत्यायाजयूतस्यधीमत॥ ॥ उपानयज्ञधर्म्मात्मा साधर्म्मानूदकृतथ। स्वतिगरुच्चकाकृकृमासनादकनेच॥
न्यमनुयतमूलेश्रद्धसेश्रद्धलहजन॥ ॥ पितृजवनी पूजामूयविश्वसनायवं। हवद्धाजावबोधायं। धर्म्मयुक्तमिदंप्रितं। दिस्या सिकृतलीनाममममा॥ ममूयागत॥ ॥ हंतहितंमयायिता

अयर्द्धत॥ नयस्मिन्नूनुमावासीयध्यामियूनूसर्वक्रतु स्वर्थं कृतुषसीयदृं सूर्वंयनतवमवं। सवीत॥ तासनेताउ॥ ससर्व्वमहिकूलयन्। निमीतुस्नदनेसर्व्वगृही याववक्रमूलमं। ततावतस्यमरस्यालताने वेव
वीर्य्यवान॥ एककाललस्कहृदिश्चाससीनाया॥ मूस्वमासनं। वृद्धालताहि स्थितेश्रमूसंवद्धेह तंतनं॥ एरवृक्ककाष्ठसीघानंसोमितिस्वियूलीप्रर्वं। हत्तवमदोनवस्थंवाघवायमहात्मने। हस्कं॥ तालहृताय॥ गांसमवताव
य॥ तत॥ शियमिवादृष्टांनामादातनयि॥ प्रियी॥ ॥ यस्वनजामूजम्यसमानाहयतप्रवं। या॥ वेदुतत्ववेदस्नावसमानवणानिया। पूर्वास्मितयिंवेवनामप्रकमहायथे॥ आगाउसीनीघाटता॥ तपथविर
उसौ। ततेश्वयथयदुद्वौ तौ तद्यादततथालजी। कालिंदीमध्यगासीता। नौनदीमिदमब्रवीत्॥ स्वस्तिदविनमामिर्व्वा यातययवगंयतिश्वोक्त्वा। सहस्रंतमूवाहावनतमनय। पून॥ यत्यानमनामयूवीमिका
कृयालिगं। कालिंदीमथताभवमवनीर्यकृतांजलि॥ मीवमवारिसंघाका॥ लिंलववववाहिनी। मत॥ पूवनाउजसनांगवसावर्तसंकूली। वर्तेर्वकृवकेधसंगंवूर्यमूलीनदीं। गतीर्श्च॥ यामम कृत्स्नयाता॥
सूमहद्धनं। यमूनावनमिश्यवस्थामृहस्थिमनाहवं। तममीस्यवनेवमंनानातकूलिनादिर्न। दद्धुत॥ यस्मगद्धनेतजागवकृयूघनं। हत्स्क्ष॥ कृयालीयीमतालयूषवाक्षिय। श्रूविधास्त॥ यूनर्द्धमूकनेतेसि
तवता॥ ततश्च हृदृष्टमसानंगतावेसंकथमूस्वं। यमेय॥ धमासद्ध॥ लीतसौहविनकृदे। य॥ धंतमूयस्मायस्वैदहीवाक्षमब्रवीत्। नमास्मुममहावृत। निवायाहवदर्तय। यदृङ्गमूनवयूयमीतमूवनं
सूर्वं। भूयाश्चांसर्व्वसामश्रांप्रविलेमयूत॥ यूनांनं। कीतर्यांयेवय। श्रमसर्वाग्रजांकिवीधवान्॥ ॥ हृतजलिकृतासीतानमूवाचवनस्पतिं। कागमातलतागव्यातनगोनामलकृते। एवसन्नसलिलीदूनाहृद्

हुर्यमूलीनदीं । श्रूवसाक्षनकःसीमांमीत्र । निष्ठन्यत्रैनयःमदयिमँचविधेयँच नामासस्मृतमववीता सीमामादायमकृत्व मयशाहवनृ [illegible] स्वमाहुगमिश्चामिसायू [illegible] नीववत्स [illegible] कियार्म्म [illegible]
वहुवजनकालमजा । ममकथार्मध्वगमाग्रहनागवधूमिवा ॥ एकैकं यादयगुसूलमाम्नायूपयतालिनीं । शृद्ध पूर्व्व [illegible] नामयघकुजानमी [illegible] माउँ नमागस्वाथानश्री नामलश्रुतिः । यत्रहुर्म्म [illegible] धामान्मालि
लार्थमूयागमान् । नतह्स्वामूगंकां श्रिद्रुविङ्गयँयमूनानट । धान्नामालाश्चवेदेहीं नामस्कृतैवचश्चितें । विग [illegible] नयूथनाछिमैं । मनि [illegible] संमगं निवासमाजग्मूवदीनद [illegible] ॥ ॥ ॐ इति श्री
नामाय [illegible] श्रूयोध्याकाण्डे यमूनामीत्र निवासानामसर्गः ॥ ३७ ॥ ॥ अथनात्रीयमीता योमर्द्ध [illegible] मानमें नामकृ [illegible] यामासल [illegible] नतां [illegible] मित्र [illegible] वनमीवन । सैवविश्वामाहस्या ३६
यदिलस्कृतमत्र्यस । घमूकः समूर्ध्वशामास्कृतय निवाधकः ॥ उद्धी निडोक्रमँचैव नत्थेवाधयवि [illegible] मं । म [illegible] यसद्दिनाः स्न [illegible] [illegible] डयाय [illegible] सन्धौ न [illegible] वा [illegible] यन [illegible] वितकूटस्य
यन्त्रानमासाद्यकन निष्ठयः । नतवासंसमूद्दिश्य यन्तःनीघ्रयनात्कमाः ॥ श्रूचित्रनसमासाद्य नन्दकृत्त्वियायदर्यं । चित्रकूटवनेवाम [illegible] तायन्धामूँ यूथिनीसाम मा [illegible] । मिनिवा
स्यायविशालाश्रितःयदीकानिवक्तिवुकान् । कन्निकानववनेवा यियन्धमदाकिनीमनू । धीयिनँनू चित्रः यूथीः सदाधि ॥ कौवनेचिव [illegible] यनसां श्रित्रूकां कूथा । [illegible] वनथमरूलं
यादयान् । नक्षमतरू हेले मवजीचिरुं नंनूम श्रमम । श्रूशाख्व गौयमं याकाश्रितकूट मिमँवयँ । यन्धाला यमालानिल स्नमाना निल [illegible] कूट मिन्नमधूनिमधूयेः [illegible] निदासूहकें

तेत्व्याम्र । श्रूत्येयकनःसमासाद्यप्रतिपल्यात्सिवाद्यत्र । कौमल्यासावमाना विज्ञाथासन्नल्त्याया । मस्त्वाकक्षर्षिमात्राज्ञानवाद्यःयवृद्धल्याया । नवियिमावममत्रा । देः पूनवार मननव । दववनूतनीयस्कृ पिनान ॐ नियावदीजय
विष्ठगूववकथाहवनावबनाश्रम । योवनाशूमवाधल्तं यूजयथननाधियै । स्वयाउग्रूममाना मीन । नावकिंयथनृयः । मस्तहदाद स्निन्थ कर्तुमियधिनिश्चये । सर्म्मारूपूसर्व्वास्त्ववले थां ॐ नियावदीजहवनं यथिवी
यानीपूर्तिगनकक्षासून । एवमादिवशासम्र्यग्रिकूवनवमीसेनूय । वाघश्च । नोयवृद्धास्मामूमावाध्रूनिकस्तः ॥ ॐ श्रीदाः ययीनजुसोमिमि विदमडवीता कनाय मयमा । धेनमाञ्जूयूजा श्चिवासितः । मयानावहव कि
श्चिल्कैकथाश्रूयियँ हनं । श्रार्यस्याय पवित्या । नक्षाव दीनायस्कृथ । यद्दिप्रवृ ज्ञितामा । मःक्कैकथाः श्रियकावहीता । ववदानमिमिरूँ वानकाँ साधू सर्वथा । विनृद्धधर्म्मकीर्त्तिर्यो नाहृदव्द्विनाधवा । श्रूयतेस्यः
हनंमन्यस लूतस्य विवासनं । ममनावत्रनाध्याय पिरुश्रद्धाश्लिकथ्रन । पितामाना सूश्रद्धापितामावं धूर्तुनृथम । लोकपियममूँत्यक्का लाकनाथँ च साधवं । नाज्ञाकि मिवकल्याणं हवनादसि कीर्त्ति । सूमकुरव
नल्लैवाश्चस्कृ नाजसं निध्मे । श्रामर्थयसिव श्लि । विदद्य नामास्वनिलिया । कमामारूपूसर्व्वासूसममकामस्य यागमम । नाश्चाकिमान मूस्थवलैश्चत्याविदं नमी । ज्ञानकीर्त्ति विनिन्धस्य वाश्चमन्दस्वनानृय । त
नायस्य चित्रकूवनीक्रमानासमँनकः ॥ शृद्दपूर्व्वयसमना नाजयूनीयननिनी । यर्यात्कवदनोदीनामेवसौकि चिवडवीताद्दीदृ मानाह्लतीनं । मूस्वनयचित्रुथता । मूमायकवलेवाश्री मीनिवहलमवश्रूय ।
सवायिनाभाग्ध्रूमूस्वः कनाँजलिर्ग्नमामयादीनव । लोकविङ्गलमन त्थेवसीतानूदनीचवालानृदवयादीतिवसानमस्य नि ॥ ॥ ॐ इति श्री [illegible] नामायनल्याथ्याकाण्डे नामसंदश्याने नामसर्गः ॥ ३८ ॥ ॥

कुणिकवानसंदनसूमक्षमलिमकृमी। कुछिनाघंयूननिकिमाञावचनमववीतमसयनद्ववनंकुल्वासूमक्षावाघविकूवमकथआमासतथाचिनामखलाकविलिमंअठा॥वध्लाउगोवाञं श्रीनकन्कुल्मप्रतिनोग
नामूल्यर्यनीवीवीप्रयानाहिमूखंवगतो। नमामममनिहत्सयकुवगावाघविकूवाअनामभवानूयनमेकाकुयमानाविप्नूकुक्षधठहायाञऋयूयायाकन्॥कत्लाहमजलिसंगत्वप्रोगवनकियावाञ॥ज्ञकाम॥यूमनागत
॥ऽउकृनमहकुलूंवगर्तवदिवर्मक्षिदमाञगायदिआमामासयूनघोद्धयदितनि। निघमयूननयाद्ध नामघसनकर्मिलिमाक्षपूयिघक॥थविसूनान॥मवकुल्वकोकुनाममवायाप॥मविनप्रासमेनयूक
लूघादका॥प्रमूनिनकूमानसमाञानयक्षिश्चाहिगमत्विघ॥प्रानेकनानविमितानविघवनूर्मगन्धिज्ञाअयूासी॥वामनोकामं निश्कृऊन्निवकानने। जनज्ञायायिसलानिक्षमज्ञायायिसर्खन॥ग्रासमेकिहि
नानीवनिछ्ठियतानिनूयाहुम। यूनवाञ्चवननाञग्योनज्ञानयदनथा। नेहघआयहं कैविज्ञानलोकविमयूतं। यूयाथांवविगतंमाँगहृयक्षिसमवकृत॥योवाञ॥वोहिसेनयाविनामामयूयागनी
लानूनंसघवामक्षनीमकुँहयिवाकवन्। नामिज्ञानीनमिज्ञानानीनायामीनकृनययवा। सूहमाछ्नयाकिविधि। लेमयूवलनयथ। यानाउवाल्सूयूमा॥यलानायवनद्भमामयविधविनालक्षनिनानूदिन
ख्वनमादिनागनिगानवनिसूमहाविर्वयद्धामर्मश्चला। नामयवाकुमाकुनयूवीनमनविनाजन। कुँयवमादिकनूनसूमन्नवयनंनूयक्षा॥कुलोवायनद्मादीमानावाघविकृवयागिता। मिश्चयवामलिक
यार्वविमनकथंमञा। नमक्षिनंविमूरनधर्मक्षिकृनूहिसहा। कनाहमाहिंन॥यायायमयासहमक्षिहि॥ श्रीमंगविमूटनसहसासाहु संहं। टविनचंनवानमनामनामिनताञसोम

यावुनावदयग॥प्राप्तंनक्षिप्रवासमनाउकुँयानीमयिसूनाउनामीगलानिवर्लयनलिगक्षमूनमसाञ्जीविद्धदेवमादिनगनामनकालाचीवांवतवरविद्यानिमामवनयमानायाक्षिसंनामेवदनंय। सिंहस्कृप्र
महावाक्य॥श्रमीलक्ष्मनसूर्यजयविजीवनिसाध्यिमंयत्पेयंमहसीनया। युर्जुनूकाल्ववदवंवायूयमद्लक्ष्णंयविज्ञामेमयन्पामियासामियमसादनं। समकुयदिनं किविश्चयायूर्वेजनंगिर्यं। जनघ्याय
यनंनामंप्रानाहिवनयकिमीं। नामवञासमलिनवायानोकार्मिमानिलि। सूनहंयमममञ्जुधामहं। लोकमागव। कुँयूयूतवियोगानिहिउउखिकनगतायूयासेघाथायंमया। सूनसूमव॥ लोकसाग
न॥ हानामहानामानूऊहविंदछियानिवम। नमीज्ञानीथदूश्वाल्सूयमानसमनाथव। कावाक्षिद्भ। खिजनयोमयाकृ॥खिनकर्मनारआउमकूगक्षिानमवञ्जूमिमायवं। श्रीवयाज्ञानकूनंमहाय
सविलसु। लोकायहुनमनयनसा। गगानूकल्प॥सहसेवमूर्तिम॥पयाकहसीयथिनानूयासमनाउकुँकिविलयनियाथियविमूरकृतवकूनंयमिमंयूनद्वियर्था। हृनकवमकिलोकदूयवमसाकूनूग
नश्रीविलनायनाममाना॥ ॥कुँयाध्यंक्षिनामायनोश्रूयाज्ञाकाउदविथयवनायानामसर्ग॥४०॥ ॥साहुसूमाणसवेगनमवखवघावला। विलनायावूलादविकोनल्याघलिनाकोन
नयमामयिनमाअयवनाम॥सनक्षम॥सूमकुनहिनामवविनाज्ञीविवूमूमहनघाजअयथसाधूनयमामयिकानन। अयमानंनयस्याउगमिच्चामियमकुयंवाथ्याययबुद्धयावावाजनम्सज्ञान
या। वाकमान्यमयवर्यासूनफ्रोजलिमवीणयकूमहंसिकयालिनेकूयूनवियागदा। दवायियसूर्यनामार्वंयमदविनिर्द्धसमनेश्रूलोलयूयगज्ञायादिघश्रियवनवनपवस्मनियमनेलाकमडे
यकर्मनिर्क्रिनविदुमयिवनसीनाहर्मवाकृयया॥या। यंबीखलयमंवासंमहनामननंयमि। नायादंयंविमार्दवासमुम्रमयिलतय। वमय। प्रविमावासादंदश्चा॥प्रतिहाजिम। नगनायव

मनयथं नमगस्मयघस्यूया। विज्ञनयितथ्यनत्यमनमगद विमाउवः ममगहनमस्यूयमयाक्षायवनं वनी। नामयन्दु अधीनासायहायन्दु मसायथासवेदहीसद्व नामनपूर्णवन्दु निहाननाः। अङ्गुलीविदनि
यीर्त्तिनसीः। ला चित्तुमईसिःनद्मनं द्वदयेनस्याम्बुदधीनंयजीविनं। अथाध्यायिरुवंरुस्या नामनवहिमादवी। यथियस्तुनिवेदहो। आमांश्वनगनालिव। नामैकमललपत्राक्षैः सर्वासिसविनद्यथा। नामल
क्षयार्म्म। ध्वसीनावाउनिनम्नूया। विपुलासवआम्र ध्वयम्भाही निवसूपिनी। नवायं मसंनयं कुःस्वेनयानयनवा। हानिंनकृनिवेदक्षाःस्वहावयहवंवयूश्व सदन्नमनपत्रस्ययूर्वन्दु समयूनिव
दनंमूकूमार्याध्वेवेदज्ञानविलूयन। पूहयानकृ कनसपरवीनउसवर्ज्जीला। नयेवनकउकु स्याश्रुवलोयप्रवर्ज्जसी। नूयूनाहिंडियवनसवनेनक्तुनिमे चिली। सिद्वनउंवनय श्रृ याध्वीवायियमेचि ५०
ली। माने यादिज्ञनयाक्षीहर्षुद्वीर्य्यवलाश्रया। नयेववामःपूतस्फलेक्षदाक्ष पिवीर्य्यवान्। नयेवादानवपूषीनङ्गानिमधिनकृनि। यनस्यवेचिपहिनंद्वूणी। लोकीयदनीता। नचितुन्नेवमाउथ्यः
नोनयस्य मनवावन। मनुज्मयान्वयादविपवस्थवडिनवनामझ्ड्डुंदहिव विदेन श्री स्याहिंसाक्व यूथास्यति। विज्ञाय। लोकंयचिउपमानसामद्रविकल्पक्रयसियवस्थिनः। वनुवनामूलहला
सानः सनम्नूनामहालक्षकूनूनमद्रुहयभनयस्मूमकुंनाडिनार्थवादिमानि वार्य्यमानानायि सनीस्नूनियाः। नचिपुलायाद्विवनामदूःखिवानं गतुयज्ञी पियपूतलीलसौ॥ ॥ॐ स्यार्यधीनामायालेश्रू
यां श्वाका उकीनस्या ध्वमन्नंनामसर्गः॥१०॥ ॥विसर्ज्जिनगनसूनसूमकुयाथिवालज्ञा। पृथ्वाव्वसन्नीवाशानमूक्ता पायहनदुःखिनाः क्षीनस्यान्वसयामासनयन। लोकलालसीनन

तनेयमार्ज्जन्कीउीनयक्रीदमव्रवीगायदिदं ति पूलाकयथिननमद्वयनः मयूतनिर्व्वासनाहलयनस्नूमिनिलकृथ। काडिनाम ष्ठियं यूउं यउदनयकामिनां। पुनिकरूयसनीमध्वयोवनाक्षाहिमवनं। यदियावन्धदान
यः प्रियायेवयदः पुहा। किमर्थमयमिज्ञानं नामस्यायारिभवने। अनूनायदिवाहीनः यवाजयसिमसूनं। पुनिज्ञायाहिषिक्ता। स्मिन्वह्ना मिनूयमत्तुनः स्नुसे। कामवन्थ त्वाद्वदः सन्नतिनाहिवयः। यः। अत
यं विवार्य्यनकृथाप्रनूनवानसि। ॐ ज्ञाकूनामियेवंनः सूयवाशु पिनः शक्तिनी। नतत्रयायोवनाउंपु निज्ञायानूनं हनं। श्लोकश्रायंमहानाउयोवानः यथिनः शक्तिनी। सतीयूनातुलयनाखयेगीनुः स्वयंतु
वा। अश्वमधसेहृसंवसहीकुलेयाधनं। अश्वमधसहस्राद्वि सत्यमवाकित्रियामं। जीविननायनः सहीतुविनकृस्त्रिसाधवः। नसत्याद्विथानस्वय म्लसत्यमवयनेयदं। सत्यमवेयर्वलाकन मानीस्वर्गकी नित्रीं
सत्यं विषूद्धक्नसहीसत्ययज्ञः। युनिचित्रनाः। नाकि सत्यात्यनाधर्म्म स्तुपूलाकयूविधानं। सत्यात्समरुवज्ञामः। सत्याद्वक्षनाम्हनं। अस्याद्गिनयं। यथीहूमहन्नानिज डिनं। सत्यनार्कः यनयनि सत्यनाः
यायननहीः। सत्यनाम्हनमूकूनं सत्यसाकः युनिचित्रनः। ओनंकृनिदं पथिवीसत्यनेवनूनायूनः। सत्यने कनयान्त्राका त्यानि सत्यवनानवाः। नयानिनानन्नूनकाॐ ह्यकुउहानेनयि। सत्यप्रनिज्ञानूयनेनाः
ज्ञानः सत्यवादिनवादिनः। ऋतुरुंतिः सत्यवचनेः यक्ष्ठानसृयिनामहाक्षयनमाः। पूनूषयाष्पुनांक्षांत्रवगमिथ्यसि। ह्यावचकृथिनीमसङ्ग्निः यन्ठानोददनोवनः। अहिंसायैवसत्यंचयतधर्म्मः पुनिचिन
मनदिनंनक्तिनं सङ्गिः सत्यमूत्सादिनं च्याः। कर्म्मविनन्सामान्नायस्वयेवान्म विनयनः। सवाकिनेधः सूमनसाप्पुनिवाद्वेकृथेवन। धर्म्मयस्तुमनुष्याणांवाकिनेधः। समकूनः अचेदनानीमहाहानि मतुनूनी
नथायहा। नचक्कायोचिवेनं। अधयथाकोर्त्तिमआनूनौ। नेकर्ये तुरुहवानं। अल्लाकहविप्रनिः। अश्रुरुहयासमहनः। कर्म्मदाः। नाध्वनौसमाः। ॐ यंमयमूमहगोवक्नूहयाञ्चयाहना। पियायेवस्थदे

त्वामसमप्रवृत्तिमावर्ने । दिष्ट्यानयात्रिशुद्धगदाघवावधामिति । नक्षत्रदयिकेक याद्रूर्दं स्वयि धर्मिक । प्रयत्नु मिदं लोकयत्र न वलमे ४ ॥ एवं पदुर्बलः ४ ह्रस्व ४ क्रमोपसुमि वायन ॥ कृत्य कृति
यथालोक वलवत्क्षावसाधितं ४ ॥ शुक्रनयमानाविज्ञान सिद्धे विव महाद्धियाः ॥ समसूत्रवनक्षो यधर्मय ति मुद्दुर्बलः ४ ॥ शुक्र ४ स्वामी समस्त्र सुसमीपुञ्जावनेगत ४ ॥ क्रामसूत्रो नितिनं सीत्रमन द्रष्टु ४ नक्षुद्रियदुक्तं
नयक्ति स्वभूपूत नाः ४ क्रु द्वारुं वात गा ४ ॥ किंशुकमन्त्रामूयाले स्य वाऊन्य नृपयामिनो । यत्र स्वर्कहीमन्यूमा सहा । न पुष्पायुपू । अनुनीतानिमामेंन नक्षत्रावह विहृत्वे नमस्याया ४ पियाकिं यिद्धुत्वस्य नियुक्त
यूल ४ । न मदर्थं यिका मानर्त्वोयानुपश्चत्वयाम मम । वाङ्क्रिवृद्धिनेउनीयाहि निमिमीमायवाऽवीत ॥ माहृत्नमा नूनि क्षयियुक्तमहत्वर्तनकानुवलानावुवीरर्थे वृमन्ना । लोकमहोर्वे । काहि नामा सिद्धंश्च
याकृतत्वमिलमधिधा । स्यन्तक्षीयमूलतन्त्रविनयक्षयिजानकी । लोकमू पूजूस ४ सुवाकयमेल पूर्णस्वयंत्यमसुवे वात्स्मामीत ॥ लोकिमुतर्कं गदा नूनं हिममशा । अन्तर्विसुख्यद्रोघवत्तायात्र
यिक्ति नातुर्दं वस्य स्थमव हमवाचय । नयस्त्यहेत्वीन्यवश्यमानावी स्थमा । न्यर्वे हान्यवन्देनकेगताद्लात्स्तापसहनयमावलि कि मरत् न श्रृपूसमनय लिह सर्हे निया गकुवसमाधावा सत्यीय
तिर्क्षं नृपयालयुक्तम् । ॥ एवं नामहासावन मवनामीनतदप्रमुखाद्यय ऋिमा निहिता ॥ ॥ एवं स्याद्दीनामायलेमुक्षाअकाल्जकीनमा यालिकानामसर्गः ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ इत्यादतुन वकीनयविततत्काम
मुक्षितमा । सूत्रवाणेव नाम स्थयानिपूजनहायनतात्वयायम्नुमि सुकूश्चयिता । अथ नामम नुवृत्तम ४ उक्तमानीनमतृसा नामनिर्द्धि सर्यिकर्तने । नसज्ञानाति धर्मात्मा स्वप्त हायरिपूहितो । यागद्धकिस्वयं नो
मोक्षा मसं वकुलायन ४ ॥ क्षोमास्थिहक वाचा यथं नक्षत्रस्यत्र मा मास्य है । याक्षुयान ४ स्वयं सुक्ष्मामान नेशाहवस्तल ४ ॥ सर्हू तनमहं नामा स्त्रायामयविले मैन ४ ॥ नाक्षा महत्त्वुकल्प स्यजानकस्य महाम ५७

न ४ ॥ मूर्तामामनवयासिद्धिं वेदहां विकुयास्यह । मृत्यंकसुस्त्ववृक्षासालालिका यिन्दव अनि । मुधर्थं सूकसामासी नाममायमस्यदलं तीर्थ । अथ मूर्वानिय निमम्र सर्वत्रं सज्ञाकिर्वाशवान । यजिं स्य नूपन्नायाकं
नामवस्तं भूयिष्ठ ति । कथं हि मूजनूस्त्र सुक्रमाश्री मूर्खा यिमा । नीतमपूर्वचयसिद्धिवेदहा यमहिस्थाति । नवाययितृत्या स्मिं पनपक्ष्य मया नल । कथसाविज्ञावं न । नवेदहावितविधाति । सुक्त्वा स्त्राद्दुनिशुद्धा
निकथम नालियमेथिली । कथं वयायादह्यानिकनू निक्षा निरा अपन ल य नानि महार्द्धा नि युनो मैसय जानकीयं । कथं येहूद्दोरूमिमविबत्यानिमस्त्रू माधवी लाभ ल स्य मेरु ४ सून कालालिगायविषा अर्थं । नमश्रीमं
विधा । ध्यायावे ४ यदि मूना नृमे ४ युमावकुशालि मुख्यानियमिअ यय नक्षिनी । कथं मा रूं चवीमानि गाग सा काय पियाक्ति । मूले लाकं मूपक्ष माकं यमवधुहमवल । मृदकं मूल नूस्त्रकं पूर्बुद्वद्दुसमयुक्तंपु
यमानेवन नामि स्त्रियीमं याद्धनस्मिहि ४ कथंत स्नापूवदने नत्यावे वत्सुम स्थाति । महत्त्वु धरू सेकाल यनसीमनूरू धरू ४ ॥ धरूहसे ४ हल स्थानयकिमवक्त ४ । मसंपू कि । नूनं नाम सम यिन्यांयाहस्त्रीरू
लत्थि नत ४ ॥ कुर्वयियिपसंकाशमूपधायमहारूतमयपन्नधं मूकमाकं पूर्बुद्वद्दु समयूक्ति । कदाऊ स्नाभिनामस्य मूर्वयम दल कर्ता । अथामहृदयीनून नमत्मानमधीकरं । होन्ने यज्ञामहृदुनमहीनूंयस
हूस्थ । नलकहृ यतंकष्ठि कृतलाकविगर्हितं । निकाय यिधाव क्तियमय सहायन । यदि पियं वद । नव वर्षनामा नयूनसमाति । कलानां यहं याऽयाश्रेका यंजीवितमम । समर्भ त्वं अमं विष्कं द्वीयमानाम
यिमयी । कथं हि हनमाश्चित्त्यां जिसैसमक्रमंयामाङुहृत्र । अप्रदवि शुहसहृत्कासिवहियी । गुजय सिहिक्षिलराहुक वि सानिवधी धवान । करय यत्र सामी सूत्रं कदकाना विवृकर्मपान । रमत्यदनवकृष्ट विक्षा
मभ्रद्धिजाप ४ यष्टावदकूमाय कसूय अभिनिज सूर्मान माः ४ वाहुक लायूयदस्य सूयद्यूज्ञानि यवीधबा ४ हे तिकं वि नमस्य क मग दह मिवामसमनहि सिंह ४ यतालाष्ट मामि यत्रा कुमाहं हिंस्य । सिंहाह रा

तीर्थं त्रामायाश्च नराश्रमं । श्रुत्वा स बन्धुसंघातानं कुलाः पुत्रास्तु स्वबान्धवाः । निर्मानिया मायामानि कृत्स्नं पुनः स्वधर्मं । श्राद्धं नास्ति मिदं च श्रद्धयाथ तात्ययार्थीय सा नमा हि यत्तु मत्सीनामस्थीन सामामिवाध्वनि । नस्य मोर्त्यवर्षली
मामात्यच दिव्यं भवम लिप्स्यमानाः श्रत्यियुत्तधिनं । लीनवर्तं मे दिनायमी । मित्रेः नत्रेः सह कृत्वाश्चात्र रथचयिश्रेदि वै । श्रीगुनोल्लहन अकृतं धर्म्मास्मा यित्ह लोनवा० समामा कृतयदृगता नहस्तानो विविधिः । यामपथा हिमि
कृत्वः सत्वां नयामिवर्द्धनं । श्रावानयध्वानयध्वाम हो । तैल बना हृतां । यस्मात्त्वं स्त्रीसमं पुत्रां । तो बवात्रा भिवर्द्धनं । एवं वीर्यम महासत्व स्वयाम्यामयनाक्रमः । जनविधानमस्तु । स्वकीजालज्ञानम्नाज्ञाय पथा । श्रुनन्नमि
क्रमश्नीम धीहृ पृथिवीयं । स्वेच्छया धर्मम जिज्ञाकौवकौ कृं यायाश्रुवा दिव । विज्ञाकिजि नयंश्च म्रः । लासुदह । सनाकं न । अगुनी धूः महावाज्ञलो नवं वितिवर्द्धनं । गुरुदृष्टः । प विद्याच्चु स्व धानामायिनानथा । याश्च
नर्थायमक चित्ततः समनुकृत्स्नं वीध्वः । नत्वं वैरु विनानामं स्वयिवाम । पितृयनं । श्रयाय दिक्षुमं पार्यनम धर्म्मा स्वयलिङ्गथति । एवमुक्तागुकीनं स्यावितयकीयनस्विनी । नमाकृत्वे थेसं युक्त पूननवावबीद्ध्वचः ८२
ध्रुवमानतिवास्मैव धिनीयान । तिनात्मज्ञाः स्वकानाति कृतीयाक्वा चतुर्थी धर्म्म सेवयः । वनसत्या यविलुध्वा । नभिय स्वेननाधिपः । धनेयविहयज्ञत्रामे साधु पूजनमकाव । लोन हितामय विलयश्च चिनेन अामि
जीविकृत्य । स्वधर्म्मा याज्ञितात्वाकालेक्वक यौ धर्मे यवियूतः । महीं कीर्तिं यमांवे वरा स्वज्ञानाद्धिसूनंचम । श्रोतानं स्यूकसिद्धः । स्वार्हः सर्वथा सिद्धता स्व श्री । हता स्वयं यं न गवी सर्वा लक्ष्मी कीर्तिं च धर्म्म धनं च वात्मा श्रुः
ईसमूहाम रुनाग तेषुम सर्वहृताकृंच योनाञ्च हानोः । एवं तिश्रा निषुन दानुनोक्ताः । स्वाश्रुवाजाथ मूमोद दुःखिनः । विनिश्चसंधायिनि मीलिनं कृताः । गुलोलाश्रु नामे कनसत्व चकनः ॥ । जिनेश्वार्थतीना
मायालं श्रुत्याध्याकारत्तुकीनेत्याय सार्थानाम सर्गः ॥८२॥ ॥ कीलत्याये वं स्वय भित्रिः बुद्धे वैन हि यौतिन मूमोहन यनहस्याःदुः । स्वनामीलितस्कत अप्पेविलस्य नकः सीलं सम्यु श्री स्वयला वनं । श्रथवा

यत्किनीहृत्वा कोलत्याभिदमब्रवीत् । प्रसादयत्वां कौ स्य लोकार्थं हृदुनोज लिस्मनाहं सवद सिक्तार्वं निघकं शूनवस्सल । पूज्य नमार्थेम नसाहृदयोमविदीर्यते । श्रस श्रान्यकृतगुरुवाक्यानि विमूच सिननत्र लेवसा
धीनो गुणवानित्रेठ लोपिवा । द्विवर्ग वगति । धुति मत्वा पूज्य नमामनहः कमस्वाभिज मन्दं विरहनार्ह स्वां प्रसाद य । हेतु महं सिद्धेहृयादेवना यहृतंनमां । जानत्वाद विधर्म्मज्ञोहृदयलाकयनाववीः । श्रुताना हं सिमीहि
यावकुमनाहृदवबश्चमं । तिनाज्ञाविक्वतूर्णे प्रत्वादीनस्याधिनं । पूज्य लोकेय विलायकौनत्यायेमिवत्सला । मित्र श्रीजलि मा धायहृनं संज्ञाकमानसा । भिवसानं यन्तः पादो धुनिपयहदमब्रवीत् । श्रुमिकमनेनय
नं त्वामिमं कं गुमहं सि । श्रवाथं हि मयाश्रा सि पूज्य लोकविभूरयाः । दवहूतनहत्याकृयितं नयसाद्यमं । कृत्माजलिः हृताःन कृतास हृ यनत्तवा । कमस्व वाजत्रायाम थ विक्रम मि मेत्रता । पुत्रत्व स्थवधा
यिममनाम स्यवाक्ययाश्च ज्ञानाभिधर्म्मं धर्म्मज्ञानत्वां सत्या वादिने । पूज्य लोकार्थ यदेतु मयाकिम थिहाथिनं । लोकानां नित्य ज्ञां लोकानां नयतिज्ञतं । लोकाध्वनी नाथयतिनास्ति लोकसमानि यूः । लो
कृतकाग्निसंश्रयं नः । नन्तुस्यण ध्रुवानूत । नतु लोकं करुवं दुःखवंसे । लोहूनयनध्वानं । सर्व्वज्ञा धनिमनश्च स्त्वित्वधर्म्मार्थसेनया । यत्नयाश्च विमूढ कि । लोकायहनयन सः यस्य यानि गमोच्च दिनानि ननयस्य
मं । मानिवर्षलनानीव लोकार्थं यागताल्लिम । नक्कानन्त विलोया । लोका वेम विवर्द्धन । जलो घवं । लोनगयामुहानिवमयास्यच । एवं संशाघमानत्या स्कन्दाति कुनूत्त वचः । कौलत्याया जनमा सुं सवि
मा दिवसहाय । एवं प्रभृत्या दिका वाक्यैर्द्याकौमय्या पूयम लोकगुमय विज्ञान । नतिस्त्रि जावनं य यो ॥ ॥ कुस्यार्वतीनामाय लेश्रुत्यर्थकौ गुदनवधपसादनं नाम सर्गः ॥८३॥ ॥ एवं स्तुविलयकोलो कौ
लत्यांप्रमयान्तमौ । हृदं धर्म्मान्विनेवा कसुमिता धर्म्ममब्रवीत् । दिव्यौ धूल सूतेयाकः । स्कन्द विनाधवमयितुनिर्या । गनिष्कं नमे लोचितु महं सि । नादवसत्वानासत्त्वः । पूनमानात्यपहनि । पितुर्न्त्रिया

हू४

ततिस्थक्ति नवाकल्याल हागिनमयक्ष वार्य्यगत यूताहि त्वाबाछ्ठु मूखानिय । खायक्यं स्यमह त्नत कल्यान मितिममतिस्मक्तिनाव विनय मर्म्ययनथ वर्म्म नि क्विरि यूत मर्म्म हवाँ । तस्थुनमं ना विदुमई सि । कर्म्य
नूवल्ल मह कं लक्ष ततियिममान्मजकनम थाई सिनै वार्य्य ना विद्वैगो गवन्मर्ती । शूनगावासहू खानियानि जानाति ज्ञानकी । स्वयमेव र्थ्वना यक्षा हुवार्सि मूखानिय । श्रूयन्तु निकर्यों यं यानौ मर्म्म यथा यथा
नीय । बाग्गाजनी धर्म्मा नि व ना विदुमई सि । नामस्य विपूर्ल सर्ली विज्ञायाद तथमसम न गनोता न्थं सुहि यूर्य्य मीनाय थि तु मई सि । ष्ट्वा दार्य मूवसी ती क्ष्या बनन यष युवानि लम यूनं मनाति सी चार्य संस
विश्व विज्ञानन । कौ [illegible] ये दप्ता सहनाघवें । थिनि वीध कतो यस्वात्प्रा ह्वादय तिव रुमा [illegible] कुनि नमीदियानि विवमित्ता दवोस्तुयं । नन्तु सर्व्वीय विद्रुषं कथं ना विदुमई सि । कीर्य्यहि ६३
या हार्य्य याच था निर्दिष्ट ति थकं यूत । श्रुति मांश्च महामल्ल । समनामानाञ मई सि । यान्यथयूत नाका कर्त्ती नयं ह्रिसिमूँ वति । श्वानं दक्षा मिमानि सर्व्व बाममाशु स्थयाक्ति ग यूत स्य यन माली काव्यायूय
र्म्म हर्तव बन । वरुदूँ लानौ वर्णानामक हाम्युनिम दिनीं । कूनवीनास्वनम थिरथान्कैमन कूजनै । श्री निवानुगनामीनाम स्थति नामहर्त्त हं । नवयूतावन यूसीवनवासाहुयागनमह का यमनुज याधी सं
स्य न्तु दयतिं नं याधी वह मानं त्वं हस्त नाजीवनायनं । मयवाजीवनेन तुं मस्त स्यानुनजाक हिमनिनमयनल मूर्त माहवाश्चनामस्य माहत्व नदवय स्याय नेनि सनाकथ्य गं नंजगा मह स्त्रुय
थनिद्यनि विद्यमानय । ॥ [illegible] नाम समवायां [illegible] नाम सर्गः ॥ ६४ ॥ नाम मनुज नार्द्दूल स्नानुगवन माणिग । नाजादनन यथ श्रीमानायर्दे समयथन । मामलस्नतयामवं
विवासा द्वासवायम । उजा हायपूर्व नगसूर्य्य नम ॥ वास्य ना समसुदिवसनाम । नायप्तवम हायन मश्रूर्द्धना विवृ हैः हस्त्वानानायदुःहतं । स्यनायवीं यकी न स्नाम हि हाथयम वर्वाउयदि जा

गर्म्म कीन स्यगृहमय हि गावय यय दायन निकल्यानिन वः कर्म्मतु न गुहं । सावय्यं हल माया मिन स्य कालकम ण नगए नूनायवया न्नोमानं न मूनवित र्न्व यन् स्युननायामन ब्रवयानं स्यन्न सूधेमनयअमव
नं हित्वायलानवनमातिगनः यूधद्यं ह ल वय स्त्रिमासः स्याहः लगर्गमे । माहमान्नवनं हित्वायलानवनमातिगमयवृद्धिमाहा स्थविय श्रामं । नाजामिदूमितिमकीन स्य लद्वलनः णमनूननयूमामयान्गहू
यहूवाम न्नं मूयिनाद्वःहतं कनंनदिर्व मामनुप्रायं हलनै याय स्य कर्म्म नमह किन स्य विमस्थव वियाकाविजमाहकम श्रूविज्ञानायाथकपिन्नु ददमा हद्यं यदिर्द नथमसयाय्य विज्ञानायाय कर्म्मयूनाहगंको
गन्तु स्य यनू हार्य्यवना जोहनामाई । श्रुथया वितमूधाक मनः मंकर्म्म हीमम । श्रीदायद्दिमंसाजी मंगप्ता वकगदेवृत्तिः श्रुगस्य य मिकामाननूयावक नि नगनूमान । ष्ट्वाद्वमानादिनः सर्व्वहि स्यादहन नघना
यमूहा विजीति यवायिवकमायमवदिन । महसासाकूल मायानिश्रामसि विविधानियमार्ग हलवाहानिवहवजूलियगम । मेघजनाम्नाह मिरहं विलायविर्गिका । उमहनि । स्विमान आवरोहदिमनहन्ता
ग्रहनि ग्नी ह । नकासं वर्कमान हमंगल । यवहीदूनी अनूयानिः न बयूमगर्मं नयं । मनूयीयामनीलन्त्राकृदवध थियीर्गया नहयानयात्स आनानविविक मूयह स्वय । नियानमिनितयानीनूगानामलिनार्थि
नौ । स्विनवताहमकाक नाजी विमनकार्मूक नःनजाविम दिर्यवयीगं जीवामीर्थ मागनं । शूनीयायिमूर्गहमिनहून्न । श्रायूयागनं । श्रथ यूर्य्यमान स्याउ तदूं नस्यनिश्चनं । सूबहृ विमयम जो मेवाननवयवर्हि
नमः सूयूमं नितिर्ग नवनं अयकार्मूक । नस्मिं कुदनं । कूयमहजं देवमादिकःन न्यवानूनवनस्मिन्न थिवा नानियायिनः एविजाहू मिहू यिता हदकायमिहा गनः [illegible] मनाकि हनः कनन करवहाय कर्ग म
या । जमं । सन्नहृदउस्यवनवयानजीवनः कथंतु नव्रुनव । अमदिवस्य विमीयम । ययु स्यान्मयादीनस्यवन्यतीजिनवामस । कमायं यादि ह यूतः कि कार्य्य स्यामद्वयः [illegible] दं निहल मानैर्वकवलान

र्थमं ह्निगं। विद्याक्व ४ साधूमञ्यनतिश्चलेवगु नार्ध्वधंननमीनथयि ल्हावामिजोविनकायमाञ्चन ४ मानवं यिनमं [illegible] कालहनंमया। कथंमयिमनमा [illegible]
र्क यिश्च मनमीवाह्नं थ्वेवकयनाः ४ कनागत्पद्रवाल्मना। वाल्मेनेकनतिद्रमा ४ नाकमूलरूलोगनाम ४ [illegible] विलंवमानमवनं कित्वच
कोति मीं यिमा। एकपूतथ्वद्वथ्वयक्र माथविनाकनः ४ थ्वकमस्यां क्रिवलोयां यिनामयूलालस ४। विनयलुयमयूतः ४ [illegible] मंथ्वकाय [illegible]
दुर्व्वसञीविनां। थ्वकं [illegible] थ्यतिममामायत्थतिज्ञीठमीतिवा। नङ्गास्यतिलयानं मीनदामीगं नाहनं। वालसा [illegible]
मानव ख्वया विनः ४ विनालः ४ कूडसह। मममायींकथमागकः ४। निर्व्वस्याथ सींगथ्यनयथ्यतिवनय्यव। कथं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नाति यिनामूर त्वया हर्ग ज्ञानन्त्र यित्रगकार्या दिशन्नादयनाक मममस्थियमान हुं वासकक्षाउम न्यानयावगं। यिउनववव४यूर्द्धं गीयुमाव कुनाधयान त्वोधस्तूजिक्कायनयुश्कं ककमिवानल४अमूस्माकमयित्र
ज्जन्दुसमीयथिउत्राऽहमे। गंत्रह्माद यन त्वाद्दुनसत्वाँ कुयित४णय७विनयीमांकूनूक्तिशीत्वयाथीयार्यिनष४णव४। हृदिकक्षाग्निसँस्यर्ण४याणानूयनूणम्निमे। मनस्यामत्रसेनाहमापूयीनवमूद्दव। मूक्लानायक्ष
नमूरु णद्दववधृषकूर्वन४मनत्वाँनाविनदिशैवक्लहयानत्राथियनह्विजाभिनदृणकौव क्लह्याकनीस्यज। उक्ल। णनत्वद्दुजागन४नूदाधाँवसनावन। ॐ भिमामनवीद्यालष्णनणाजिहनामया। नस्याथ
नाम्यमावाहमूद्दयानवलादद्दं। यत्त्रवानजाविनाकोक्ताममूनक्लस्यविषयनस४णसनउनस्मिन्यायनीनमाथ क्लि क्काङगणामसमूद्वल खिन्न४। वियद्वमानश्यविद्वजनफ४यालाच्चमूवत्वाममूनक्लनूजानि ७७
धनमूयगनामहविष्णूजमलयनषासहसैवमानिया न्यु। हणमहमरवैविमूरयनायमनमयावमनीवसैवयत्र४। ॐ स्याथणीनामायणंमूयाध्याका। ‍उजविकूमानववपानामसर्गः४॥ ३३॥
वधंनमजिनूषैउमहर्षक्लस्यनाधवश्वितयत्रवधर्म्मानाकोणस्यामिदमनवीगनमाद्दंणवमूद्दयथीकमाणीविषायमे। मूगक्लमूयद णनथिउवस्याऽमयुजि। नदद्धनानमहस्याथीक्तवाद्दंयाकूलत्रि
यम४कश्मैविक्कूयामामक्लिकत्वामहूजनहव७नहम्भीयदमादायमूर्द्धं यनमवाविलण। ग्रयनाम्यूमूरवादहूँमथिँ द्धालनसेनिहि। मताद्दं हायलावक्षीद्दं ध्वीविणननायक्की। मूयत्थुंजनकीनस्यनूनय
नविवञ्जिजी। नक्लथाक्तिन्यासीनीयथिनीयूजलालसी। पूजदणनजामाणामाकोक्तिकीमथाद्दकीपनदद्धामान्महत्याथीक्तवाद्दंदीनमानसंवमासनाक्लावक्लियथनावयनथंनयखिनी। जहैववयदमेणद्धं
ननामासात्यहावन। यिंग यिवाभिगयूजयाणीयेक्तिअमानय। यस्त्रदहयित्रनामसलिसक्कीजिणत्वया। डक्लक्लिगयेमामानयथाहमयियूज का। यदि क्लिं वियत्नीकीन मयामाताथिवाक्लगं। नङ्क
मयन्वामाहृयत्रिमयथ४क्कखिक्कन४मूगनत्वीगजिर्मयत्वेमयक्कृनयक्कृष४मर्मनिकामूथिवाणा४कस्मात्वंनाजिनाषस। पूजजिकनूणेवाचेकवर्क्केयूजलालसी। मूहमन्यस्यणनकेनूवैनयविक्कल४वाथ्यक्लनू
नर्का। ७नधस्यासैक्लस्यवान्वसो। क्वनाजलित्वथिमानाजयगन्नदयातिना। नक्तिथाद्दंदणवाणनाद्दंयूजामूनजव। मजनावमगंघावेक्लस्याथाथमिहानन४। जिघोमू४न्याथदंक्लिं त्रित्रियानवागनंगजा। मूर्य
मानस्यकूजस्यनस्यणद्दामयाहजन४। गजायमिक्तिविक्लयनन४क्लिक४णनामया। नजयूजामयास्पीन निहनागजाणेकया। नस्याद्दंविवूनक्तवादृदिविद्वस्ययक्लिणा। हीनम्यागम्यनंदणनमथन्थंनयखिनी।
हनवैक्लद्दवथिवान्मयार्यगजाणकया। विसहद्धामूमिनाथावायनमनिहन४मूज४। समूद्दनमयावा। णवाणामूथक्लादिवेगन४। हवक्लंसविवेकालयविलण्यायनयखिनी। मूक्लानजामयायूजाहनक्लदथि
गामूनणाथयैमैवगनन्नाद्दंमथमूमूक्कत्वमद्दंसि। सगांज्ञानकावावेमूघावामयसैलिनीं। नाणकक्लाउमायासंयक्लिसाद्दंनयामूनि४सवाथ्यूर्द्धनयमानिन्वसंक्लाककथिन४उस्यानस्यनक्राव
मामूवावक्लगांजत्रि। यदित्वमगुद्दंकत्वानावक्लीथ४स्वथिमम। लाकाम्रूथिवदन्या४मूनर्मयानणयवैक्लि। नाप। कक्तियक्लानपूर्वंयद्वानपक्लवध४कन४मूनात्यायावय दाउवक्लादमथिमूक्तिगं।
सफावनाक्लथयूर्वनववेन्यानूयाधम। यन्नयूज्ञक्लानयूर्ववानयक्लयध४कन४। इनक्लसीयदक्लानात्वयानानाथजीवसिानस्याथक्लमम्यअनाधवामिक्लाहवान। नयमीसाधूद्वेदणफजाशीवाल
कक्लयाहगांक्लगसवा। णनममवान्यत्थयविक्का। नददहयजिजीहमोदमूमिक्लाभियूजकें। सैवाथयदिजीवयैयूजस्यर्णमयत्रिमे। मूथिवणावसिक्लांगवक्लीद्धूँ विनमूर्द्धजा। सहाय्यक्लिमूगान्यथधर्म
नाजवगंगगं। मूथाहमकक्लैदणक्लीत्वाणीहनदू४रविणी। नमद्दंस्यर्णयामाससहार्यंयमिगंमूनं। उक्लिवनावद्धन्मक्ला का। ७ववस्यथविक्लवजा। पकस्यवायननाजद्दं स्वाध्यायीकूर्वमावन। णअन्यामिमध

तेनाहं पूर्व्वम्भो मम श्रीय नना नाकमूलसूलैव च्यमाहु विश्व मिकाव ना ॥ अव्या वयार्थं अयारः पूर्व्वकोस्क माः कृत्य मिनयाभ्यः मामे धीवर श्रीय मानमे ममयस्विनीं । कथं पूर्व्व ऋषि श्च हर्म लो गनयना क्रमः अवका हमयिमावन्तु
नेनागन्तु मिह्वा हे सि । सम मया येव मात्रावर्ण ना सिम्हद पूर्व्वक । उल्लाव यि नव सा का दना ये नाथि वादि व । प्राणेः पूर्व्व विया ऋषा मनः । नकृत निग्रथ । ॐ ना धैव सर्वां गत्वा किस्कथ कपनः स्वर्ये । पूर्व्व हि नौ बुद्ध द्रोगिक वृषे
सहितोगनम यर्थ्या स्व नकः सर्व श्रीमन्नाचारु स्वाय यावको । क्रुद्ध यि च्छ तिभया दी कना ह्वो यविसस्य ननु । ॐ यायासि य थ्या पूर्व्व निह नः या य कस्य ना । हमा प्रहिमथ लाख्यानूणलानाम निवर्ह्निनी । य ह्वा नो उनूव कीनां
त्वं समापृहि नो ख्यान । या ज्ञा कास्वद वेदा स या व ग्मा मूलस्था गता मयां ब्रह्माउ र्व आ आना यज्ञा निन घू आ दय मृ हुम भिन ब्रह्मयामाः स्वयात्र ह्या वा बिलः । नोहिव ल्था दि नायामानू मिद्या त्रैव या ना कामयां ः
श्रोत यव्रदान ह्वथ आयान्स लवा दिनः । नाज्ञा काम्मदनू भ्मा याहि पूर्व्व क नव मान । नह्वीहुं । नक ल ऊ म्म याप आकि समीगति । नसा दिन धुन स्छ ना ध्या हिलोका मम बुद्धि मः । एवमादि विलया ह्रो । समूनिः म ७७
दना र्यथाय । सकार्ने लल या मा सदृः रवा य ह हे ग्र न सः । नना मो क ह मूद कंग्र नस्छ दीन मानसः । म्रथ दिश्य व पुर्ह्न त्वा विमान व व मा स्थि नः मसू न्नि पूर्व्वक्कमा वा श्रमु वा य थि न ना विदं । हव क्ष य विव यार्हि यापूः
पूर्व्वां यत्रा नमितं । हव क्रा व यि हि क्रि शु स्थान मिश्र म वा श्या नः । नरु व श्या म हु । न या ना मे ना ज्ञा य वा भ्र मि । नविन य म व हु नै य ना हु निधने ग न म ए ना व हुक्का वचन मृषि पूर्व्वा य यो दिवे । दि वि दि यावपूर्ह्नु
त्वा विमान व व मा स्थि न म सा यि हस्वाद कं न स्य पूर्व्व स्य स हु ना र्थ्या । नय श्री मामूवा य दं हता अलि मूयस्थि गं । कथं श्री स्या न य न श्री ना ऊ श्री नां महाम्मनीं । अविनी नः कूल गं ऊ । ॐ स्त्वा कुनी नृ या धमः । स्तुति
मिह नवे व कः क्रतु ऊ न मया सह । यदर्थं मिपूल्लक म्मा । स्तुता र्या हु हन त्वया । अविज्ञाय हम यज्ञामै ह नाम द्विन यनच । त्वया यस्मादह मयि न या मि त्वां निवाधमे । पूर्व्व । नोका तु वः या ना । हे स्य स्वम

मं२ व४

वर्ण य धमः । त्वम यथ्युत्र न यथा प्राप्त न्य कृस पूर्व्व ला ल सः । वर्ण नाय महे ल ह्या स्वयूनी पूनवागनः । सा ध्य मिः पूर्व्व । नाक नन वि वा द्वि वि सं स्थि नः । सर्व्व सुना या नि य न म ध्य मी स मू य स्थि न म न थ हि पूर्व्व । नाका लं या ना । सं व
नय क्रिमां । व क्ष र्थां नय प ग्रामि स्म किंह विलूथ्यान । कृमा वि व न स्व न स्य न स्व व य स्थि व मां उ ह । य दि मी सं स्थु । नद्वा म । सं शा म दयि वा ग ते म ऊ व य मि कि मू वू स्थि । ध्या ध्या मू न मि वा हु व म द स्वा यि य द हे या नां सू ऊ यें द यि
तं मूतं । धूत्वा यि न विद धः हु पूर्व्व । ना क न हू । खि न म ऊ मा यि वि हू । रव नवें । कि मा कक्रु न वे ह व । य द ह स्व व ना म श्र हू । सर्वं य ऊा मि जी वि गं । ना मा द न न ऊ । नाका स्था ना वा ध य मी व भ । नदी मो न नू ह्यो च्छ क्रा वा
बिवं । ना महा निव । निस्क्रांण्णु वन वा सं न मया ध्यां यू न वा ग न । हुकानि मू खिना ना मं । न ऊ स्व ना दि वा ग नं । न म नू श्या श्रे द वा ह्क य पू र्णू न्दू स म य हं । मूख वृक्क्रि ना म स्य पू ना य वि न ना वना । मू द हु वि म ल का के
या वू य ह्म द नं कू णं । ध स्या दु कृ न्नि ना म स्य ना ना य कि नि हं मू खे । न व त्य स्म स्थ कू न्न स्या उ स्या नि श्या स मा वू नं । दु कृ न्नि मू खि न स्क स्थ मू खे पूर्व्व स्य य न वाः । ॐ कि ना मं स न न्न व न य नी य ग ना नू यः । न ने नू य ऊ ग मा माः
स्के न नी व व ऊ नी कृ य । हा पूर्व्व हा ना म । ॐ कि स्म न न्न व न ने न्नू य । म या ऊ मू यि यो न्या ना न्ना यु धा न्कू मू द स्य ऊ ना न । न थ स य दी नः क थ य न्न ना धि यः यि य स्य पूर्व्व स्य वि वा म सं क थं । ग म ह्व ना त न य नी य सं स्कि
तो ऊ ह्यो थि यं ऊ ी वि न मा त्म न स्क द्रा ॥ ॥ ॐ स्या र्म जी ना मा य । न ऊ या ध्या को । हु वु द्ध न या या या ख्या ने ना म स र्ग ः ॥ ७ ॥ ॥ कि न या थ न म वे उ नू ह्ली ह्य ने न वा धि यं । मूढ ॐ स्य व ग स्या ली को न स्या न य वा ध य
। ऊ नू स्क व व ह्मं नं स्थि वि श्व क ए मा ल सा । मूखा सं य न स्य यः पूर्व्व । नाका लं मा न सा । ऊ थ ना ध्यां या मी ना या सं ध्या का ल उ य स्थि गं । व न्दि नः प र्यु या कि ष्ठ न्या थि व यु कि वा ध का भ गं श्री स्व न मू य द ह्वो
मू न मा ग ध व दि नां । नू नं वू वू थि न स र्व्वा नू या न्ह श्यू व मा थि नः । स्व क र्म हि श्या यू यि नं ना ऊ य स्या न का मि न ः सू त्री व र्ष व न स्य यि स्या उ य ह्वु ने न्न ना धि यं । न मा नू य नि यू र्ण ध्रु वू ना ना ऊ न की च मा नं । उ य न

मामावम मिनागतः। विदङ नाऊत नयाम्ह मानीतय ख्विनी। ख्वम्हयाय संकल्पं दुःखं याचानूत वयसो। ॐ उत्र जितवंनादयाना सम्हयचिहां। थ्व खानूनं हयाधिम्ह नामं उय मिमे थिली। ययावू खाल्व या
याम ः यमिंड खाविवा सितः। धर्म्मा त्मा उवत खांव गई यिध्र श्यागतः। सूर्हं सायूना ह्वाम मिंख्वा वयमाउ सि। कन्हानीं नूतं साल्व मध मिं ख्वावकक यि। कथंवासी महा सत्वाद दर्नामम नूवनः। श्रू याय
याय संकल्प कंनकाद् थिमस्व या। नाम दं लानू वकी हिवनः याय निध्रयं। नानूव स्याजित दहिं विगर्हिश्रा जिवागतः। नूतं यमयनयीं च लाकक्र र्म्म वितहिनं। यह्ल्वाम न्यासयाधू तन्न साधू हनं ल्व या। किंतु
लावामितहींनं वामं लख्व तेमववः मतख्व ख्वयवेदहीमा स्मानं वायिदुः ख्विना। लेस विनयथ्रूयूगय ख्वकृ ख्वमकधूवं यथक्व। ममा जिहुः ख्वराजि नामनं थ्याननजी विमं। मीविहाय वनामा थिनं विल्व दिवं। ५८
गतः। सार्थ दिवयथिश्र ख्वकाय ध्व विथ नाशुदं। डामखावाउ धर्म्म डकायानाथ सवसेल। मदहनस धेयजिनीं या हिमों लोकसागम। श्रू याविमाल्व याल्यक्वा चंवाथल्व त्यनाहा। य ल्वीनानू मथयाश्रम
र्ध्व थेव दिगस्नुमां। न्याथीं धर्म्मयन खींवमार्ग म खुहीनिय विनं। श्रूनुगं डुनत थुमि नाम म दर्नानयया। किमया नहनं साधूत वदशाउ नाधिय। यदिमडं नवीनं समडदाडमवाथूयीं। गडं यनलो
कायतदाल्वाम नूयाम्य हं। म्हवानामयायध्रु वीडुः ध्रुगि हनं तवं। नूनंने वाहम डॉमियायाय शूः सला कनय। याल्वं विनासमानूडं न ल्वं माक्र मिथि हुनां। काल्यव लोलाजलु न्ह मर्डुं ल्व यमील्वव ः जीवि
नं वाधुग यल्वां नाऊ वानूसिथे धूडं। नमदनय ल्वे ख्वर्गं नामवान। लमा छेन। श्रूहम कायविश्र ख्वन्य। लधवस्मि मानिवव ख्वासि नाममह्रा वाहां का सितखूलस्वतः। कासि साधेव ल्वेद हि नमीऊनीयकूः ख्वि
नां। कंक यावय नाडाल्ला उल्वानामंवि डासिंगी। सहाथीं ऊनकावा ऊयविन ख्यासिनधीं। श्रूल्यायया हि थकशुंवेद हींमनूविल्ह यश्नसायि लोकाश्रि सिलथः यविल्य कजिडी विमं। श्रूयिक हिश्वमद वियल्या वल्ह

सिमे थिलि। समडः ख्वमूल्या यामं हल्ले नमनूगक्तशि। हर्ल्व वं मूनं जि छेव उवूदंवत भवव। हर्डं वयनमस्त्री लामा उयम्ही थमवव। ॐ जिनायजि। लोकश्यपूत लोकश्याववला। यजिनां माउनां धानां काल
कांकू नवीमिवा। मर्द्वतानाव्हन हानाव निस्वाहग वानूविमः खादि ल्मानाययामास। नाऊस्त्री हिर्वसो दिव। मा नि थक्व थडुः ख्वोल्हं विल धक्नीमनाथव। जूयनि यूः ध्रु कर्म स्ल ः कोल ख्यां नाऊयाधिमः मतल हि
जनीकल्यमत्हि हिं सहनिध्रुयं। हल्वाव लिस्वाहगवात्राम्ह कालमकानय। लनीनंकाललन्हस्यामं लद्राअं निवं ख्यव। मनुआं मासस हि मामन्हि हि ख्यदनं मनं। डहीमाका मडवूलं धिनकालंगना विन भक
थं तनमलकघ्रावानीयमा मिह जिवंनहिसल्कनतं नाक्ला नाऊयूर्ष्ठि ख्वि नामदा। मत्कि लःकदुमडं क्विमनावह्लकिनं नूयीं मिलद्रा अं वहिष्ठुनलायिमं डुननाधियं। दस्व मूनाय मि हल्क्व ख्रुयः सर्वा ध्रुव
क्रुडः उ ख्व्यवादू लोकालं वाथ्याकूल लावनाः उवः लिन ध्रुजानू निऊयूः कनतमे म्र्हू। मेललिनवनि लाहीना ऊर्डुडानववाऊनान। नम्या नाऊलदाथाम्यागं नहीनाम महालमनाये लोकदुः ख्वाल्हूपू
याहाहा हत ऊमाकूला। उधम्हवत्वनयथ विन् न्यविधि नाकथा। हतग्र हाडी निवलाक्व वं विना। ययत खनुवयनिध्र हाति ला। ववाऊ सानेवहतं महायूनीविमा दमाकत हं दीमडाल नाने नाडूनार्य धुहं ली
ल मानसाविह्य थक्वाऊवनया माजनें नहयां नगयां निवनाउ सं कुथ विसयू नाल्हं नवनमें नहिन। यथागतमनूऊयता वहूः ख्विमानक धुनाउ वदधियादय ख्वथि। नि वायता वयगत हिंडुकक्रि यावरुवरुथा
उय हाव राऊनान। मडुयूना दहनं महीयत ध्वं नाव यम्ह मूहदः समागनाः। ॐ मीवकनं मसवत संक्रदासमी ख्व नाऊतमख्वीनदर्नाना ः॥ ॥ ॐ इत्यार्यश्रीनामायन सूयाक्षकावुदनंवथ संक्रमनं नाम सर्ग
ः॥ ॥ ५३॥ यजीमायी उनर्ध्व यीमादि यख्याद यथतः सम यनाऊउ नवः सामी यूर्द्धि ऊतय ः वलिख्वा वाम दवध्रु जावा लिनथका न्यय ः माक्ल उयालेतमध्रुमी मथयध्रु महायना ः। अगंधि गाः स

हामाथ्यिं॥ थ्व अथव मूदीम यनु। वनिस्यं मवाहि मूस्वाः॥ एथें वाऊ धूमा हिगं। सूनाना सर्व्वनीकूना अथेंवर्ष नमायमा। गोयनाथूकु। गोक्क नसूगं दनव थंनु धं। स्वर्ग नष्टम हाराजा नाम श्रीवन्धमाणिक्य॥ लस्म्हल आयिन
ऊस्वीनाम लसहिमागनमश्ठुकोंहवकनफद्योक कथथूयवकथ्यो। निविवऊथूववव वमनथ्यासिमीनमी। उथ्या क॥ कथ्रिदवह नाजानात विथीयनी। थूवाऊ कमिदंवाछ्ठुं विनालमूययास्यकि। नानाऊक्क ऊनयः
द्द विथूम्यालीमडास्वनमश्रूक्तिवर्षमियर्थ्याम हांदियनवा विना। नानाऊक कऊनयद वीऊमूख्यि॥ प्रक्षीर्यमं। नानाऊक्क थिउ॥ थूत॥ सथ्यक्तिस्य मिनासन। नानाऊक्क थमिंहार्या यथावदमूलिस्थलि। नानाऊक उवा
॥ लिथ्य॥ ग्र। लोमिविनथेहिगं। स्वीना स्रथवाऊक्क वाछ्ठुं यूसीनवयविरहः॥ थूवाऊक्क ऊमा लनस्थुम्हस्नेनालिक्कयविरु। नानाऊक्कऊनयदवामि नीलाक्षिशाग यवविविर्धम्कनूनयङ्गान्द स्थसैंधै थूयपीडिकामना
वाऊक्कऊनयदकावयक्तिन वा॥ सदाउथ्या नालिव नथ्यानियया॥ थूथ्वशहां थूथ्य। नानाऊक्कऊनयद प्रहमनद नल्क्का॥ ॥उत्सवाछ्ठु समजाथ्व वर्ज्क्क ऊनहर्षलाथ। नानाऊक्कऊनयदक थ्रिदर्थथ्य सिख्यमिस्थ ५२
वहावानवर्द्धनधर्म्या। सजनस्मिविना॥ वदानाथीयनविथ्ये नवविंदक्तिनिर्द्धिमिं। कथानीलाध्व वद्धकन कथाक्तिवनाऊक्क। नविवाहाध्ववर्द्धमकन्यानीऊनहर्षलाथ। निख्याद्धि अ॥ थूऊ॥ सद्धाद्रू॥ थिवाधु
नथै स्वहा। नानाऊक्कऊनयद विन्धक्क॥ कलकव्याका॥ थूलेहमावाऊ मार्ग्गजीउक्ति विहवक्तिथ। नानाऊक्कऊनयद वद्धपन्त्र॥ थमाकिम॥ उवऊक्ति नाऊमार्ग्गथूक्कऊवा॥ थक्तिहायथा॥ नानाऊक्कऊनयद
विहवसीकूमाहयाथका मिन॥ सहकाका लिथ्विहावायानह मिथू। नानाऊक्कऊनयद थनवक॥ कुउक्तिनस। यवम विवहवानाविन्धस्मक माहयाथ। नानाऊक्कऊनयद नानाय। थ्यथऊी विनसयन्थ
नाहायगक्कक्तिवलाद्दलहयार्द्दिनाथ। नानाऊक्कऊनयद धनू॥ थालिनूयास्यम। ॐ यनहलनिर्घाघमलद्धमिथूमहयनथ। नानाऊक्क हाथिकवा॥ कथक्तिहयथीडिकाथयनवाना। हिवर्द्धकं मिहीवाछ्ठुद्धु

वाऊक्क। नानाऊक्कऊनयद वनहयकवावदमी। हलवयंक्कयप्पास्मानीयतसायीगहमूलिस। नानाऊक्कऊनयद यागंक्रमेवद्धथ्यमं। नवाथ्यवाऊकेसेनी लकुं विऊयनमूथि। नदीयथाउथ्वऊलायथवाहक्कर्कवनी। थू
लायाध्व यथागावक्कथावाछ्ठुमवाऊक्क। विस्तवथि॥ समूद्राम द्धीक्तिकि॥ थयन्दमायथा। गक्कक्तिमालमाथ्यालिमथावाछ्ठुमवाऊक्क। नानाऊक्कऊनयद स्वेवेहवलिकस्यचिउ। हवक्ति दुर्द्धलानीवस्थमाक्कन्यवलाक्तिकाथथू
वाऊक्क ऊयद दूर्द्धलाचसवहनाम हक्कयक्तिनिवूस्वगा मत्यान्म स्याॐवास्यकानू। थूक्क्क धर्म्ममर्यादानालिक्कानिनू यत्रयाः। हवैस्यवाऊक्क वाछ्ठु मानवाः थूवनिध्वयाथ थूथंनम ॐ स्वदं स्यान्नप्रड्ग यम
क्तिवन। वाऊावन्न हवस्थाक विहऊ स्याधु साधूवा। वाऊावथस्य सेन्मानें ऊानंथूमाविहावसाथ। नमीमऊामथा वाऊासद्दवक्कमूयागम॥ दस्यवायिनवक्कमवाछ्ठु विंदस्यवाऊक्क। ह्वानादहाग थुक्कस्यक्ष्वथा
ध्ववहवाथनं। नस्थाजाउवकर्हथ्य ॐ क्तिर्मस्मन॥ उहं। क्तिजानीववनें स्वावलिथ्वैमक्ति। लाक्तवनूऊीवह्यथिमहावाऊ सहवाक्तावयेधहा। लासनमवलिस्थाम॥ सन॥ साथिनयाथन। वलिस्थधर्म्म
क्कमहान्नूहावसन॥ समीउाहसिविथुवर्थ। क्कमावमिक्काक्कलयथूगत्वमाउवाऊानमिहाहिमक्कू॥ ॥ॐ॥ इति श्रीनामायालंकथाक्काउवाऊयलीसानाम सर्गः॥ ॥१०॥ ॥गर्षीमहद्धवर्नेरुस्वाव
लिस्थथ्यस्यवाचह। स्वमक्कुयहमी स्वद्धीस्वाक्कलांक्कमिदंववथ॥ थाम्सोमामामहकलक्कमान॥ श्रीमनाविवन॥ हवनावसमिऊाताल कुथ्वनगम॥ सह। नमिम॥ श्रीधुजेगं स्वानवा॥ थ्रऊविमेहथे॥ ॐ दानयेंहु
ववनाछ्ठुथि स्थसेववा ऊिन॥ ॐ मिलस्वाववहस्थाउाऊमक्तिनथ। गक्कस्वालिमिसर्व्व थथ्वथ्वद्दक्कमानसाथ। नवाऊयक्कसिद्धार्थमलाक वावथीदिदं। वलिस्थाऊ यमी॥ थ्वाद्रूमानाक्कयसल्वनेपूर्नेवा
ऊथ्वहगस्वा गोध्वथ्रऊविनेहथे॥ लयक। गोक ॐ दंवाथा हवक॥ ला सना लियुम स्थाहवीकूलले हक्क यिमा सर्व्ववमक्तिलथस्व नावानूनीथ्यमागक्क कार्य्यमास्यायिकेस्वया। नवास्मेथ थिमामामानवा

वनिस्ता २

[illegible]

[illegible] १०

[illegible] ॥ इत्यार्षे श्रीरामायणे [illegible] नाम सर्गः ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ इत्यार्षे श्रीरामायणे [illegible] नाम सर्गः ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible]

ज्ञात्वा ह नवनना स्विनाम्कुथा । माङ्कः याद्यो गृहीत्वे वनमूचुर्ह नमं ववमपूना हिनस्त्रों कूल लीं प्राह सर्व्वं वमन्तिलं ...

माश्का ह्याद न वैवनवान्घ प्र जिगृह्यवन सर्व्वमनूवक सुह्जन भूनानू वाचेन न नः कामेः सेयवियूनय ...

वाकूललिनी की न त्यावधर्म्म वाविनी । मामा नाम स्यधर्म्मज्ञान ...

कथी वायिभमामा कवित्रकूल लिनी हदं । ॐ जिनकूल सयनं ...

दियन्य मिगक्क्य ...

दन्नासंय स्नामानाम ह महा मन ...

सि । ॐ जिमामा महस्कन ...

न कुथा । क्को न स्यॉय सू मिवाँय सर्व्वी वा ...

ह वनाय ददो धर्न्नं न स्मामा ...

इह वना सूक्ता स्यायु सिंह ...

युधा जिनं वथ मानूप्न ह ...

कालनुकू न दर्न्नं निनाम सर्गः ॥ ३ ॥ ...

न स्व न ः धीर्य श्रीनी नद्यी ...

यनीर्य सहवाह न ः ...

धीवांवर्द्दे वनन ...

सु न नद्रसाव नूर्थ ...

या दुली र्याजाक्कर्वी नर्यी । सविनायाथ विविधा ः ...

नश्चरन्तनः क्षिप्रमत्यायादयमिश्रान्कवाहनः ।गमममीमहि नः सायीनानाद्विजसमाकुलीं तत्त्वीवजनीं नी श्चाप्रयाता तूदिन वदी । श्रुत्वा च मनूनानाज्ञा संदर्शन नित्य मिमी । संकीर्त्य तमसी हृदं हन्तकादी
नमानसः समीपूर्वी पूर्वप्रयायः सन्कृ मातोपि नः यथि । दृष्ट्वा च आमूवावदं सावथिं न थिनीवनमनाजिग्रहृद्धद तेव साथा आहृध्यमपूवी । प्रमानाया नसीवाया हन सूतिन साव तथा । श्रुत्वा हृदश्च जना
कीर्णं नूत्याध्वक्षम हाय थामानिः षद्दावह मानं दालक्षमनव महायूवी । यक्ति सुगुणसंयन्त्रिं चंदव दाक्ष याव ते । द्विजेर्द्वहृत्ति याकीर्णं वाजमिविव वालिका । श्रुत्वा च आः पूना धाया कृतादवजनाहृ
वः सत्प्रयमसागवर्थवमथ्यमान स्थवायूना । समहानवनाती तीर्थहुताद्य त्वा पाह । गतश्री विवधाहा तिक्रमाया च महायूवी । उ आनानिलव मानि मूताय जा त्रिर्भिजनिः स्था कीर्णां च यल श्रुते १२
तानिनाद्य यथायूना । श्रुत्व ध्वजागं यथामिनगवाय वनं थिजुः शूद्धा याय नवना हृदं नव मानी विवर्तिं । नयामिनयद्व ध्वनं नगजे नवधा जिहि शुनिर्याक्रः पविनक्षावाजनाः पुननिवासिनः श्रू
निश्चानीडय च्छामि निमिला च य सर्वनः कृता पितृत्वीनं म यथर्गवाय साद्यथा । ॐ कृ वत्र व वधा हवनः प्रकृवाहनः । विवरतायूवीं नं घोष्ठो द्वाः मीयनिपूजितः श्रद्धावलद्विजयत्कं नप्रवित्र
श्राक्वाहनः । यक्तिपूर्त्याय विजये यशस्कैः सदिवैर्वृतैः । सत्वमवाप्य हृदयी प्राह श्रं संयुगतेजने । श्रूममं व यशिधाकृत्मदवी हृत्वा साधवः । श्रीगाम्यादराय पूर्वं विना । नयथिवीक्षितौ । श्राकानास्त्
नहं सद्वीनिहृदय श्रामिसा न । थः मलिने वाक्ये पूर्णं दीतं ध्वानयदं श्रुतं । सद्धीपूर्णं संयच्छामि जनेमू लक्षितिं पूर्व । ॐ स्वयमेवागतनः श्रुतं दधीनसान पुरः । श्रुनिष्ठां श्रानया आपी दृष्ट्वा श्री मातृ

गृहं यथो । मीमूर्त्यग्रक्षारद्क वं मन्थानी नानि कृतं हानकयात्रयत्त्वीपदृष्ट्वा पूर्वीदानजनानूकीर्णं । तमकनसीपूर्णन मावहृवा । वकुन्यथा न्यन सासाधिवालिषा न्य न्य दाना स्वयपूर्ववहूव्यः श्रुवद्विवादीनमनाकय
स्त्री पितृर्महासाक्विव नवं नम ॥ ॥ ॐ त्याम श्रीगामाप्त ने श्रुत्वा च काले रवकु रथाजमर्नानाम सर्गः ॥ १५ ॥ ॥ श्रुत्यस्थमानः पितृनदं समहिमी निचितु वालक्ष्य । जगाम निःश्वहत्य गर्ताजवतामातुजा नये । नमस्या
ननमासाध्कंकथीहतवर्गदा । उत्याया मनाकृतहृदं सं । नकृत्रलावना । मंयविधानकाव न्यमातुनू लूकमानसः । जाह्याद्वीहवन्ह प्रणाववमावसी । पर्गसामूर्द्धन्यायाधाय यविश्रुत्वा कृकथी । उयवन्न
दीं । नहवनं संप्रसू मूयवहस । धाक्रांसिकनभमनाह पूत्रमानाम हात्यूनाग । मश्वनाथागतः । कृतिकृत्वदत्य यविश्रम । मस्वधा मा कृतानीमामा शूधाजि माजुलश्रम । श्रूयम हृविनस्कृत्य विस्मामामहृपूर्व ।
ॐ तियपश्रु कंकं त्या हवन्ताधीमनामव नःस्स नमाहस्त्री कं गमनागमनकृसं । श्रुत्यमहिव मा स्वायकति । मनस्यागिविवजाता श्रुधावकृतलीमामापूर्धाजि आजुलश्रम । यम्भपी तिधनं हमिदं हृ
मानामहतवे । यथितसर्वमूलस्य नमाहं तीर्थमागतः । यतु त्वीवशूमिक्षामिनदास्याउलमर्हसि । नयथावन्न वमिदं हृष्ट्वयी वजनाहतं । कस्माद्धीनजनाकीर्णं नगश्रीवायल श्रुतं । निकूर्माहं तीन
वानदं विनमाधानस्व मे । कस्माद्भमीवाजमा । तेजनाद्येना तिको यतं । पितृवं वनयच्छामि कृतायहवना हूकं । किंवा हवद्भुता मातु श्रुत्वा यातवनं मम । वार्ज्जितं नयनी यकृतातकनायन्तुमा
श्रुवदृष्ट्वा जनाथं कनसत्यं वीष्टिम । श्रुत्वा जाव यहाक्ष महाहं गन्तुमूसह । नाहं नमामि गच्छामि नमदृष्ट्वा न वाधिपी । ॐ मिकुवातं हवनं कं कयीप्रयहायन । निर्लज्जाद्वानूहीद्यांश्रम

प्रिये प्रियं मे कथय । स्वर्गतिं महाराजः ॥ पितामह उवाच ॥ अथ ते ब्रह्मशालायां ताः समूल्याः पूत । लोकयति कृत ॥ ॐ किं कृत्वा च वा माधुर्य मा वाचुर्ना कृतेरय या म सह सारथ्यो स्थित्वा ममलं ॥ वकु मः सस द्वमो ।
यत्रिय मेदं विस्तारा याकूल स्थिय म भ्रमकथ स्वर्गता राज्ञाकथा कनुवह कुना । यत्र नृत्याम न मत्रिता नयनैः सा यत्ने कृतां । कद चन दिशांगन स्थियाद्दीने तिवाजग । भक्ति भासाय मयि वाच दिन । हि दिनैः मो । प्रसी
दच कृतार्थ स्मिनैः स भक्तगता नृयः ॥ ॐ यार्कनू येक वनं पितृ ईन ललाल सी । कैकयी यति कैः समावृता यदेव वा च वीं उ कृष्ण कृतकृति यैः न च्यैः । नाथ पितु महर्षि । अमृत ईश्वर नवै स्नान वा ज्ञादन ते । अथ गत कः भमन
लोयं हृत्या पूत सत्य धर्म यनाय न । ॐ यम कृष्ण ॥ ॐ सा के कथा दानू ते व च भ्र जननीं पूर्व नवद मूत्वा च हृद्वः स्विन ॥ भू स्मिन स्मिन आ मेउ राजा यदू कुर्व कृता ॥ ॐ या ना हृत मी कल्प स्कन्व माना हृमा १३
गत ॥ मद च ला स्मिनैः मा यम समर्वम वकस ॥ पितरैः कृत पूर्ण दिक्ष मृतैः ॥ अतु महर्षिः पुत्र कनम माता राजा व्याधिना मन्या नो नर्थ । ध या वामा लक्ष्म लब्ध पिता या यो मूर्ध सृत ॥ नूनं मम पिता हृद्य
मैर्या ना स्विव स्मृता । उयकिं ध्रुव श्विमी स्वहा म्ले यदि च स्व स्यपूर्व कृति । कृत या नि इमूत्य सानैः मात यसु कुतन कृत ॥ यमम नीत ज्ञा सा ध्रुवकृत ॥ ही कृतं यत्नि मार्ग नि । स्या यम स्या स्थिन्तावैर्थ पूर्व स्य च वा स्तन्थि धीमत ॥ थवं
मनार्थ नमा व कृतं नाम ता तव म यज्ञ ॥ यैः दृष्ट पि ह । नाकाला नह यतिर्नि हृत । नियनी । यस्य या वा नृ याहि य जीवयमे ड यह कृ म । कृम यित सभा ता ता ज्ञ स्थ । धर्म हृत नीव ॥ यादी यश्यु पयद सदीयामी
गतिर्धर्ममा सा नूनं सा धर्म निष्ठा ॥ धर्मात्मा साद्य हे वसुल मल्लोकयाला यमाना मत्रकृताना मगुनूपूर्व म । कि मत्र वी स्नस मा न ॥ पितामह उवाच । अथ नृपस्य पुत्र स्थिमै दिव्या थीमसं दनं धीमनीव ॥ सर्व

नृपस्य नर्थ यस्या उत्तमह हि । ॐ किं यस्य वके कथी रत नैवा स्व मवदीं । राजपूत महा सत्व तव । सर्व मलं भवत्स्नान वन विमादं देव कर्तुमर्हसि । मानद । यथ पिता मम धर्मात्मा यज्ञ्ञ वा ना स्वि विगतम
पूनम रवि हि अश्वा मि यज्ञा वाय पिता सर्ग । राजपूत नाम सहस्रा सोपूर्व ॥ पूनर्व स्व व मा ॥ विलम्बं कृत्वा निर्धन्नं ता सया गतं पिता । ॐ देवयपि तिमे वो छ । भूपत्रा राजा दिव्यं गत ॥ पूत । लोको भ्रमित कः ॥ कालदे
उनि पीडित मम । सिद्धार्थ कृत वा नाम यद्गुरूं याग नव ना ॐ । निष्क्रम्य मय शार्दूल सी नयात स्नाल न न सं ॥ स्नैत स्निम सा दार्थं दिव्यमी या पि ममैकथा । विमर्दं व दन । वदेव कृत्य ॥ पुत्रक मात वी ॥ कृत दः
नीन मा ता मः ॥ किं सर्व या ग मा व नै । स्वेदज्ञा सह कत्मार्थ्य गमा सी लाल स्नात न व । ॐ मिय स्य पूनलं न के कृत्या पूत म व वीं ॥ ॐ देव यार्थ नै वाक्य मथिये प्रियं मे कथा । स्वा वय कृते त सं वा ना गतामा म
ॐ गा व सं । पितृ स्नि या गन सहि सावदं ज्ञात सत्ययत च । मया वय ज्ञ कृत धमै व म आम ॥ पूर्व वाक्या गाव नैः । स्वर्गतः ॥ पूत । लोका कि स्नूस्य वादि शाये यि ता । सरसा व कनत स्या माह ॥ योगाि नैः कृत ॥ सर्वं
नयु हिम स्नि कृ यसु मा स्न व वा निदं । कृत नृव स्तनध नै हृतं ना मलधीमता । कृस्विदा भाव निर्वाण राजामन वि हि स्मित मक ध्रुव यसवा नां धर्म नैः कृत वा यहम य नासी स्य पूना । पिता यु
मह्य विवा सित ॥ कस्वि वायय कृतं न ना ज्ञा वा मलधी मता ॥ यत निर्वास्तित मश्री मा या ले ॥ पियम या पि मत । स्त्रीयाय त्या दि दर्शिनं या केकथी पूर मवदीं ॥ नत्तलं ध्रुव ध्या मा मृन स्वकर्म स्या पय
कृ या । स्नि उहा उत वाय त व ता यम हा स्मम । न नैः सकय थ स्त हृ मूरायो तिकमा निनी । नत स्त्रैदानं नत नम कि स्यि स्निं ति कं कृत चि ॥ न यैव यत्य वा नानि मन मा पि प्र धर्म यत्र । नीलवा । यार्थि

कानामाविद्याप्राविजित्विद्यश्मनर्धिविम्बहासत्वः ह्नवान्यायमध्यचि । जनधर्मान्निनासाकः ह्नत्रायमनूतविजिनमजूहिमक्तायामक्षुवाजाग्रोवनाश्रुयदाहवजनदाजहामयायूतङ्का
वायनमविनूयं । व्वदर्थयाचिमावाजायोवनाग्राहिषयनं । वामस्यववनवासेनववघाहियेचव । जनेनिम्वाम्निमावामः यितानजनवादिनमसवायविवनाजोमः यितु धर्मज्ञायमव
नैगनङ्हुं नश्माह्वं सीदियालक्ष्म । लेनव । नमयव्यन्तिये यूतं यिमानधर्मद्वमेलः । यूतलोकयविशुनः यानां ह्लाह्ना चिविनाः त्वत्रिआर्थमयाकर्म्म हमनद्विन हिंहि । यस्माईउनसेयत्रे
वामःप्रवाजिमावनं । नद्विथागस्त्ववाजासीयूतलोकाकूलन्द्वियः ॥ हुं ह्ला ह्ला मन्यविलक्षुधनवाजवर्णगन्धमनुहानस्वर्के मार्द्दूसहल्लेकनूमव्यमे । मनानदयम्निजानीमेमवामितक ७४
र्खल । सयूतनीयं यचिन्त्वायलोकविधेवतिलुग्रमूस्वः मम हाः सः हुः स्वावाजाममनकूलेलमामानमम्निनहिमयश्च ॥ ॥ श्रीमत्तीवामायलेनुयाश्याकालुकेककधीवार्धनामस
मेस्वानजा ॥ ॥ ज्वावविनवैयजाजवाचविवाम्निमी । हवेमाहुः स्वसेनकामामनयूनमवधीन्यामेनाजुहुंनयिन्त्याकेकयनयकाविनी । यचिहांकासिमधर्मनन हितयायनिग्रूयो
वाक्षलोहायामीनालेक्विवृयाश्रुनयस्विनं । गवामिनिनयंधाये सर्व्वथीनवमेनक्षुत । यायायायसमायावनिहिंलेहनईथातिनि । अचितेवाय्लाहनर्गडेनिनयमिकूल्नि । यहंहाः
निवर्यकस्मादहमधनूयानिनः । हादल्याम्निनजीसाम्निलयामानन्नैनमयान्य ह्लाधहमयिप्रानाम्बहनेनसूखिवीहवा । किंनूनयहनहनंकिंवामेनमहासना । यथामर्ल्लइतिवाम

अहत्यमूलादिनीत्वयास्तहाहहामयिथायावधमूहहायांमकूञ्निनी । वामेमाश्रहनयिन्त्वायकियाधीर्विद्याश्रय । मानस्वयेउकाकोसामायथाधर्म्मयाभिनिकेकथिनवकेगकृहई यूतविनाहनाहमा
हःश्मनानिनग्रूत्वयाहवाश्रुनुतयाय । किंमवाश्रमना । नेवीदश्वायननालया । विषहानयामयिताजाविकूसमूनस । जोविमेनायिमनाथः कश्चिजानमकूनभवहल्येनयिजाहिविहानाय
विनय । कनक्षत्रीहक्तनाहमाश्रुंयाहमजक्किमान । हयशययिमेन । किंलानिहेवाश्रयमूह्नितु । नथायिनसकामांसीकविथहईघानिनि । मनिमिहेयिनायावेहल्लसाहविथयाजिनमतजियामाव
नेथेववामाधर्म्महर्णवनः । सूहायायथेत्वयामूहिन्नयामयिनियाजिनमसूयायःथायसेकस्यहनाहसर्व्वथालयाजलेन्नाह्विनिश्रद्धायाहुःश्वहुःश्वेनियानिनं । त्वयायर्किघाहयिलाना
मेहलानमायसे । कलस्यास्यविनानायथिजामहूम्निलहहना । वोकालनाहिदुकिमींयिनामनावबृहवानू । श्राद्धमाधामसेकल्यावाङ्गलनेम । यनाञ्चनथ । यालीधानविमवान्निमहुल्लैवृतियाविना ।
सूयायः यामसेकल्यं सत्यसीधःयिनामम । कनयिनाविर्येश्यायेः यूतन्वविथाजिनमनन्येवमहाहा । मेमानामथाहवमालेःमवाजिमावानानाजूल्विहलोनेवमम्निनमथीजेल्यावमूनिजायपूत
लोकनयीतिना । हज्लवेययिजीवमांत्यायाथिनाहम । नत्वेवनयवाजनजजाजानिमनाकुवे । मयावत्वांयायहलैआसीधायवननकमा । वामनीकिलकल्यानमकल्यानानूयधर्मसियथा
सयासाधूहसायामःश्यवाजिमावनं । मानवीयायथांहर्किवामहूयिहिवर्णन । नस्यप्रवाजनंयायकिंयन्ययाहनंनयाय । यिनर्यसामूकिमसेवामवाहहवहासि । यमकार्यहनवमीम

मत्वमयलक्षनं। यथामाताथम ॐ श्रूकोन्याथमर्म्मदर्शिनीमत्वयिरुक्ति यत्नीश्रीत्याहगिन्यामिववर्ल्लन। ऋयकस्मात्त्वयानार्थनस्याःपूजाविद्यासिन॥ दुमयेयास्त्वमा स्मानि दृषिमाहन्नानेसंया। ॐ नृदीप्ति
महो। माननमयाधीयायनिश्चय। वनाथवामीश्वराश्च क्विंनामभूहर्त्तकृतं। वायलाहात्तियाउर्द्ध ममसर्व्वनलक्विनं। यावेममाश्रि धीमनत्वमवंकृनवत्यसि। नमृनयूत्वयायोधी मदन्तामम विरहं। कानक्किं
ममकेकरिव त्राथ्री कानयिडमह॥ नमहर्त्तान नेॐसे वाग्रेवाजीवसावनी। नक्रश्रावाश्रिनश्चैव निर्विमर्नूत्वविर्यथा। ॐमीनाशुधूनेउर्ज्वीमसर्व्वयोयिकावहन। यस्याधून निवासश्री कथमूढाहुभूसं
ह। कालक्रि नशवामनविनामाश्वाईयलाशिदुं। लाके त्वर्यमपिपाप्नुममवमद्विधयवा। यविद्याननियिनकामीननूवृद्धिर्नवमम। त्युडयमत्यनाथस्कामाहवद्धे कर्वत्वथि। यदान्तत्वाविद्याननियिनामा
मीनयविसृडा॥ ॐ श्रेवाहत्यडयंत्वीहयीवायायेनिश्चय। ऋधर्म्मोवायन श्रीवममानर्थनयावेहीं। उविनंनःकुलनाॐ ॐ ह्रसीवाक्षिययवनं। ऋवेद्यःपिहॐ द्वहःपूजाजानक्षिवक्लिकिः॥ यत्वि १८
सिरुमिर्द्धहकक्कूलनाद्विषिनत्वया। मामतायूलभूद्विलभनिमिर्कॅवाश्रल्नूत्वया। कृसमहक्तिजामायाःसहलवमि यामिक। वृद्धिनमासमूत्राकथंनसद्विनर्हिता। नैवकामंकविद्यामिनथाहंया
यमीहतं। यदर्थंजीविकाक्ता यमाडकृ विश्रियेहतं। ऋयतःयमिनमूर्द्धिममलाहादिदेत्वया। कस्मादकानगंकलीकविद्यायायनिश्चयं। निवर्हस्यिशीनकृत्वावनवामादहंत्वया। विज्ञायनवसा
हली वामेजानवमगऊं। वस्यामाहवनयानन ववर्षाणि यंवय। यिद्विश्रियानाऊ उथनामानाशूकविद्यमि। ॐ सवमूलान वनामदत्यावगर्हयित्वाजननीं सुधानी। लोकाद्वनःसत्वन

दुन्ननादसिंहाययथयर्व्वनकन्दनःसः॥ ॥ॐ स्वायम्भूवीनामायतेयाभाकाक्षकेकयीविगर्हीनामसर्गः॥ ॥ अथवीमगर्हयित्वा तौ मातवीवकमक्रुदा। दुःखनमहताविष्टःयूनमवदमववीतयायस्त्र
तावकेकयिनूनंसलिवयऋय। क्विमयवाधुवामनहर्त्तावायायनिश्चय। अवीकृत्वाहावार्थं सर्व्वसेवविगभुत। मामत्वयेनहेलाकानायवःकुलयोउलि। सर्व्वलोकाश्रियंदद्वाकथंकर्म्मनसक्रस। कथं
थावयनहुमिविनंत्वीनहं घाकिनि। कथंमेविषिकत्यानयिताममहात्मना। नवायवाथःक्षमाच्याय सर्व्वलोकहाउष्ठिनःस्थ कथंलायाग्निनानननेदन्यासि महात्मना। त्वद्दोषदूषिमाहंवानदद्यःकन
ठहुना। श्रालेत्विंयाशिनाहर्त्ताम श्यवाडिनावुनं। ममवाश्रय। लोमूर्द्धियाभिमलूत्वयात्वया। ऋस्मायायोत्सभूता नमन्यवासिनर्हिनं। लाकानायविवर्हियि निवयास्वाहविद्यसि। माहनूयमम
मितनूनंसवाउकामिनि। नमंहमहिहाद्दानिर्घ्टतेनर्हंघाकिनि। कोनत्याय सूमिजावनथ यामममानवःस्वयंकयाथायलील्यावयानिवयतय। नत्वंकवयनाऊत्यदुहिता विधिनात्मनःश्रानह
सीकाधिकत्यत्वंदुह्रितःत्वभूयागता। सर्व्वलोकश्रियावामायत्वया यायनिश्चयं। एवाश्रिनःयायनवाकान्वदव्याह विद्यसि। यिउत्विंयानडूःखमहमासादिनत्वया। हानसीमहिनेव सर्व्वलोक
विगर्हिनं। गुहत्वतावांमहर्त्तकोनसोघृतलालसी। विद्वर्स्मावसहीकात्वेकृत्वालाकानवाप्यसि। नाहिजानासिवालयेदूःस्वयूतविद्याननौयूर्त। लोकूनकोनत्याययमानविषयाजिता। श्रीगुसपसी
आर्याहुःसूराहृदयसंतवः। नस्मादनःश्रियनवः सूराभ्रातुर्न्नविद्यान। यूनाक्विलनवामानामूवनीसूत्रसमना। कालोप्रमादहनालश्रीवहमानोमहीनसं। दद्धायूतोनूनाहार्ल्लीसीदमानोमूहर्म्म

६२

हृदःमामिस्याबूदमींद्दष्टुधर्म्मात्मा श्रद्धयान्वितः ॥ आकाल गच्छ मा भयस्यामूत्या अत्र विदवः ॥ नाका धूःय मिमागमात्र हत्ती मूवकिगैधिमः ॥ मेव प्र विदुक्तिःस्य पद्म तमूदी भूथवा सवधमूवतिंधीजलिर्वा
कमहिगश्यदमवबी ॥ कश्चिन्नरयमस्माकं कृतघ्नि दनुपल्पमिःयन्निमिकंदूःस्वार्लमगाक्तिशुद्धवीदिभ ॥ ० ॥ स्थूकामूवहीमनेनकलामिनमकूजसा ॥ यथुवावमुद्दःखार्लं पूनेदवमिदवयमनवाहृयंयुय
आमिकूमच्छिदमनाधियः जूद्दा शिमोदलो पूजो कयलो नकेआदि शि ॥ प्रमायदयं मिदुना ॥ अवहमानो महीकेल ॥ दष्टुपूजो कदाथार्लं मोदमानो मूढः मूढः ॥ श्रूं गयुर्हीं गसि हमा विमोमद्दयाद्धवी ॥ -
दष्टुविवर्लं गद्दःस्वं नाक्षियूजान्यवः पियःअना मवबील नः नक्षा दवानामीयवनस्थलः ॥ नसै नायस्य यो कार्य्या गवामयहि निर्द्द्यः दीर्घकाले नमकृष्ट्वा ॥ निर्द्धका हियाविमः ॥ ० ॥ क्षमसाका ५३
न्यनमान्यांयंक्ष्वः कर्म्महिर्द्धिमानः नात्तुवबीलनाव कागः यद्रूः यत्तमाः क्षिमाः ॥ ववर्द्धमानू धलाकं नघः यायूल यावर्द्धं ॥ शावः कृ नोतु कायव ॥ धांवंधयुमानूष ॥ लाकंल विशामिनयः मृदुःयाय
लयावंदा ॥ यादूर्वलेयमिधान्के योधिमं वायिनिर्द्दयः वाहृयिश्चन्ननञ्चार्ह मलोयुःयायमाथ्यमि ॥ नकेसमर्थं बलिनंयूपूयावाहृयिशामि ॥ असायुयामसंयकंनसयायमवाप्यामि ॥ नक्षाधर्घी
लुपूथामिःक्षि यमानैः कथंवनमनाकृया याथात्ताकांक्षयसाथथदूर्लहान् ॥ एवमगत्यूनादिदृः धात्रा कर्म्मगर्वोद्विवि ॥ तस्मा भन्युर्नकार्यक्ष प्सर्वैन क्षा ॥ लक्षसर्ने ॥ ० ॥ थर्वे ॥ ततोविकवगीगर्वी
मामामूगच्छियो ॥ यस्याः यूतसलसाक्षिवकृत्यामभ्रहीज सः ॥ विलुयस्याम्लव कत वयूजामामाथिवाक्षिमः ॥ पातेः शियमवः साश्च कथं ॥ सावनूदुःखिमा ॥ यश्मादनदुर्द्धेकथिकीनन्यायाञ्च

येभिमं ॥ दक्षवीनमूनः ॥ नाभिदूःखंधूतवियागजं ॥ तस्मान्नमयिके कथिदूःखंधुस्यहवाययी ॥ महत्प्राप्यामिदूप्यङ्गनिर्लयंसाक्षमाथिमा ॥ अहं समूविकृतादुःकविशायितुवववा ॥ भूस्यवायम मालाक
कविशाभियमार्द्धनं ॥ ० ॥ किनागरूवावधसलसावंधनंनमः ॥ निः न्यथ्यामूदूः स्वनकानूश्रादलवनस्पयापसैवक्षमतःनिथिलःक्षियामूप्य मूकमस्थाक्षवनस्थवतुष्ठावहृवहमीयकिमानूयाभ्रजःभ
वीयनःकातुनिषास्व कृथा ॥ ॥ ० ॥ इति श्रीवासायादोषा अवदाने उडवनविलापो नाम सर्गः ॥ ० ॥ ॥ अथ कदाचिद्गोवार्ल कन्दर्बाम क्षधानूजः समगमूकं ययामासनकृष्ण हवनंकथाप्र
वाप्रवाजिकवामंकृजाकदिनयागया ॥ केकयादूःखलोकार्लं ॥ नक्रुधाथायुवीदिदं ॥ विद्वानार्य्यान्नै सयुमर्बहृनहिमवनः ॥ क्षियानामवर्नेयामः कथंप्रवाजितोदवलःअवसवीर्याक्षमी
यन्नालमूलोलश्चिवर्द्धनभकिनाहि थिकवाञ्चामंद्दल्वायियिद्दनिःयदः ॥ पूर्व्वमवसनिअक्षावाजाधर्म्मार्थदलिनालक्ष ॥ लेनयिमामूदः कामवागवनंगनः ॥ ० ॥ स्पर्वेशायमालेथनकृष्णतस
लावूकः ॥ आक्षानंहलदाकृजाद्दजाहवनहयिमानन्दनादुर्नूदियगमश्री महाहस्थिनहृषिमा ॥ मखलामक्षि ॥ जुवयिनक्षांकंउवीयथा ॥ समीक्ष्यानामकाद्यक्षाहृनेयायथकाविशी ॥ गूहीवास्व
पिमंकजालकृष्णाप्यावंदयजः ॥ अस्याःहानगमावामान्यस्कंदरूःयिमावनं ॥ सर्वीयायान्नैसायकृत्रूषोर्य्यथामनि ॥ नामथासगमोद्दष्टानकृष्णामकृबीनदा ॥ वकर्यविनिसोवाखि
वगृहकूबूधान्वितः ॥ क्षालैयावदनैवास्याः पूनयामासयोर्लुना ॥ कृक्षःपूतवनासर्व्वान्यथुवावबूधान्वितः ॥ मयाहृमंमद्दहदंधजाहृतांभनयथायितुः ॥ नामिमीमकृवीकृजानथामियमसाकनं ॥

नरुघ्रनेवमूक्काउसर्वाजनसमाव्रमा।गृहीमावक्कलकूज्ञानूनेर्गृहमनादयउ।नरुघ्रुरुनसीनकुक्स्याः८सर्व्वसर्वाजनः।क्रुद्धमाञ्चायनरुघ्रमा८यलायक्वसर्वगः।आमलुयनयेवार्ल्हःक्कायविज्ञन्
क्व्या।यथयमतिसेक्वानिश्लयान्नःकनिश्रमि।मानूज्ञानीनवर्णीयदीनार्लनाथवेम्ललीःकोनम्यीनवर्णयामःसाहिनाद्ययमायदी।मुवायिवामकात्राकुः८नरुघ्र८नरुमायेनः।विवकर्म्मर
नीकूज्ञोकानक्रांयघयिवीनलन्।नम्यावितृथमानायामेथमायाक्वमक्वम८।यिर्वेवदूविधेरोउघथियांममकीयमि।जेनरो।घुनसीकीर्नुकुञ्ज्ञवाजनिवंदनि।वनाज्ञामवकावाद्धीन्मवदेगन्
नेयथा।मवलीवलवक्कायोम्हीलायूनूयर्मरुमक्वेकयीमलिनि।द्विन्यावावयवूसंववमन्यूयामस्रोउर्हकम्मकूलनुयकावंहनं।श्रूमलुीसाद्यकेकयीकथंलीमाकुयिक्षनि।यथा ११
नायक्वमवाज्ञानघूराना।ल्मनायनः।सपाध्नाहयनिष्ठानेयायोयायरूलादये।मूलेनल्हमनुथल्हक्वल्हयकवस्यव।नम्माकूकुनिदयन्वंभिक्षामियमसादनी।श्रूयद्वाथामरुदूःरवम
घवामवियागङ।कूकूल्वयिविमाजुमियायथायानूकाविनि।ॐह्यवेपवूसेवांक्वेःकेकयीनेनेनिर्ज्जिना।नरुघ्रुरुयसेविमायूवंलनलमल्यगः।नेयक्लुरुवनःक्रुद्धनरुघ्रवाक्वन्
त्रुवी।।श्रूवधासर्व्वहनानोउमदाक्वयाणीत्वया।रुयामरुमिमीयायांकेकयीलयमवहि।यदिवामानधर्म्मालाद्यङश्रीमोरुयामिनि।ॐसामयिदमीकूज्ञीयदिजानानिनायवःत्वां
वमीयेवधर्म्माल्मानाहिसेकावयिश्वनि।ॐनिगध्वनेकुलानरुघ्राहवमविंमे।सीयकुदाल्मनावायेमानूवावबमक्वना।सायादमूलक्वेकयामक्वानियघामरु।विनिर्वसकीदूःख्वां

र्लेकनूर्नविसलायय।नरुघ्रविक्वयविमूरसेल्लसमीअकूज्ञोहवनस्यमाना।नमेःसमाव्मसयद्यार्लन्नयीक्वेश्रूांरुयार्लमिक्वानूवर्ण्णा॥ ॐत्यार्थश्रीनामायनरूयाध्याकाण्डेकुज्ञाकर्षदीनामद्वसर्गः॥ १७॥ ॥नर्हयत्र
वज्ञनमीदूःख्वन्साकाक्वलयिद्यः।हवमावीजुनरुघ्रमिर्दवनमवुवी।जूनीव्यवायेभूनूयेःश्रूखदूःख्वाक्वयमनः।विकर्षत्यवनेश्वूनेहूमाक्वःमूखदूःख्वयाः।श्रूहाहनाक्वावलवाच्यनसर्व्वयुक्तोल्विमः।मूख्वाहःख्वावाने
वाभावलाद्धःख्वनियाज्ञिमःश्रूतन्मक्वनियेयूनीहर्द्वयमनकाथिनी।कोनल्यामाल्मसहिमायथायथ्यामिदूःखिनी।नहिमेवायनस्यीयकर्म्ममाजाहानमम।यदिदेवसुयथ्यामिहनाक्वहानमवहि।नरुघ्रकीपूमोच्वा
यिक्तनाक्वलसमाहिनःश्रविययिदिर्दप्रायेनवल्यान्महिनाहिनि।मानामवनरुघ्रकेकयीहर्द्धघामिनी।ॐदहनवनीयायेसर्व्वलाकविनाहिने।ॐदउममरुदूःख्वेनरुघ्रहदिवर्लनं।किंउवञ्ज्ञमिकोहत्याम
निमाउविलज्ञिनः।ॐमूक्वोहवमावाथ्वेनरुघ्रसहिनक्वदा।वूआदार्लघ्वनमाञ्ज्ञेःयूवयन्निवमक्वहं।नम्युवूल्वार्लनादेवरुवनस्यमहाल्मनः।वूदमीनहक्वोनल्यामूमिनामिदमववी।ज्ञागनःकूवकर्म्मायाःकेक
याहवनरःश्रूनः।नमरुदूदूमिक्षामिरुवनदीर्घदनिनि।ॐमूक्वोदूःख्वसेनपाकोनल्याकवूनवेयः।उमनक्वेरुवनेदुस्थूमूमिनामहिमानया।मवायिसहिनःएमानन्नरुघ्रसहिनल्हवनूं।उमक्वेदूःखिमीदूदू
कोनल्यांस्थनिवगन।नमाहवनरुघ्रीकोनल्यांश्रञ्जुवाघवी।दूवादववनमाहोरुयार्लवहिथमुउःमेथविष्ठकोनल्यानरुघ्ररुवनोनया।यमीनागनदूःख्वनवूवोदहनदूःखिनाउवोउयेनेधुनलमूक्वायन
यविहली।वूदमानमिदेवाक्षकोनल्यायवूघाकवे।दिक्षाकवोञ्जकामनयापेवाञ्जमकन्दके।केकयामस्वयेमाजाकेमवनानिज्ञायिमे।उउञ्ज्ञीनवसनेयूवंमनयकाविदी।कनयूक्वाथयानगनकेकयीहन
नी।क्रिपेमामयिकेकयीउवाजयिउमर्दनि।मउमदयिनःयूज्ञानमानामःससञ्जनः।श्रूथवाल्ययमवादंमूमिनासहिमावने।गमिक्षयउवामासीगनःसीनासलोयवानू।कामीवाल्लयमवत्वेगउमानय

यूतक।गयस्कथनियशसों यूषाम पिउमाङ्गया।ॐ दत्व धनमन्नाक्षीचतुव ह्मवलाच्चितं। चिताविस्ष्टं कल्याणे नाङ्गीयायूष्मरी। श्विमं।ॐ जिलासयमानाक्षीकीन ल्यीरु वकस्कदा। श्रीग लि ४ युक्तनावाकू मिदयश्रिनमवबीति
श्रूार्थक ल्याद्दजानके गर्हसमाम क्लित्विषं। विघूती हिममथीतिं क्लिबीजाना सिनाघव। हमान्स्कार्थ नीवूद्धि श्रीरु ल्यदूना मनः। मनु मं धः सर्मा श्रेष्ठाय श्रेयार्थं नुमम गगनं। पुत्र हृदयन मूर्थनूर्थं कुय लिमह
तु। यादं मद ल्यालूषी गर्ते य श्रेयार्थं नुमम गगनं। उ क्लिष्टः मसू दहुमममणिंबोद्धलमवय। मनिन्दतुनु नूं हेवय श्रेयार्थं नुमम गगनं। मस्विकायाँ श्रुगा रो थीं मनसासा। रिगन्धमी। गर्नु यायमकिः यायाय श्रेयार्थं नु
मम गगनं। कान थि ल्यामह कर्म्म रुदुर्ह ल्यानुनर्थकः। अधर्म्मायः। मन ल्याम्नुय श्रेयार्थं नुमम गगनं। सद्धर्म्म ल्यचनय श्वित्थायज्ञं श्लो यज्ञं दक्षिणां। मविर्यन्नूयमा यायाय श्रेयार्थं नुमम गगनं। रुयदिः धंसम्म श्रान्दं धार्म्मं
गर्त्व नधीममा। मनाहेयत्तुनद्धर्म्मं य श्रेयार्थं नुमम गगनं। दयमा किथिरुल्यानीमा मायिताल्कृत्थेवत्र। स्वयम धर्म्म निर्वा श्र य श्रेयार्थं नुमम गगनं। यायसंकृतं वैमीसंव्यथासा श्वाति निर्द्धनः। गुर्न श्रेवजानाकुय १८
श्रेयार्थं नुमम गगनं। मानर्वे चितवं बुद्धमाया र्थं मति थिंकथा। मावमव्यतुद्र श्लामाय श्रेयार्थं नुमम गगनं। माव ल्पास्वार्थं नीवूद्धिंप्र रुजीनकदायन। मश्नूमामय लिक्षुकय श्रेयार्थं नुमम गगनं। समीसाफास्तर्गी
कीर्त्तिः मरुश्चाकर्म्म दाघमः तु धमों श्चियमयेव य श्रेयार्थं नुमम गगनं। यत्यायंव ह्मरुल्यायाँ यत्यार्यं कयिलावधे। मनल्यायमवाप्नाकुय श्रेयार्थं नुमम गगनं। विक्लास घातिमीं यायं यायंवाकुवृधा तिनी।
मितदूरिवयत्यायंनत्या यंय तिघश्वनी। उरु संपूर्ण्यामस्य यत्यायंय विकल्यामं। मनल्यायमवाप्नाकुय श्रेयार्थं नुमम गगनं। पुमाचिमनम यायंयत्रेवा नृनवादिनि। नदाप्राज्ञ ह्यनय ज्ञाय श्रेयार्थं नु
मम गगनं। उ श्र्यमहनय ज्ञानरुगामवू ल्यारुयतोकर्त्त यीना हिजानाकुय श्रेयार्थं नुमम गगनं। अभवसमितिय धर्म्मसं श्वमूर्नायायजीवकुरु काकीमि ह्यम न्याकुय श्रेयार्थं नुमम गगनं। श्रयाहीकार्त्तिकी।

माघीमिथय श्रीर्थसंमकाम श्रूयद्यानवकायाकुय श्रेयार्थं नुमम गगनं। कौन ल्यीयूत ल्पाकार्त्तेय मियूत विमाहनी। एवमात्मस्यामासकृवनादूःखकर्मिनः। ॐ ह्यवं नयथंरु ह्व ह्रयमानमकल्पर्ने। ह्वनंदूःखसंनर्के
कीनल्यावाच मवबीति। क्लिउदृशावधर्म्मा ल्मनजानामि ल्यामकल्मषं। नयथनीद्दस्नकूर्व ल्याल्पनूयवूनहिम। द्दश्वासिवामसरिनःयूत धर्म्मा दियालिकः। महवामनधर्म्मा लिस्थीर्घमायूनवायूनि। भूयित्वीसहिनाम
नयन्येयेल श्रूलेनव। नीर्न्नूपुकिङ्गमानूर्न्नं गर्न पितुबकल्पयं। सर्व्वथीयूल्यकीर्त्तिनीवाजयीनो महात्मनो। याधूनायूथकीर्त्तिव धर्म्मं श्रेवाहमंकूल। चतुर्द्दशमूवर्षपू गन्धविनिसूदन। नामेशीतील श्रद्दीचदया
सियूनवागनं तिलदाश्रीनवीनग पितुक्लिहसियूतका। त्वच्यनीदंमहाहर्षानसी ह्वदं त्वमहृति। धर्म्मलेमाःप्रज्ञाः यूतयथानरुसिकल्कूवू। स्वर्गजापियथ वोजानुष्य नरुथ पूवू। पितुर्ह्वियानर्द्दूःस्वना
मत्यानहनं नथा। उल्लू श्रू पूर्यवद्धल्सउद्दी कूत धूवेंवरु। एवमाल्सयमानमत्यरुवनस्यमहात्मनः। लोकनावसमाञा ह्व वहूवललिंनमनः। कौ नल्यायाविलयिनं एल्याचकनूल्लाकर्ने। भाहमत्यानमहूयारुवमा।
दूःखवमाहितः। मलेचमानः य विभाधवधर्मीलोकलोलसः। गनदार्लामिकनूर्णविलसायकूलस्थियः। चिनदेवागर्ने थेवसर्व्वागरुनमानमः। नस्यलालस्थनाथ हर्षजगारुरूयवविः। एवमादीर्घ
मूर्धूवदूःखवाहल्यमूहूर्मूहूः। निल्पसावर्षन्तनवद्धात्यवर्त्तनदूः। स्विनधमानिरूयीवीज्ञ वलपू धर्म्माश्चिजानथाम लिवनाशुभञ्चानयालयं नविविशुः। समभकाहीनं मरु सुयू लिमंन नाज्ञा। रु मार्त्तमर्त्त्य
तिधूर्न्नूनर्ते लोकर्ने मंयथजितं धर्त्र ॥ श्रौउयाविनल्यायविघसमकाद्धिसेरु कल्पीरुवंसमीक्ष्यं ॥ ॥ ॐ त्यार्यश्रीनामाय ल्ला याश्राकाल्लुरुवनहाय ल्थेनामसर्गः ॥ १८ ॥ ॥ संप्राकदा

सर्वे कुष्ठहीनवर्णा कृत द्विय हरनमान नवाजा त्वां नहीव सम सिद्धं मम पितु क्षेमं ज्ञानो नाम युवराजन मत्य । केकयात्या धनूद्वाया यम्म त्यागेन यीति तः । सा य लब्धा स्य दुःखस्य सागर स्य वन कु
यं अ कीन दुःखनस्य न मे नेवा नन्द कमा । पितृ येनाम हं चहं माध्वनी । न वि विकयत । जामी त्य मम संभूतः श्या व्य द्विय ः मूनाभिव । क श्राम कौ जनन्याहं य निम ः । लोक सागरं । मन्त्रि मिले मूला राजा नाम श्राचिवि
वा सित ः । अयाय ः या पमी नीमा माता हं पाय व क या । स कि ना श्चेनु मूर्च्छां यीं य थ म मृत्ते । सो क नं । क यापि ता य ना ता च नूनो पूर्व मि दं मम ः । आ त्व कृ सू व वृ द्ध श्च पिता माता च लालितः । कथमयं विधं दुःखं प्राप्ता
वा सि दुःखस्त ः । मा हं पिता स को ग्नि वाव में नाम ग वासह । कूमि ष्या मि विना का नी ना ह ऊी वितु मुत्सह । अन्य स्य यदि नाम स्य पाद मो तु हत्तकालो । सं वाह यवन स्था ह नम नाश हु ने हव ॥ तु पू धमा न ग्र जलोव ६२
नेव श्चेन जी वि न ः । अद्य मार्य स्य वस्या मि न स्या र्थे या ञ्च मा हव न । नामह कि विनो वाह मिक्क मि ति द । नेमपि । वाद्य कूनाम नू स्थ ष्ठ राज मिच्छ यम श्रुवं । आर्य नाम स्य यू । लुच्चु स ह नी या नू लाय नं । यन्मया
म भू रवं लोक कान । स्य त्यि ह विया गजी । ॐ मि कृ त्वा च रा धर्म्म कं ज न स्य महालन ः । अमात्य वं भू वन्न्यं ग्य दुःखार्त ह । याव कुयन । न मवा क्ति नमा ह मिं यन या । त न ना यं वी । वि त्वि स्य कर्मू वाय वं व । लं श्मा ह न
या नृ षि ः । अ य ल मू रा ध कि मान य ः सं मा कू पुत्रि यया मं । धर्म्मो ह्यव अका थी लि न मा कूः ः य च्छि तीवृ श्रा ः । सर्वे धे र्य मू या ष्ठि त्य विधृ य हृदय यञ्च नं । क दुर्मर्ह त्यासं भूर श्मा न कर्यि क्ति यीं पितु ः । पिता मय कृ तः
लोका कर्मा नाम युवराजिनं वने । ह्य यना न म प्राणा नि मि ष्ठं स्य ह्मा दि वं न त ः । अनाथ ॐ वधर्म्मा लालाक नाथ पिता नव । निर्द्धि श्य न कथं नाम म न स्मान त्वया विना । ॐ स्य मा हि र्वि सा येन हे लं ल्छा श्रं स नं

पित ः न स्य निर्ह्व न नाम पितु स्के कर्त्तु मर्ह सि । यवि नि नं त्वयमा हन्त्वं माय । लोक मन ः कथा ः । अवधं त्वं ता विना यर्थ श्मन । लो यारव द्वि थे ः । यूनू वा गन विज्ञाने श्म त्व विर्क्ति र्मर्द्दा मति ः न स्मा स्ती कुर्या ल्मा नै मा हृ न्नन नवा लि त ः कं
कूकु व लवा त्वा लं ः नत्कूक ना मिवर्द्धि तुं । सर्व्वे न्न हायम स्मा ति त्वां न । लो पितु मर्ह सि । ह नं स्व दुःखा हि हता विय न स ः । कृ अवन काव विवर्द्धिनी गता ः । ॐ मा पितु त्वं म क्ति वी नृ प द्विं तु । न राज पूता हं सि नाथ नो गत ः । अप यस्त्रिम
कृ पितु त्व यथा वि षि श्रुद लि न कृ तं च ः कूना ष्ठि रैं ः । न माउ सं पादय धे र्य मा स्थि तान सी विहु त्वं नृ व ना त्मजा हंसि ॥ ॐ ॥ इति श्री ना माय । लोयाधा काल कं न न ता नू न था ना म सर्ग ः ॥ ४० ॥ ॥ एवमु का व लिष्ठ न त म ः
गो धी म मी व न ः । वलि ष्ठ म ति वी श्रूद भू वा चा त्मन वा व च ः । त व ख्य वं कुव लिम धीर्य मीव मनो भूम । लोक ना । थे ष्ठि न वा मनाथ त्वं म यि क ह तो । कि ते कतन य त्वं मी य त राजा पिता मम । क विष्या त त संस्का नं नव त्रि
ः स ह्रि मा वलं ः । नयानी ह्रद य स्व म श्म कृ ति श्य सहं श्र भा । ह न यं तु ह व कू के राजानं का नजी वि ना । न मा वलि ष्ठ य मू खा ः सर्व्व मनु य म क्ति न ः । अ नय कृ वन हर्द्धू य त राज ः कल वनै । य तु ह्द त न का र्द्धा ही ः स्त्रियाराज
य त्रिय हा ः । त न नं पूज न ः ह त्वा य यू र्द्ध कूं भृ नं य नि । न न ः प वि श्य त न ः स ह राज य त्रि य है ः । दह नं पिनं स्य तं ना म मात्र त्रि व नन । अ म ग त्वा स्व पित नं ह कृ ख्या यह ह न द्वि यं । त्रा राज त्रि ति वि रू ख्यया न धव ली न्त ।
वि सं ङ्क सं कु ः सं ज्ञा तु लक्ष्मा रुप ः स दु र्म्मना ः । जीवन्त मिव सं ग्र ह्य पित नं । लो य ह्य न गा राज त्वं ह्रि स्य ह्कि । न य र व मा हू मू या न न ः न माङ्ग याम स्ता त्व ः न कृ त्य स क्ति न त्व नन्न । मम मा ना मह रमा न कृ ह ना ली ला स्म य त्क ति । स्व
स्य हि त म्रा त स्व अ जि ना तु स थ म । य त ः कू त त्रि सं या कृ म कृ मा अयमी नृ पे । न भू मूर्द्ध श्च या घ्रा य पि नं द सि श्मिय । स्व ॐ धामी म नूपं कि कु स्मा लीना हि हो ध से । नायना अभि म ति कि विघ्न हं राज न्यु सीद म । धनु ः
स ना मा य मा सि ह मा थी उ ठ नां व नं । ल क्ष्म न स्य पि धन्या सौ श्रा मा म मा हि मि र्ग न ः । अ धर्म्मा ह म यू न्यु य मी ए गि स म न्यू मा नू । दुः श्व न म ह मा वि स्त्र ः प्रा ता नि स्य कू वान सि । नू नं य को न ज्ञानी मों म हूं ग ना म स श्रुतो ।

यथा हि वनमूर्च्छनागमा विरुद्धः रविर्को निर्द्धाम्यथीनवसनं नामीसस्थलमवच । श्रीरुक्मा॥ किमपि प्राणांश्च यक्ष्मा राजादिवं गतः॥ एवं विलपयत स्तु स्य रुवक स्यमहात्मनः॥ ऊर्द्ध्वानूयति यस्य यक्ष्मा नृनू रुईल द्रूः॥ रविमा॥ विल
यक्ष्म तथा मीरु रुवर्क । लोकक विनं । वसिष्ठाव दमा । एष्वाजावालि । वृद्धमववीत् । मातृयात नवन प्राज्ञोनेय । लोथामृ हीयति॥ श्रूनु कर्ये मसीमूरः॥ कर्तुं मस्य त्वमर्हसि । लोव मानाहि सम्रहावीधवो॥ मूढ्दद्म ऋथा । यानयकिग
नंस्वर्गधिद्धः यो नन नाघव । एय नं हि ननयाघयूना यज्ञम धर्म्मिकमा॥ हृतियुम्रागतः॥ स्वर्गं बाजायू । एन कर्म्मली । लोद्विनं नैवसयू नर्द्व भूवगंस्यानोघव । रुस्त्वयरुयं गयू । एध यूनः॥ स्वर्गा नित्ययाति ऋ॥ न स्मात्वं वाऊ यूना
उपितृः॥ श्रु रु सम न्वितः॥ नगनार्ह सि स्वर्गा स्वयू नश्चाव यितुं नृथी । सूति । लोकामिनयकाहि पितान स्व गति धर्मकः॥ धन्नो मन्युना विस्मकस्मा हृ क्ति ह माथु वश्वना ये । लोय स्कव पिमात्वकर्म कि न साकहाहू । मृमाना यं सूता
यस्य पूर्यं नामयू वाग माः॥ धर्मा त्मानायका त्मामाला कयथि न यौ नू या॥ यद्वीजः॥ सस्य वक्ता महत्सुवनू । एय मा॥ एवमुक्त्वा वसिष्ठनकता अर्म्माकाविदः॥ यस्त्वा । लोकमिदं वाक्यमूवाच वदतां वरः॥ कुद्ध क्रियरुव ८०
कामौ न थाननदिति मम किः॥ वसर्वा हृ पितृ स्नरुहृ नपी तु यनीवमी । मीलु क्विमाल व क्रिस्तु तु नू हि हि नवादिति॥ यस्त्वा । लोकक विश्वामित्रं पितृन स्याद्वंद्वं हि कै । श्रूनयीकुय थाद्वि धू रुव क्त्मा नृय मतिलः॥ सं च्यात्रिक पि
तु र्म्भ उपर्द्व सरावन स्व वन् । एतं किनृ यति सूनस्या हाविनः॥ सद्भूय मत्रिपू वा हि नं ह्रे॥ सूविक मिववर्द्व मामिनीतेन याभववहवर्द्धनी॥ ॥ ॐ इत्यार्षे रामायणे ऋष्याश्रमकाण्डे इत्यादिवनाम सर्गः॥ ५१ ॥
न स्वीवा ज्यी यमीना यो रुवनं सू न मान य श्रम सू ऋषीवा ध यिश्चाकस्तु भूव मर्धूव स्वना॥ सहसा हृदु न्य कद्दु ड स्यः॥ सूमहात्मना॥ एष धर्मक सू धामं य नैरवव दुलुलाः॥ दृष्टवा । सहूर्य धाम॥ सूमहान्नूनयत्रिव मी
पूर्वी । विश्वाधयामास हवनं । लोकयाकूल मानसं । पुत्रि पि अथ हवनं कृपवाधकतिस्वनं । मा हवाऊ किं वाहक्ता ननः॥ न रुपुम व वीत् । यन्त्र नरूपु न के क ब्या कर्द्व त्यासीकन र्दिनं । सूयन्तः॥ यतिने मूर्द्धमा सं

ना२

अमनागमः॥ वाऊ धर्म्मानूमताङ्गः॥ पितुर्म्भ न द्विनाह तापय विश्व मति नाऊथी वि कर्ष्णो विश्वाकृसि । एतं वसिष्ठ वनं नतु विलपयकं पून॥ पूनमद्द स्वप्न नू नूहः॥ सर्वा॥ । लोकार्जे नृयथा पितः॥ रुवननन ततः॥ सार्द्धं वसिष्ठावदविक
मः॥ पुवि वदनयानाङ्गः॥ सनौमक स्वितु हिनं । लोमर्क रुननं युक्तां मतिचित्तं ध्विरुविनी । रुरुस्याति विरुस्तु नमूधम्मीसहितः॥ सर्वा । तत्रासनवन चित्तस्य या हि रुवनसंदेशं । उयविध्यनतः॥ सर्वा नानयामास मन्त्रिणः॥ सूम
तु कर्मिनि एवं वसू मकुविजयं नया । मन्त्रिणो नैग यां यान्यानां पृथूवाहि नाम्रे । जनौघः॥ सूमहात्मा कृतसमूयायात्स मकुनः॥ सतायौ नवर्त्ते दूः॥ तकुपूस हिनं नया । नमाकुलहलात्स द्वः॥ सूमहात्मा समजायनः॥ कौरव
लाजानौघस्य सतौर्पयहि धावनः॥ नराथ रुवमहृदूस नायीसयूवाहिनं । अूपन द्वस्य कतयायथा दत्त वधे नया न्नृपजनमन्त्रि हि धूमामति नू चित्ता समनन्त स्वविना । दत्त नथमूत । लोहितासहादहव । एनव
नगाजपुत्रा॥ ॥ ॐ इत्यार्षे रामायणे ऋष्याश्रमकाण्डे एषमेतापवं । लोनाम सर्गः॥ ५२ ॥ ॥ समाकुलं जनं नत्रिपू दिग व दिवाकर । वसिष्ठस्य मूवाचदं रुवनं तां प्रमन्त्रिणः॥ एता॥ प्रक्रोनयः॥ सर्वा नागनाप्र
प्रधानतः॥ माऊ सैन्या विक सर्व मादाय समूयक्षिता॥ भूदलि स्वरुवन क्रिष्ठं माहः वालायय॥ पुरा । पितुः॥ भूयथा न्यायं सन्धावं रुविदक्षिनं । हामानसु पितु विभवदवदा सयावरामा॥ श्रु प्रिहाहमूयादाय जावालिपमु
खाः॥ क्रिमा॥ नं धाऽष्टको निर्येना निसीव्वावा थं पितु स्कथा । उयाद्यायात्रन ध्यो स्या॥ पुगी श्रुरुउ यस्क्रिमा॥ उयासनः॥ स व्यविक्षि स वसाव न्याः॥ सक्रिमा न्धा पितपितुः॥ श्रु एनः॥ समिद्धनार्थाय यगंधमाल्यं च पुष्कल मा गं
धर्मं ला निगं धाऽपु धूपार्थं गुरुसं मिताः॥ स हि का निविकायश्चं पितु स्कव लहवि नाः॥ अकुौ नेनविक्षाय यीतुमे । एयक मनवाधिदं । निविक्रायीत्वमूक्ष्मिणा यनेनेवदि नाहुव । अू एनं॥ समिद्धनार्थाय एवमुक्ता वसिष्ठनरुवनः॥ सुः
पू वाचनं । वसिष्ठं वदतां श्रेष्ठं पितुर्म्भद्दुमनं गुरूं । यथान्यायस राज्ञः॥ कवयाहिनया हृतः॥ दैवतं असिमीया सुरशुता श्रमि पितुर्न्मम । वाक्यं तनन न न स्याथ रुवनस्य महात्मनः॥ श्रुत्वाऽगाम यत्रे हर्मं वसिष्ठाद्विज

मरूमसन्मोक्षद्वगमसद्धीनीमाव्रयन्हवमनमूदा। द्मलवर्वहूमियन॥मनयासमूदेकनानालहूवश्चा।नंकस्यवर्गमनप्रिथु्रंतया।महार्गुवस्यायकनखायचनमिवार्द्धनः।मदार्किमाच्यमानक्रुमस्रुधिलयच्छूनतचू
मद्विनः॥क्विर्थेलि विक्रामनयन्कुर्यं।।लि विकानगेमनाजानमसलेहुदूघविश्वमनष्ठवासमायमहार्इनसमाकृष्यमसीदगं।अवकीर्थवमासानदिव्यंपृगादिधूपिनि।मेभवूर्नुं॥मूनकिवि॥दविकीर्यवमद्वसुसुःहवनक्ति
थ्यालि विकोनक्रुध्रुसहिनक्तदा।हावाजक्कासिनके लिनूदन्नार्ले॥पूनश्पूनमनक्ष्मिकुदायनू दिनवलिसाकानेवदिनामयपु॥नीख्रनदीपेथ्या॥लिदिकोयलिगृहुजा।पूजनःयाकुनदुपायासयजनसवचाजे
मयन्कुयन॥र्ष्ये ध्या॥नूदक्तु॥लोकविक्रुलानदीयमालेक्रुनपूर्वजावालिपूमूर्वेलुकि॥अग्निजातनवयन॥प्रनकुनस्यायप्रन॥सकुतासिसूर्नुमिवलानीकनकस्याधायपूर्वनविहानाथयीमानाथ
जानस्यय।सर्व॥र्ष्ये कुञनकुस्यनन्नानिविविधानिवर्जीर्हदक्रिकदानाथेनूयनर्विमरुथाथी।अृवनस्यययपूचेनेमककर्मनुकिकिन्नर्पे।अृकिसुवन्कानक्कृसिनूनमानधर्वेविनमनक्ष्मिविवर्इ।नानुङ्कक ८७
नवद्गमहांक्त्दा।ञार्कनादाकवल्मीर्णयथाम्यवन।नेकथा।कन॥धोकुजनःसर्वे॥मश्रीकुद्धकुमानक॥अनूनाजमवीनेकुनिर्थयीनुनवाद्यलि॥नदाकवनन्यक्ष्मेसिविकीयविगृह्जा।।नाकदु॥यसमानिश्चिनू
दक्तवनृजन्मदु॥कीनन्यायसूमिनायवकेकयीयंनथयमानवन्तर्इनवमानीप्रियकीन्नुसिनमूर्द्धन॥नूदय॥ख्यानमानाप्रकृअवर्धङ्कंवसीघन॥अनूजन्मु॥नवनीनेयवाजाराजीवलायन॥अथसूधवन्ययूनी
सविविकसद्नाद्धन।स्वदनागुनूकाद्धेथवाकृधुकुप्रियिनीतया।कालयकमर्णानिश्रवालकानीनयप्रिकृ॥सीविर्यायधिवीयालमानाख्यकीमवासस।यक्र्यावर्यथक्रुमूलनकुख्यायविद्विजा॥यथालक्ष्मन
नूविश्यप्रदनामिंविश्चिकूमा॥मताननमनानिह्रजयक्यानूश्रुपवकुवःदामानायकूयालानिश्चयर्विमर्मनृहूलदा।एमूधानकुनैनयांविमार्यांयश्चिवि।क्रियूमक्कूयात्राणिवमानानिमूनलादूमहानि

व।अवनीमङ्गिनमेथवयश्चिमानिवसर्व॥विनमयवकतेमथमकुसीङ्कामपूर्व्वक।अन्नाकवनकेनाङ्क॥ममक्त्यविविक्रिपूअस्यामाजनविकथवविनाकूमिसिममकनः॥कलावि अनमा।धनुसवमासमवाप्रकु॥नसर्वि
कैनवमाक्षिप्रमसक्वास्यविसिल्प्मा।विनीप्रजानयांवध्कवमनकवेनूलिह॥प्रकानाननानवक्किमकुसेवसमसिन॥महाक्षिमायक्षुजाङ्कप्रिणानूदेकालवर्वे।विविवनीसुकृनानागुतूकिवेदियाम।ने॥ध्जनामय
यमेक्कोनेयक्किनांघृथ्वकर्मानी।।मन॥पुकहालमहाम्मासिवोविवनासमा॥थदहम्मसिद्ध॥ड्यूवनपूवलिनेविमाग्निमार्कनवनेवक्कनेनीवनायी॥धीनाप्रसवेयसह्मयाविनहूक्रयवनाङ्क॥मूदुदपसुमीय।हानायर्ड
हूमियन्कमिर्थयासिव्रमधानवलाविह्रयं।। ॥ङ्कं स्यावद्गीतासायनेअयोधाकाण्डवनम्येथर्मक्कानानामसर्गः॥८२॥ ॥अवकीर्थ्वमासानविनाक्कमयसद्यनःसनान।र्कननप्रवृक्कविमर्यानकुङ्कंवक्रुलने
।विक्रुलन्निवहृ॥स्वनक्षिप्रन्निवयाडुम॥प्रलेमसयिक्रुःयादोनियदधवनीमल।नमार्कनूयोयनिर्गविलयकमवमसे॥कक्त्यथामामसवलानयमिगृह्णुमुहक्नु॥अवर्ञ्यसयिनुद्दीदेसर्वयात्रपूमावर्क।मगूर्वा
कुकृ।।नपृ॥स्वननिमसादय।मकुनानाकुनयोधवनदानेमयाकृदन्केकयानिप्रयथाकमथार्थे।नाकसागर्न।नख्यायविकिनक।जेसीमवाध्यङ्कंवनिन्धसन।।नाकदु॥स्वयमीनोलामदक्नीनङ्कंवक्कनवनु
विललायानिकनूधहवम॥पनिविद्भलन।यश्चिमांयविदश्चानगवागविनायवर्तवेपृवाजपिल्याजक्वेमांयविदायसि।यस्यागकिमनाथयां॥पूज॥वाङ्किनक्कथा।नमिमांजानकीनलयांकिमर्थनासिर्दे

षम॥ एवमाश्रमिदुःखवार्त्तो विलयन्नवनाघवश्च हेमीयथा गतजस्य यंत मूकतुं वधकश्च सूहियन्तु॥ यतन्न चयुनूषाश्च यथिया वेकाः। पूर्ण्यक्र सयूत स्वर्ग्गं सयाति मू श्चथायथा। तक्रू पूत्रश्च पितवन्तं यतितं समम॥
वकृतं। विसंक्लकन्यायनश्चाय। मितवमातुवश्च तं श्रकृतुं वक्षियश्च विललायनि यदसः। तुलसीकोर्क्तनं कूर्त्तं वित्तुं पितवन्नलः। मूकमावेवविलवसतक लालितं लचया। कमागतवतंहि त्वा विलयक्रं गमि।
श्च सि। एषाश्च हवण यावलेस्त्वं वासाहि पुत्र यथितिथेः। ग्रावाबश्च सिनः सद्वीन्मनः। काश्चकविश्च ति। मूताद्दुःखवाहितता नी पृथिवीभाविषश्चन। पितातु वायतस्कन लालितानो विमुक्तनी। त्वयि नाउ नामश्च गर्त्तं वामर्त्त
वन्ध्यमाश्रितं। नजीविंतुं यवश्चा मियवं श्रामिहूना लतं। हानो पिता तथा वाता पून्या मिवपूमी मिमां। मूत्वा श्चानघवं श्रा मियवंश्रा मिहूना लतं। एवमादितथाः पुत्रत्वा माता विलपितं तदा। सर्व्वः यविजनाहृथा ८२
हतमार्द्दतवा हवंतगततः। लोकयविश्रुश्चां नतु घूतवर्त्तीनदा। विलपिलातु कनूलं श्चानमवानूपयशनी। कोश्चानमाश्चितोहृश्चा पितुविषः। पूना हितःवमिश्च तवनतनयमूलाश्चदमूवाचह। त्वहूः त्वं श्रुउम
त्सर्व्वमसिहतमिदं श्रमा। श्रूवन्धं नाविनेनावं नकं। लोविंतुमर्हसि। जाकयाहि कुर्व्वां मयूकुर्व्वंउ श्रम तस्यव। तस्मादयविहार्थां धनत्वं। लोविंतुमर्हसि। मूसक श्चापितवनं यतितं धनदीनलाश्चकाय
यन्नवा वात्तं सर्व्वहतनश्चावहः। उशेनो श्चनवयाघा वृत्तं कि न्नाविनउ तः। वर्षामायपवि श्रेयो यथक्तिन्नं धउ तविव। श्रूत्तु लियविमाउजो वाषावकोकः। नोरुनो। श्रूमाप्याप्त्व वयामामूः पितुः

पितनवेतवर्ष्याभामासूहवतः समूद्रकृतनः सर्व्वमाहहितःसं यूकः सामाश्चः सयथा हितः। तयाश्चामास पितनेसलिसनविधानकः। ततः कश्चादकं सर्व्वयो नजानयदाउ नाशाउ
पुत्रिजलक्रियां सर्व्वं सक्षावदोहृत्वा हवनः। पृथिवीयमः। जलक्रियांमनाधीमीकर्द्द समूयवक्रमः पूर्व्यायूश्च उजलाकीर्ण्णं महर्षिजनसंविनी। उदकं सपितुर्द्धातु सर्वयूं सहितोययौ। श्रुवगाश्चनतः पूर्व्यं ग।
वृष्टं समूद्रकृतनः यदश्चो पितवमूश्चिश्चतवतः सलिलां ऊहिं। यदतः सलिलेनश्रूश्चतवतस्य महाश्मनः। सोनिर्धूसविनः पूश्चाः सवयाः श्चदहूकतःश्च विपालाश्चतकद्यं गत्वा उमूनागथा। सनस्वनीयहतोग
तथश्चाः सविनीववाः। मासीनदीनां पूश्चानीमसलिसनदिवेगकं यथतः। श्रसयामामूर्त्तवतं। लोकलाले। श्रूष्वास्यमानस्कंधेथपयथोरवनकन्नमागेनवसहितः। सर्व्वेनयाश्चामगमतदा। द्वावादवस्वनो
हश्नूदीनातुवउनावतो। पूत्रीमयाश्चोतवतः। धोनो वचनमव्रवीत। गतवनूपमी स्वर्गं नामयावश्चमाश्रितं। तातीर्थमतिनामनद्याः नगानसहनायूनी। पुमदाहनवीनवं विपस्तुवच सर्व्वनी। विहीनानवदवनयू
वीर्यनविनाउन। नश्चश्चनामहतुदूमपवश्चूहतस्विमं। तुंहे वशायमामिश्चयपितुर्द्दर्शनकांक्षया। किंमपिताविहीनस्य जीवितनसूखनवा। तुंश्चामिउ विहुनाहमनूषास्याभिरमिपं। कतुनाश्चाम हामा
त्याधर्म्मपालतुं कि एतश्च यविदवयमार्त्तं तहवनदाश्चमवदीत। लोचकामूश्चतश्चवमादीमतवतःश्चरतं। कृत्वाश्चमभेवेदमनूदूपनूपानुउ। लोकरवकनिर्व्वधं नास्यर्थं कर्तुमर्हसि। सर्व्वश्चउननाल
पितन। लोवक्लोहत्पं तिनाः मूदतः। लोपिताबाधियदिनाम पूनर्म्मतः। संजीवहतउनः। कश्चित्रनू। लोयमसर्व्वतः। यदाच्चवश्चगतयं सर्व्वेनस्माहिनागतेः। मृत्युकालतदा। लोकनापिसामर्थमथापि। एतश्चतुत्व
सहश्चाहितयाश्चापविनयहा। श्रूउनं। लोकसेतयं समाश्चाश्चयमानद। श्रूमानन्कव भवति स्वर्गतिस्य महीपतः। श्चाद्धकर्म्मयदानानिविधिवत्कर्तुमर्हसि। त्वं श्रयनाथ सर्व्वयीमस्माकं श्चउनस्मद। लोपितु

सर्वसमाप्य प्रजानां नाथ गौतम ॥ नव मूलस्तु विपुल धर्म्मपालन धार्म्मिकः ॥ एवं विधं गनिवान द्धामया श्रांसयदा नृगन्मविनृनाय त्वनयथों विधस्कृ विपदाय लो। लोका कूल ऊनाको भूदीन स्वनविना
दिनां। नमाविवनस्कूजननसंवृतः ॥ चितुर्न्निवर्डा हनमाकिदु ॥ विनमविहीन मिसुश्रकिमननाङ्गा गमास्व वाकानमिवाकिनिगुरुं। एवं विधकर्म्मिंथचितुर्न्निवननस्ता हिसर्की र्थदनाहमूसूकः ॥ नगः ॥ स
सूखायनमवचिकृयनिचितुर्न्निमानं हनमाकिदुः ॥ विनमा ॥ ॥ॐ॥ आर्यशूरानामायत्ने शूर्पारक जातकमालायां उदयकल्पियाकनं नाम सर्गः ॥ ८४ ॥ ॥ समनीमद्दनाहृदुहन लोवानयामजः ॥ चक्रनादहि
दं भ्राद्धं तथादहिक्रमवच। दद्दीवाद्विप्यचिकर्नैत्रास्नन्त्यधननदा। महाकालियवस्ता हिमुथवाहनमवच। नयनानिवदासीध्रुवं स्मानिसूमहाकिच। कूमधानिमूख्यादि वाङ्कस्य शार्दूद हिका। तआदना ८३
हनीरुहुकम त्यावनू यचन। समनामहि दः ॥ सर्व्वहनमंवाक्कमक्रुवनू। गतः ॥ समनूयति ॥ स्वर्गहर्ला सीथानुन्नूथमनः एवाऊद यिर्ग धूर्तं नामेनस्कू नमवच। त्वमघरवनाराजा धर्म्मराजवनाम्ह ऊ ॥ आपाति
नायदेयाव दिदंनाहुंमराजके। शूलिधवनि कैदर्घी मिदमायायसर्व्वदाः। राजा नमहिमक्लेत्ता मिक्लं हिनृपमत्तिनः ॥ ॐदनाओं नहादत्वं यूलवंनकूमागतं। शूहिमव यचान्मानं हाहिवास्मान्नया
हमः ॐ हृक्कानवनाद्रधमाहिमवन्निर्कगदा। समलार्थसमावस्य नाङ्गस्य मर्गिदावुवी ७ शूहला न ॥ सदानार्थं मामनानूचिर्ग कूल। नैवं वकुमिहाहंकिमर्व्वधाकूनता ॐ व। रानानानुनवाऊथा
नोजाह विदुमर्हनि। राजधर्म्महृगी। एषानामा नाडीवलावनः ॥ हयानिर्याः। समस्याहं सनाराजाह विद्यति। वनन्दहृदि निवस्यामि। नववर्मा निर्यचच। स्मूऊनामानुमहनीमनथीवतुर्ने गिनी।

आनयिष्याम्यहं नामेयात्रवै वाघवंवना। शूलिधवनिकंदवीमर्व्वमहजनः ॥ मूवस्कृयगमिष्यामि हवक्लिः ॥ सहिमावनी। हतयेनं नन ध्यायुमहि मिथ्यायूनस्कृते। आनयिष्याहं स्येनामीहयवाहमिवाघ
र्व। नमकामीकनिध्याऊननीं नाऊगृधिनीं। वधवस्या स्याहं दुर्न्नामामाजाहविष्यति। क्रियमीहिल्यहिः ॥ यत्कूंसथामविधमध निरद्देविकाप्राप्यहिद्धायकूललायानुवाएन ॥ नमवहवनंधर्य्यके
समानवयस्कदा। प्रधूचूर्ह स्तनामानः ॥ सर्व्वंग नृपमक्तिनः ॥ एवं वक्तुहायनश्यय घाटीय हिस्वतां। यस्त्वंराजत्रिर्यदारुं स्थायस्कुसिवाधव। शूनूहमनवचने नृपा स्मऊविनाधनः ॥ प्रदर्नऊाः ॥ सर्ययति वाहविं
दवः ॥ धनक्लिनाऊ। स्मऊनतसेहवाः ॥ यूक्कार्थवचन मिदंनिनयुद्रुहस्मूमात्याः ॥ सयविघदाहिवीन्मूमानाः ॥ यथाननवनवनहक्लिमानऊन धृयादिष्ठानूयवचनाद्यहिशिथधर्म्मोः ॥ ॥ॐ॥ आर्यशूरानामाय
त्ने शूर्पारकजातकमालायां हवनसमाप्ति नामसर्गः ॥ ८७ ॥ ॥ अथ हमिथ्यदवहृला ॥ मूतकर्म्मविरूनवदाः ॥ स्वकर्म्मनिवकाः ॥ स्वोनाः ॥ स्वनकोयाल्लिकास्तं श्रम। कर्म्माक्लिका ॥ ऊयनयधूनूधामार्गका विदाः ॥ कथा
वार्द्धकिनवुवमार्गि लोवृस्नायकाः ॥ कूयकाना ॥ सूआका नावेलवर्म्म हतस्कृथा समथर्विथेनूथाडुंयूवस्कसंयमहि। विधमाहि समीकृवं स्कृधयंध्रुयहिकुमानू। सनाथहिर्ययाव एवनकस्यमहास्म
नः ॥ समनहर्यो स्तमूलकोननजनो पाविपूनः ॥ एयानू। शूलोरूप महावनः ॥ यदूत्तीवमहानूवः ॥ महनुलैस्वमथिख्याय कर्म्मकर्म्मसूक्ताविदाः ॥ हवरधे द्विविविखोयूका ॥ यूवेथस्कमिन्नजनाः ॥ समनानिवरा द्विवि
धानूनुमार्गविधानकः ॥ कूर्द्धकाःलाधयकृथ्ये थाने गहर्नवनः। विक्किदूः ॥ शैलसंकाना क्वयिद्धद्राचनव्यखेः ॥ अबुदकमथवदं लेथकचिद्ध कान्नवायय न्। लनाः ॥ प्रशानवरुस्मां थ्व ले लानाकानसंनिरा

दुर्गा   नेपकाराः ८३   जातिधर्मरताः ८५   क्रियमाणकारकैः२ वीणादिकारकाः॥ ८५

[illegible] ८८

[illegible] ॥ ॐ ॥ आर्यश्रीनामा ... काव्ये ... कल्पलतायां ... नाम सर्गः ॥ ८७ ॥ [illegible]

नञ मेघसूत्रं ८१ मंत्रिलाः ८१

[illegible]

[illegible] ५

विभूतयः । ॐ दयनियदामध्येयनयासूनसेयदा । नमाक्कविमलेवृत्तमनाश्चर्यमिदं त्वयि । चिन्ताद नत्वर्थनद धर्मङ्गनमहात्मनाः । युरितामासि नूनम नाङ्ग दानवद्य कि ना । यः श्लोक चैवनगर्भे निवर्त्यचित्तु सिद्ध्वासि स्यू
ति यामाहि नामसाहदं गुणद्य मागुणान्वधर्मा मिनवधर्मा माधव्याय या सिवीधवे ॥ ॐ वेदना हिमहात्मानो यस्य सूः पि यदर्गनाः । वदने कि मिवनस्य स्याद्वर्जनं वीनकलमवे । त्वया श्रूयस्य न गुणे ॥ ककाम्मनागना
दिवेहमियनिः सुमिथिनः । सरा ममअय निरु ध्यानत्व भूयना नाम निवर्तनेयुमि ॥ ॥ ॐ आर्यश्रीनामायाण श्रुथा ध्याकाव्छे ह्नवनय संसानामसर्गः ॥ ८७ ॥ ॥ वनिहवाक्षेकृत्वाथ नवनः सुधना
मन । सर्वायायनवक्लिश विनिवर्त्य चित्तुगुदूं । ममश्चैव विद्यालंगुतूलं गुणवतिना । एवमुक्ता सधर्मान्मा नवगीता नवस्तुतः समसीयस्कनदासूनस्थन वाचवीद्धवः । तद्धमूर्तयनक्रमसूमकममता सनाः ।
याज्ञा माज्ञायय कि पुंवलीचैव समानय । ॐ दमूकाः सूमंत्रसु तवगननमहात्मना । स्य दक्षः सी दिय नाथ यथा सं दिशमवच । सीयद स्थाश्य तनथावला ध्याकावलिन थाः । ॐ वाचा तां सभा हूं थांकाकृत्य नि ८७
वर्तन । यथायाधागताः सर्वाः श्रोतृ सर्वान्तुह गृह । याज्ञागमन माज्ञायत्सव य नामनेयुमि । नहथे र्त्तन थे ॥ ना घे श्रुन्द ने श्रीमनाजये ॥ सहथा धेर्वलाध्य कावले सर्वे चदवयाक्षान थामसम्बलीसत्वा ।
ततमागुतूसंनि छोन अर्थमथाज यस्य कि मसन्तु पार्थनाववीत् । नतः सू मकृमामाज्ञी धृत्वा नीध्ययनाक्रमः । नथ यहृ यथो लीथें यवसंयवमवोक्तिः । तिः मनाघवः सयध निः श्रनायवा स्कुवहेर् ज्ञामिनवी
र्य विक्रमः । गुणैर्महावनागर्भं यथा श्वि ने ए सायचित्यकृ नमावविल्ध्या । तत्स्तं समाख्याय सूमकृ नक्त्याग समाज्ञायय सवलानी । आनत्तु मि ल्का मिनुर्नू वनक्षेप माथे नामिञ्ज गना हिमाय । सम्मूनयूयाय

ननसेयम ज्ञायितः सर्वप्रति यूर्गं तूकामः । नत्वासमर्थोः प्रस्थामीः यथानानुवनत्यासूर्यांश्च सूहकूनेव ॥ कालसमूह यकतः कूलीना नाऊन्योर्ध्वं नगनय आनाः । श्रूयाजय तुश्रवनान्तमस्मानकांश्चनागमव्वहूला न्हयाः
श्च ॥ ॥ ॐ आर्यश्रीनामायाण श्रुथा ध्याकावुसे न्यय द्धानिकं नामसर्गः ॥ ८८ ॥ ॥ नतः । वेनिहये धूकमास्माय स्यास्तनातृमें । ययथो तवतः श्रीमाज्ञामानयन कीकया । श्रूयतः प्रययूकत्यासर्वमत्ति यूना हिमा
श्रूत्वयूई नर्ग याकं नाऊयूर्ग महानथे । नथे वाध्यमदस्नाति समानूदानि धन्विविः श्रूत्वयूर्हवनर्गं याक्र नाऊयूर्तयनस्विने । यदाति नप्रवडूला नथाण कर्तं का । ए । कैक यी वस्नू मितावक्षे नल्याव यनस्विनी । नामे
नयन सीहना ययूर्थानेः गुतस्वने : ययथयूर्ज्जीन संघा मानामे द्वसूमन अःनी । ततस्त्रियस्याः कथः । सर्वे कर्वज्ञा हत्मान सा ःम पथ्या भीमहावाहू श्चिन सर्वे हरवनेः । कयाद आमहन्नामेऊ गनः । लो कना हने । दृ
एवमनः । लोकमयन ध्यातिनाघवः । गमः हत्स्न स्थालाकस्य समभूय त्रिवकास्तव । ॐ श्रुवे कथयक्रस्त्र संयदृहाः कथाः तुताः । यविश्वजनश्रो यो नं यय यूर्न्त्रनगला स्वदा । प्रआनतः पूनार्त्सर्वसमवायननेग
माः नामप्रतियय यूदृहाः सर्वाश्च पक्रनय स्थ था । समदिकानाश्चयथ चिन्हर्मकानाश्चे । लोतनाः यनु कर्म्मकनाश्चिवनथाणस्थापजी विनः मा धू विकाम्ह कि ति विका । श्रुद काव क्ष्व काथ न । दकु कार्य
श्मूधकाना स्थ अदन्नापजीविनः मव हूका नाःप्र स्थानास्थ अकनक आवकाः स्थापकाश्रुदका विश्राः यूपिकाः काव का श्चय । नऊ कास्तौ तु का नाश्चे यत्न त । ओ पजी विनः ययाहि श्वन कोः
वित्सूतमागधवंदिनः विनूरानत्रकानाश्च नर्पिकाः पनिकास्थथा । पावानिकाः सूपकानास्थथानि । स्या पजी विनः हिवण्य काश्च प्रस्थानास्थ था वृद्ध पजी विनः । हूला पजी विनःस

र्द्धयूथमूलायजीविनः ॥ वयकुवाह्कयगयस्कन्दनः ॥ काबयत्रिकाः ॥ निधायकास्कथसर्व्वं स्वकानथकामकामयान्य विक्रयस्काच्चेव यान विक्रयकास्कथास्वं लावका विक्रयिणस्कथामीसायजीविनः ॥
घण्टिकानोयकाच्चेवकथभ्रू ॥ यजीविनः ॥ कोर्याशिकाधनूष्कानाः ॥ सूत विक्रयिणस्कथा ॥ शिलाकाराः ॥ शिलाकर्म्मा चित्रपाता ॥ नोहनाः ॥ हूकगेरु विधिज्ञाश्चबाला नीच चिकित्सकाः ॥ भूनिकू
टकूनच्चेव नाग्रकानाल्पथेवच ॥ स्वस्तिकानाः ॥ कं नकानास्कथान श्रायसाधकाः ॥ हर्य्यकानाः ॥ नकुकानास्कथारर्द्धि हु विकाश्च ॥ स्वर्णुकानास्कथामूस्याः ॥ स्वर्णु नाजनिकास्कथा ॥ काचकानाछुकेकानास्कथाव
धक्का ॥ साधकाः ॥ कथा हं स्वेहना च्चेव कथा नीतिकनाश्च ॥ तं स्वस्यस्काय काच्चेव कथा नासाय जीविनः ॥ एतीमहकनाच्चेवकथ मधाय महकनाः ॥ लेनूमाश्च सहस्काकि यूनवैगतिकास्कथा ॥ सएतिनि
गमे सर्व्वं नगरे नैगकूलीहानि ॥ आगते वृद्धवालेषु वर्ज्जयित्वायनउने ॥ समाहिताः वदविद्यावाम्कदाः ॥ नासुसीमनाः ॥ गवधेरवग यान्कमनूउत्प्रः ॥ सहस्र ॥ सवैसाः ॥ स्तुद्रुवमनाः ॥ सक्नः ॥ सत्यानूल्पयनं ७६
॥ सर्व्वेग विविधेर्यानेर्यान्कृरवनगमच्चयूः ॥ सयाभायनमा ॥ जेत नाधवः ॥ तक्रनायनः ॥ नघामनूययोगीमांस्कास्वासान्समसाकयनू ॥ सर्व्वे तवाधीं विसृजन्सर्व्व तयविदवयनू ॥ सर्व्वत कृयतं
उत्पनगरं सर्व्वत्रमागतं ॥ नगत्वादूनमध्यानमूल्काच्चवधकूजाः ॥ समासद्रूस्कनागं गां गृहं वनयूवैपक्तियत नामः ॥ सूखासीनाः रुवेतस्यानूयाचिनीं ॥ निचीश्रुवनतः ॥ सनौनोवगंगांक्रि
लाकगें ॥ तवतः ॥ सच्चित्रा न्सर्व्वान्सवचीद्दाश्चमववी ॥ निवनयतमसनामक्रियायनसर्व्वन ॥ विश्रकाः ॥ पत विश्वामांगंगांमगांमहानदीं ॥ श्रूयौवं नाव दिक्का मिस्वर्गतस्य महोयकः ॥

र्द्धवहतिमिल्कथेमहेदागुं ऊलोंऊलिंः ॥ मस्येवैकुवकामास्याम्कथेस्यूवू ॥ समाहिताः ॥ न्यवनयन्कस्कंदनस्वस्वस्कानयथस्कानाः ॥ निवन्थगंगामनूनीमहावमूयथविश्वानेयनिवर्क्रकूमिनी ॥ उवासस्वैवाल्प्य
नामहामनाः ॥ प्रविक्रयानास्यनिवर्त्तनेन भो ॥ ॥ इत्यार्य्यश्रीनामायान्यूयाध्याकाण्डुरुवतनिर्गमानोमसर्गः ॥ ८२ ॥ ॥ गमामिविश्वंध जिनींगंगामाधिस्यनीनदीं ॥ निषादवोजाद्स्वैवक्वानीकानिद
मववी ॥ इत्युंयसनामूमहगीसमकात्यनिहृष्यम ॥ अक्रमस्यानयन्नमिविक्रमायाः ॥ समक्रम ॥ इत्युं स्वाकूनामियेंसनासंनथानातव्धन ॥ सएवंहत्यनदूनाक्का विद्यावधजानथ ॥ तहीश्चमहाकिन ॥ किम्
गयानूक्रविश्चमि ॥ रुनिश्चमिनस्वस्वश्रास्त्रेनंयं अक्रदमानूधं ॥ अक्लादाद नावंनामं पित्रानिर्वासितेवनं ॥ सामाद्यानाश्चलारंनरवनादुमूघ्रक ॥ समर्थानाश्चलश्चाहिंसूश्रिश्चलाहसौहदं ॥ रुतेनविद्यावचि
उसमर्थास्मिविह क्रितश्च ममधानद्रंथी नाजारुलांवेंधूः ॥ सखागुनूभ अरुहेन स्यहिताथैयगंगामस्वाहिकानदीं ॥ संमनुजिन्वासनदामाक्रिकें ॥ सहमक्रिहि ॥ मनुजिन्वावीद्दासान्सर्व्वान्सवचनेनया ॥ मूसीन
श्चाः ॥ सधनूषः ॥ सर्व्वे नवसमाहिताः ॥ यूहसनोनदीं ग्र क्रिश्चंमम गासनाः ॥ मोतकानीयचीद्वानीअकेकेयतनेनगे ॥ सेनश्चानींदासयूनीं क्रिश्चकूयनथक्विनी ॥ अधियास्यमिसेद्रुथानामस्याः ॥ क्रिश्चकर्म्महः ॥
मूयंस्वक्रिमनीसनागंगामय्यनविश्चमि ॥ अश्वनीसगजासान्वयमाभिश्चउसेकूलां ॥ तत्रैविधंसयिघ्यामि कंकवहितनाजिने ॥ नामायमानमहागंक्रांधमस्यहृमि क्रितं ॥ सनोघातयुमाया मिनिर्म्मावैय
मोते यथा ॥ नामैवनवासयनाकेके यावत ॥ तनयः ॥ हूतगंधायंनन्दुगनत्युमाक्रामिसेयूजः ॥ अथमद्धानसेंघानामक्कार्म्मकयविद्यूनाः ॥ मियक्रिश्चक्रिगांतसूनवाल्पवनथदक्रिनी ॥ वाजिनीवर्म्मिनीग

[illegible]

॥ इत्यार्यश्रीनामा … [illegible] … नाम सर्गः २०॥ ॥

[illegible] ८७

[illegible]

॥ इत्यार्यश्रीनामा … [illegible] … समागमो नाम सर्गः २१॥ ॥

[illegible]

८३

विद्या विज्ञनेवने । तस्य विक्रमयुक्तस्य धैर्ययुक्तस्य धीमतः । श्रूनुत्वयाउत्तनीत्वेशामानाजीवत्वाचन ॥ नवमूक्तस्तुतनगानाजयूताउरुनसमयत्वबायउरुः श्रीमातुर्गान्त्व पूर्वमिदं वचम श्रूनमेवाभिवादनश्रू
नुवागहितनवाय् । यूजितग्रस्थितग्रस्मियविनुयत्वमगुरुणनदरुः ॥ उमिक्तममवकर्थं रवन्नूनानुदं । कस्मि न्दनंव नेगरुत्तूमितामम वांधवः । सूखानामूचिभानित्यमसूखानूचनाचिकः । नामानाजीवः
नामान्कामे थिस्थासरुसीकया । आरुत्वरुद्नूगतः । यस्ता यस्तु नायवं । सोमिथिलं स्तुत्नोनाम सक्तस्मि न्य विरुरुवानू । कूमानः । यिमानातो कस्थितः । सीतयासरु । धर्मज्ञानस्थदः । श्रीमाकृयाखा
सीत्त्वर्षरुः । कोकथं कथयन्वीनः । किमासीतस्य राज्ञने । तत्यूर्वं निर्यिमेकस्मिन्द । नि किंनिधवायमः । कस्मि न्कितिलीगुतीमूर्ल जाताम सरुसीतया । सूकवानुजनीमको नमीनं दवरवसूयां न्वा किलाविं ४९
दूनस्था धनूःयाशिः सत्तमदः । मीनिनीं आगविगवान्सूतन्त्र नथमानथिः । नमदान्या हिमसर्वं यथावन्यानियक्तं । तस्यदवेयुरावस्यानाघवस्य विधिं स्थिरं । जनस्यवचनं देखा तव स्यमहात्मनः । सूक्रवी
सीजलिर्वाक्यं उवाचगत्नम । भवयमभावयस्य धनस्य वं तवन्सामहात्मनः । तविभायजनः । सर्वज्ञः नामामसुखाविनः । उवाचधर्मजा । नविश्वामिकाकस्थायनिमासिमां । सहि नामानियवनामामाकि
तु विनिश्चितं भन्तानूसूक्कारुनुवीवयत्नवहं मनसीनवावकः । सूलधसोदाधानंससाकस्मि नूमहायनः । धर्मावायवी च विपूलामसकामोचकवली । साहं थियसवीनामसंयानेसरुसीनया । तकृथा
मिथनूःयाति । सर्वकैस्थेः स्त्रा जितेयूक्तिः । नहिमविदिनः किंविघ्नस्मि नूमतः सदा । वदवेंगवयवि वलसूमरुत्रमरुानरुं । भवयस्य तिरुकनलस्य । नमहात्मना । धूनूनीनावयं सर्वधर्ममवा
नूयायकाः । कथं मानिन वोरुभीतयानसरुसीनया । नवा तिउमयात्नवृहीविमिं वासूखानिवा । यानदेवा सूर्यैः । नरः । सर्वैरसमरुिकं न यूथिनंयस्युरुसविरुरुन । नयमुसरुसीनया । मरुतानय

सासवाविविधे मुक्तियायरुसीमतकादगनयथैवयुतः । सरुत्तल सृमसृस्मियनजितमाजानवितेवुरुथित्थकि । विधवाम दिनीनूनमियमवरविस्थाकि । विसस्यसूमरुत्तानंदमनायवना । सूियाश्रानिर्धायविन
यानूनमयनाजुनिवगमेसकोनस्यादेवनाजायतगेथेवजननीममनानेसयदितंसर्वजीवयू । सर्वेनीमिमां । जीवदयिहिमनानाक्तमृत्युस्थानयत्कृया । तनदुः खात्सकीनत्यावीनसूविनिनिश्चाति सू
नूनक्तनाकी धूमसमदुः खमसू खादया । नाजधानीकूलस्याभ्यस्मामुदयविनेनिश्चयाति । अतिकाकूमनिकाकूमनवाधमनावयं । नाअत्तामममनि क्रियविनाश्वविनिश्चाति । मिदाथयिननंव द्वन्नमि
काल वि । नमनः सवनकार्थ सूसवं यूसेसमविश्वकितावावं । नस्य वचनं सुक्रवामास विनकमहायथा । सम्यग्मासादसंवासंर्वनवायनाहिता । सर्वकल्याणसंयुक्तांकत्तूयूस्तनाकूली । श्रावामाया
नसैयवी समाजासव नानिनीं । सूश्विनाविचनिश्चि कि वाजधानी । पितुस्समाग्नियस्थाधिकृतनमाध्ये कूनलिनावयं । निवकेसमयगमस्मि नयवार्थ पि विनमरिगयविदवयमानस्य तथैव सूमरुात्म
नः । मिसमानाजयूतस्य सायमानायमर्यवी । प्रशामविमनसूर्यकान्तयिनासयावूकी । सूस्मि कागीनथानीनसूखंसमाविमोमथा । जयधर्मो कूमनावीनवासेसीमहानयः । धर्मो नमस्यूथयायमी । धमसूवानोमि
धर्मोत्तमाननावधक्तानीसरुसीनयासमो ॥ ॥ इत्यार्यसीतानामायरो यथाख्याधाउउत्कामनामसर्गमाल २ ॥ ॥ गुरुसावचनं तस्यावरुरुमास्तनमस्रियं । सविस्थलितनसर्वा । आविवरुवियून कतः । अथा
तमरुसारुमी कुलतरुरुवकुमः । सूरुमानमहासर्वं सिंहस्कंधं महाभुजं । यूथमीकयसानाश्री कनूनंदियदनेन । तन्नेतं मूर्च्छितं रुस्वा विषण्णवदनागुरुः । वरुवयथितस्रुतरुमिकयादिवदतम

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ४२
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

खावरुः सर्व्वलोकप्रियं यशस्विनाथ प्रियमनूरूमीं। कथमिन्द्रीवरभ्यमामक्ताक्रः प्रियदर्शनः। यरामस्वामहावाहुः स्फवाकुविनाघवमशूद्धय मिदं लोकेन सर्व्वं प्राप्तितानिम। मूध्रत खलूभयतः
सूफायमि किमम किः ननूनं देवतं क्षिप्ति कालमावलवरुणं। यतु दासिन थीयामाश्रमावर्वे सूयिह्यसौ हुँ यो गयाम मताश्च विदं विरूतवरुणं। क्वचित् लोक थमियात भातृ विमुह्वितं रुणं। मद्यमात
वेशासीताय यथम्याह्वयन पूर्वा। कतृगत हृदपूर्वके सक्ताः कनकवित्तवः। मद्यरुदुः सूर्व्वक्वायागत सीताकयन्त्रिनी। सूकूमावीसमीदूः खे। नविज्ञानानिमे थितो। उरुतीयमिहासके विकालतुमम
र्थया। यदनमपुत्रकाले सक्ताः कीलयतक्रवः। सिद्धार्थायन्तू वंदाहीयामयानूगमावन। वयैसहयिताः सर्व्व हीनाक्रमसहालमना। सूकद्रु धावाध थिवीनूनीवयुमितानिम। नगद्दग्नवथ
खर्गं यामम्यावन्यमाधिर्म। मयप्रार्थयन्तकछिन्नमनसोपिवसूधनी। वने पिवसनक्रव्यवाहूवीर्यदिया लिनी। नूर्यामहोवनामकोमयिक्लिनरुयद्विवी। सूयावृत्पूवद्यानी वाङ्गभ्यानीं यिदुर्म
म। सूपदृष्टांपवपूनी विषमक्तामना वृती। नतु वाना किमपूर्क्ष रक्तद्विषदत्तानिव। सूयुपरुतिरुमी हितधादंकूत शीरुप। रुतमूलालिनाजटाचीरा जिनाम्बवः। कस्या न्वायाकृतं कालीकु
स्यामिमसूर्व्ववन। कन्तुप्रिक्तानमायीस्यानेवमिथ्यारु विष्टकि। वसके गतुवचेमी नकुघ्नाप्यनूवस्यकि। नेसू हेस्रहाया श्रीमाथीमयालयि मकि। यदुलज्जायामहरासुवनषन्नावसन्तू रवे।
माक्षुक्तायामयाध्यायामायेः समूयता क्षुकन। सूतिपक्कामिकापूर्वकेमयाआयीयशिनी। सूयिदवतामरुर्यू विमेसर्वेमनावथं। प्रसाद्यमानः हितसाम याथरुद्विद्रुपकावीय विनप्यपसाग।

नर

गतानिवत्स्यामिवि नाय याघवेवनयवन्नाईकिमामूयह्निुरु। कनः स्वरूपायक्रमीदिनक्रय प्रयन्त्रिनीतानिखगाः कमालयामविसर्ज्जनमापितुदः स्वमालये ऊगमनत्रुः सर्व्व ममदानूयायि तिष्ठा। नुस्य
र्थीवामायोन सूयाधाकाहे हुँ सुदीनवरो नामसर्गः॥ २४॥ ॥ सूरथास्यवरुनीमकां गजामीनसवाघवः। रुनकः कल्पमूर्कोयनकृघ्नमिदमब्रवीत्॥ उहिप्सा क्षिप्तनकृघ्नक्रिलोभवरुतानीगता।
यधवाधनमूअर्कपथ्यसूर्यितमाभूद। शीघ्रमानायपत्रुद्रुहीं गवलभूर्वथनं। सूहिनीगामिकावीवस्त्रावयि प्यति वाहिनी। नकृघ्नस्वबीधीतेयामनं प्रियवांधवः। लोककेश्यनमनसाश्व यास्यपितिवाघ
व। आगमिन्नालिकम निहातनकाकार्यविविक्रयन्। सूयिवामःपुमापन्नः कूर्यात्सपूनूपर्वरुः। प्रसाद्यमानारुवकाम यावजनकाम्नगा। एवमूक्तातुलकृघ्नारुतनस्याक्क्यामकुः। सूवीत्यूनूमाभुत्र
गुरुमानयतकिसभसूकिसीत्तायमानस्यानकृघ्नप्रसमकाश्मनः। सूकिगत्यां ऊलिवद्धाउद्धावचनमब्रवीत्। कश्चित्स्सूर्व्वं नदीतीर्थवा अीकाकूलकनर्द्दनीं। कश्चिद्वस हसेन्यस्य सर्व्वभामाम पर्यनव। सूथवा
समूदावानः पुसूकायैमयागव। कृताक्षिसूव्वनयार्थ। लोकनयविश्चियन। गानवे विक्रयामास मृगैत्वजगनीयति। नावीव मानसेदुःखे व हायिनिवर्त्तन। नथाक्कारुवनीदीनः स्वस्यवावगुरुम
या। मानयत्वसूदासावेहृदयनसूदुः खितः। सूखानः नर्द्दीवाज न्पूतितायेवन नवथी। जगमसूवदुकिर्वोकिद्वीसाः संमावयनुनः। नगागुरुः संखविनकुरुस्तारुवनतालिनं। गुतियविष्यननवे
सानुजातीनिदमब्रवीत्। उहिष्टगयवृद्धत्वे ज्ञातयामदमस्तुवः। नाघः समनूकर्षध्वेमावयिष्याभिवाहिनीं। गंगयथाक्ताः समूक्तायत्वविमानाउगासनात्। नावीगताभिर्यथैव समक्तास्यपा

[illegible]

[illegible] २१

[illegible]

[illegible] ॥ ० ॥ वाल्मीकीये रामायणे [illegible] नाम सर्गः ॥ २३ ॥ [illegible]

[illegible]

ष्टीकृतः संदर्शनं तस्य भरद्वाजस्य धीमतः मम त्रिवलस्कन्नवस्त्र प्राञ्जलगमनानूपूर्वादितः ॥ वसिष्ठमथ दृष्ट्वैव भरद्वाजः कृत्यानिविधिः संचचारासना तूर्णं शिष्यानाश्रमिणि क्रुवन् । समागम्य वसिष्ठेन भरतेनाभिवादि
तः सह सूक्ष्मतमहागताः ॥ वृत्तीदत्त नन्थस्यागी ॥ ता त्याम अर्घ्यं च पाद्यं च ददौ पश्चात्फलानि च । आनुपूर्व्याथ धर्मज्ञः पप्रच्छ कुशलं कुले ॥ अयोध्यायां बले कोशे मित्रेष्वपि च मन्त्रिषु । जानन्दशरथं वृत्तं न राजानमुदाहरत् । व
सिष्ठो भरतश्चैनं पप्रच्छतुरनामयं । शरीरेऽग्निषु वृक्षेषु शिष्येषु मृगपक्षिषु ॥ तथेति च प्रतिज्ञाय भरद्वाजो महातपाः । भरतं प्रत्युवाचेदं राघवस्नेहबन्धनात् ॥ किमागमनकार्यं ते विषयस्थस्य पार्थिव । ए
तदाचक्ष्व मे सर्वं न हि मे शुध्यते मनः । सुषुवे यममित्रघ्नं कौसल्यानन्दवर्द्धनं । यावनेर्वानवसन स्थया ॥ सह सीतया । प्रव्राजितो वने वत्स पितृवचनकारकः । लक्ष्मणानुगतस्तातः सीताश्च समनूढवान्
यतः । नियुक्तः स्त्रीनियुक्तेन पित्रा योऽसौ महायशाः । वनवासी भवेतीह समाः किल चतुर्दश ॥ कच्चिन्न तस्यापापस्य धार्मिकस्य महात्मनः । निष्कण्टकं भोक्तुमना राज्यं विकर्तुमिहागतः ॥ कच्चिन्न तस्य राम ९२
स्य पापं कर्तुमिहेच्छसि । न स्वल्पपापयापीनं कार्यं नास्मि महात्मनि । एवमुक्तस्तु भरतो भरद्वाजेन धीमता । विवर्णवदनो दुःखाद्वाष्पव्याकुललोचनः । कृताञ्जलिः शहतो
स्मि यदि मामेवं भगवानपि मन्यते । मम पि माता चितैः कायान्नाहं कर्तुमुपक्रमे । न ममैतदिष्टं माता मे यदवोचन्मदन्तरे । नाहमेतेन तुष्टश्च न तद्वचनमाददे । यामि तं शूरं मूर्द्ध्ना मातामनाज्ञत्वया ।
तन्नाहमनुमन्तुं यामि नरवराद्धिपितेर्मम । काजानानुमियाताली नानाश्च विमलकुलं । अहं तु पुनरागन्तुं नरव्याघ्रमुपयातः प्रसादकः । प्रतिनेतुमयोध्यां च पादौ तस्याभिवन्दितुं । तं विनाशयितुं राघवेव
नवासिनं । त्वं मामेवं गतं मत्वा प्रसादं कर्तुमर्हसि । शंस मे भगवन् रामः क्व सम्प्रति महीपतिः । यज्ञविज्ञम पृच्छति विश्वासाय ध्रुवं ध्रुवं दशमशिरसः संसमरगवकृत्

ततः सप्तर्षिवर्त्मना । वसिष्ठादिभिर्ऋत्विग्भिर्याचितो भगवांस्ततः । उवाच तं भरद्वाजः प्रसादाद्भरतं वचः ॥ त्वय्येतत्पुरुषव्याघ्र युक्तं राघववंशजे । यावत्स्थितं वनादिगतसि राघवं । गुरुवृत्तिर्दमश्चैव
साधूनां चानुयायिता । जाने चैतन्मनःस्थं ते दृढीकरणमस्त्विति । अपृच्छं त्वां तवात्यर्थं कीर्तिं समभिवर्धयन् । इत्येवमुक्तो महाबाहो धर्मज्ञः सुव्रतः स्वयं । जाने च रामं
धर्मज्ञं ससीतं सहलक्ष्मणं । राघवं ज्ञानवान् पूर्वं यत्र वसति ते भ्राता चित्रकूटे महागिरौ । समीपे चित्रकूटस्य राघवः सह भार्यया । निवसत्याश्रमे रामो लक्ष्मणेनानुयातिकः ।
श्वस्तु गन्तासि तं देशं वसाद्य सह मन्त्रिभिः । एतं मे कुरु सुप्राज्ञ कामं कामार्थकोविद ॥ ततस्तथेत्येवमुदारविक्रमः प्रतीतरूपो भरतोऽब्रवीद्वचः । चकार बुद्धिं च तदा महाश्रमे निशानिवासाय नराधि
पात्मजः ॥ ॥ इत्यार्षे श्रीरामायणे अयोध्याकाण्डे भरद्वाजाश्रमाभिगमनं नाम सर्गः ॥ ८७ ॥ ॥ कृतबुद्धिं निवासाय तथैव स मुनिस्तदा । भरतं कैकयीपुत्रमातिथ्येन न्यमन्त्रयत् ॥ अब्रवीद्भरत
स्त्वेनं नन्विदं भवता कृतं । पाद्यमर्घ्यं तथातिथ्यं वने यदुपपद्यते ॥ अथोवाच भरद्वाजो भरतं प्रहसन्निव । जाने त्वां प्रीतिसंयुक्तं तुष्येस्त्वं येन केनचित् । सेनायास्तु तवैतस्याः कर्तुमिच्छामि भोजनं । प्रीति
र्मम यथारूपा त्वमर्हो मनुजाधिप । किमर्थं चापि निक्षिप्य दूरे बलमिहागतः । कस्मान्नेहोपयातोऽसि सबलः पुरुषर्षभ ॥ भरतः प्रत्युवाचेदं प्राञ्जलिस्तं तपोधनं । ससैन्यो नोपयातोऽस्मि भगवन्
भगवद्भयात् ॥ वाजिभिर्मनुजैर्मत्तैर्वरवारणैः । प्रच्छाद्य महतीं भूमिं भगवन्ननुयाति मां । ते वृक्षानुदकं भूमिमाश्रमेषूटजांस्तथा । न हिंस्युरिति तेनाहमेक एवागतस्ततः ॥ आनीयतामितः सेना
त्याज्ञप्तः परमर्षिणा । तथानुचक्रे भरतः सेनायाः समुपागमं । अग्निशालां प्रविश्याथ पीत्वापः परिमृज्य च । आतिथ्यस्य क्रियाहेतोर्विश्वकर्माणमाह्वयत् । आह्वये विश्वकर्माणमहं त्वष्टारमेव च ।

आकि थं कर्त मिक्तमि कत्रमसं विधीयतां। आकथनाकयालां थं दवानुपि युवागमान। प्राकमाकथ्यानअम्यय क्षागावहाप्युयाप्यथियामकविकवगाःॐ हायानु सर्व नम कुन्यासं वतुमेनयं कनामन्यासनि
त्रिकाः। कुयवा। अदक्षीनमिकु कातुवसायमी। आकयदवगधर्वाञ्चि अवमूहेलाकु कुन। नत्येवा यावुमा। दिया। सर्वान वदा लविकाः। घ नाथीं मनकीनेगीं मिणक गीं कस्नेवुषी। गिलाकमावर यीवर्द
दु गीवींवकुथिनीं। ॐ नुं धा। अयमिष्ठ किवक्षालीयअलाधुर्गि। ॐ हमकगवान्योमाविदधात्वन्नमूकमे। कर्तना अवलअं वावायीवविविधं वकाविवित्ताहिवमा। न्याविघा दयां गुसङ्गुअ नः। सुवा
दीनिथ्वयथानिभोमानिवि विधानिव। अदसमाभिनायूकाकु उसायुगिमनव। साधुरवसमायूक नयसीवाववींत्नूनिः। मनसा ध्यायत कस्यपाद्युस्वस्य हयागाजलिः। आ उ अकला निसर्वाणि देवतानि
यथ कथकु। मलधा अगुलाञ्चिवृमयः। अदमूधानिलः। सूनचिः। पुववीतकर्मयन्सर्व। आजनानु। नकायवर्षयन्धनाद्दियाः कुसुमदकुयः। दवदूकुनिधापदिकसर्वासूनु ॐ व। प्रावाधकत थवा २२
या न्नवृक आ अथागनाः। यजतु देवनेधर्वावीणीं। देवाम्पवादयन। सदधा श्रीय हमिंचयागिनी। प्रवृतेनुथा। विवं। ॐ। वविनः। ॐ। सममः। सं घानयुकिमान। नमिवयवन नं धं दिया। ॐ। उसूस्वनु। दीदद
नं नवनः। मर्वविद्विविनकर्मण। वहवचसमा हमिः। समकाल्येवयाजने। सवलेर्व्ह कारि कु न्नामीलवेदूयं सम्निरोः। गतुविन्वोः। कपि कोषयनसावीज युवकाः। आमनषुउजम्युयलकोषकलकुयथोः।
उल्कनयः। कनूयधं वने दिथा यरा नव०। आउ अमनदीसी ल्याक्रतवापि मवयुक्ताः। सून्याधुवकू लानयानानावसवहः। अतुहाः। आउ अर्वयनाकसमदर्य नी विना अनः। अतुः। नालानिउआगिनला
धुनउवाजिनी। दम्यं उपासादसीघा धयमा लीमाल खानिव सिकमघपरं वायिवाउवअसमाव दं। उक्रमा ल्यं दकं कानं दियगंधसमूक्तिनं। वकुनअं समं वाने नयनाननयानवणधिये। सर्वगुलोर्ये

क्व दियकाजनवकुव०उयकत्यिम सर्वानीत्रोन निर्मलताजनी। व्रियक दियागजीमधाक्षीनूलयनाकमं। प्रविवनमहावुद्धिवनूलानामहर्षिणा। वअकत्रत्वसीयूर्दनुं हवनः। ककयीसूकः। अनुजन्मकव सर्व मत्रि
नः। ममूर्गा दिमाः। वखवुध मूकान्कू किंद कूवअसें विधिं। नउमाजासनेदियी यउनेकुमवव। कवमामत्रिजिः। सोर्द्धमयवर्वकन नाघवः। आपनं युजयामासतामायाप्रिवनमयय। वालधजनमादा यच्यु
सीदलावेवासनः। आनूपगानि यदुयसर्वमत्रि पूवाहिताः। मनः। सनाय निःय धो नुजलाचनिमीद्रुः। नाथसर्वा मूकर्लननयः। यायसकर्दमाः। उयानिष्ठकिलवनीहनद्याउस्यलासना०नासामूर्व
यकः। कूली मायुमकिकलयमं। नम्या। आवस अदिया। वाक्षलस्य यसादजाः। ननेववमूकर्लनदियाहवनहविनाः। आउ अर्वदूसाहसाः। वाक्षनाः। प्रजिनाः। त्रियः। मूवलीकान्तिव ल्यापुयमकिजल्य
वर्वसमः। आउअमूर्व्हलसादवाः। कूवनप्रदिताः। त्रियः। या निर्भीदानः। पूर्वाहव रूयू अकवनमनमगथाविंनकिसाकुसाक्ताः। त्रिजानक नाद्धना०। नावहः। सुवूकू। नोघः। सूननू। कूर्थवर्वसः। अमनं धर्वनाजान
हव नस्यायुगाउप्युः। अलेवूमाजियकलीपकुतीकाथगीनवदाः। उयानूयकृ हवनीहनद्याउस्यसमना०। विश्वामर्हजिकाञ्चासनमीं या। आहविरीनकाः। सूर्यक्वा नलकाप्रपियरवद्धाजनयाविनः। भलता
कालाकुगललनाक्विलकानकमालमाः। यद्वधामकसपरुः। कूजावनवामसवाहमाः। लिंगघामसकीजीवुयीप्रयाश्चाननलनाः। यमदावियंडहनाहवद्धाजपमेवमनः। कविम्भूषवाकरकाः। कविकुगु
दायिनः। कलपूष्पदाः। कविकेविदाजवनरमदाः। सूर्वासूनायः। पिवनिकुकयन्नवूकुक्तिनः। मीमानिवमहाकांहितककायावदीप्तिनं। उआद्यमायचां पुनदीवीनयुवानूषु। आय काम कयूर्व
पमदाः। सूयमानिनि। हंसवाहमाः। आयाक्तिमार्थीत्र विवताचनाः। पविनकूयथ यायाचीं यायधाक्वनामनाः। उयानजानूकूलंप्रकथेवसूनहीसूनानू। नाउ यमार्जयमेनी यथ्यथस्यथ। थाविमं ॐ

२४

ह्वानमनूवसोयिवमाहस्यकिस्थतिानवरुस्यनिल१णीघ्रं कृद्धक्रिवममप्रियी।स्यवनांसुमलगायमांक्मकम्मूस्थेवधिस्थिकाना।एमानीयकनः१णीघ्रंपञ्चक्रूक्रक्रकामनप।वनाचिचिर्दिनानम्थवर्दिसाचियवर्द
नाम्भममानूयाधवयर्केक्रिकूसूमेप्रितिजिना॥ॐ॥वपम्रमानीतित्रसहिमाँवयमावर्न।ज्ञनदावयकेलोलीमधिवासीयनतिधी॥ॐ॥मीकूसूमिनीयन्यनगान्वकूधनायमानु।सिनकु१सायलोमनूवणार्थमिव
क्रिनाम।अूमिमाउमधेद।लामनाकुम्यमिनोमिमे।नायसानीचवोसायेयक्रैस्वर्गय।थायथा।साधसेन्याः१पतिम्क्रैविचिचेनुचेकामने।यथामोपनूवयान्सुयस्थेधीमक्षिायमी।ननमस्यवरुक्रवा
पूचूयाः१नस्तुयालयः१विविच्छस्हनेक्र्लामधूवदहकुक्रगः१मनवासायधूमायमूचूर्नवनमीम्यवे।नामनूयाकव।यायर्थक्रमयवनाघवी।अूथनानमन्दीमाउपूतीमकामन्ये।अून्यथातनवि २६
थ्यक्रिनायमावन।ममवनाः१मकुत्राइवनक्रघीवयवर्नमाधूसं मर्ग।सेन्यानूवावसर्वी स्कानमितवलमर्दनः१नावक्रवाक्रक्रिस्तुमनागकूयमन्यानअूहमकानमिन्यामिम्नमकुायदाक्रिनवद्य।वव
मूक्रानन१मेन्यीमीप्रनकुयवनयः१नवनायिवधूमा।जनउहचिंसमादधुउ।यथ्वक्रिनामामहनीनदायमूर्मेवीअमानामायलधूममयनःवयवूदहयानविसमजानकीयियम्यनामस्यसमागम
यमा ॥ॐ॥ त्यार्थ्यवीनामागः।दपूयाअकाउविचक्रुदर्गनानामसर्ग१६॥ ॥दीर्घकालाभिनन्दनमिम्भूगियीनिमिवनच्रयः१येदर्शविप्रियेयथ्यदंसेविकेयसाकयनूअूथदानन
भिन्नितंविचक्रूमदर्नयनू।मवसेकानसदहतेम्यॐ॥वपूवेदनयःनायर्थसनेतीनमस्कहक्रिप्रवासनें।मनोमनाधमदहक्रानमनीयामिमेगियिलय।थममयचनेसीनमानाक्रिजगमायूनेपत्रि
रवयेः१रवमिवाक्रिनेक्रुमक्रियविरूमिनोकविक्रुनीकसदहन१कविक्रिकुमसीमिनाः१यीकमीजिपवर्मृयक्रविक्रेनकसेनिनाथनियाकर्दकानाः१कविडानसप्रनाः१विनाजयव

नवाययदलप्राउविरुविनाः१मारवामूगगनदीयिगनकूनेसविसे१मानूलिकीयथ्येन्लेसानामायूथाय।किनेः१प्राप्तेवामायक्रेज्नप्रिः१पियालेःकक्रहे१द्ववेः१लाहिमके१यालिकहे१कावि
दानेक्रुथाः१नेक्षयाविजाभेक्रथाकान्नेः१रवदिनेः१सजोवनसेमगूक्रांतेहदियमसेर्वित्रमञ्जूकनेगूजिः१कान्मयविस्रवनाहेमधूकेक्रितकेक्रथा।वदन्यामनकेत्रीयेर्वतधवियनिदूकेः१मू
लोकेः१याविजाभेयथ्य।अथाक्रउयूतिमपूथावक्रिः१रूलोयनेक्रूयावक्रिम्भनावमेः१उवमा।यिहिनथाक्रप्रियीपूयाययीमिविःलेलपुक्रूमनयामूय।थकान्दवनूयिदाः१क्रिनवाद्व
दलोहदनममानानानवि१नःरवावमकानकूनांप्रयवनोअस्वनाहिच।यनथ्वियाधनक्रीलोकाजोदलानानानमान।जलपथाननूइदेत्रिसयेनद्वक्रविक्रवि७सवक्रिजीयये।लेलस्रव
नकॐ॥वद्विय१गुहाकि१मूनक्रिगप्रोनोमामूथामप्रमूनवःपानहयोलमनायः१कनवेनयुनर्धय७।वदीहदनवर्दवकोनहयामार्दमनिष्कितालक्र।लेनचवल्यामिनमा।लाकःयधन्नकिवना
नायूकलनयथामानान्द्वजगलोयूतायविचित्रतिरवनयस्मिन्वनवासाक्रमाविनि।अूननवनवासेनमयाप्राणैकलतनीयें।जूनत र्वें पितुर्द्ववमोजनेनसुप्रियेंनथा।वेदलिनमनकविस्रित कृह
मयासक।यञ्चक्राविचिसाक्रावाम्मनावाक्रायसेमनान॥ॐ॥दमवामगंयोक्रूनाडोनाजर्धयायनं।वनयासेनवायायथ्रययवहयिनामहः१निलाः१।लेलप्रनाजक्रविलालाः१नन।लानिनः१
वक्रथावक्रकिर्वह्रीनीसपीनमिनानू।हेमानिजिनायवलनुस्यकूमाननानियाॐ॥वारमथ्पूयसालक्रायाजमानासमकूनः१।कविद्धन्ननिनादन्नः१कविद्रूयानसेनिनाः१।कविदक

वउहरमि २ धारा ३ बोति १

शिलाशालि पर्व्वतस्यास्य शोविनिःसृतैः विबगगनीशानि चित्रकूटेः समुन्क्षितः। चित्रकूटस्य कूटाग्रं शुभ्रके॥ लाशिकृतलिवः। कूटद्युत्नागवकूलहर्ज पतपविकुदात्। कामिनीयस्कमात्य स्वकूल
नयदलेयूकानः। मुचिताश्रयविद्धो घुताश्रीकाः फलकथेऽः। कामिति विनिनानाय प्रकृलानि विविधानि च। नैस्वकमानीन लिनी मनयोपायात्कृवान्कूनूनु। पर्व्वत चित्रकूट स्मिन्नम्यहकनकाद
य। नानाविहगसंघुष्टा नानामृगगणाकूलः॥ कन्दिकाव वनाथना आनको रवणुमष्ठितः॥ मूर्द्ध यनीम मन साऊमय स्य सिन कोले। चित्रकूटदुत्तौत्यर्थमर्यं कस्मिन्कूमः॥ ॐ युहि कालीवि
ज्ञम चिउ क्रिया मलैलयाशाविनिलक्षः लेनच। वर्णयस्य तस्यकूल धर्म्मीव द्धिनी मर्गायदक्ष नियमेप विक्षितः॥ ॥ॐ इत्यार्षे श्रीरामायणे अयोध्याकाण्डे चित्रकूटवर्णनानाम सर्गः॥ ॥ २०
१००॥ अथ शैलाद्विनिष्क्रम्य मैथिलीं कोशलेश्वरः। अदर्शयच्छुभजलां नाम मन्दाकिनीं नदीं। अब्रवीच्च वरारोहां चारुचन्द्रनिभाननां। विदेहराजस्य सुतां रामो राजीवलोचनः। वि
चित्रपुलिनां रम्यां हंससारससेवितां। कमलैरुपसम्पन्नां पश्य मन्दाकिनीं नदीं। नानाविधैस्तीररुहैः संवृतां पुष्पफलद्रुमैः। राजन्तीं राजराजस्य नलिनीमिव सर्व्वतः॥ मृगयूथनिपी
तानि कलुषाम्भांसि साम्प्रतं। तीर्थानि रमणीयानि रतिं संजनयन्ति मे। जटाजिनधराः सिद्धा वल्कलाजिनवाससः। ऋषयस्त्ववगाहन्ते काले मन्दाकिनीं नदीं। आदित्यमुपतिष्ठन्ति नि
यमादूर्द्ध्वबाहवः। एते परे विशालाक्षि मुनयः संशितव्रताः॥ मारुतोद्धूतशिखरः प्रनृत्त इव पर्व्वतः॥ पादपैः पुष्पवर्षं क्षिपन्त्यवमन्दिनीं। आधूतान्वायुना पश्य समन्तात्पुष्पसं

११८

चयान्पोप्लूयमानानपरान्पश्य त्वं तनुमध्यमे। चक्रवाकविनिनादितां विहङ्गलिनशालिनीं। चक्रविहगनादाकीर्णां पश्य मन्दाकिनीं नदीं। एवं किंवदन्तु वचसा तव आज्ञानाथ सन्निधौ। शृण्वान्महति कल्याणि वि
क्षोभं उत्तोजितं। दर्शनाच्चित्रकूटस्य मन्दाकिन्याश्च शोभने। अधिकं पुरवासाच्च मन्ये तव च दर्शनात्। विधूतकल्मषैः सिद्धैः तपोदमशमान्वितैः। नित्यविक्षोभितजलां विगाहस्व मया सह। सखीवच्च विगा
ह्य सीते मन्दाकिनीं नदीं। कमलान्यवमज्जन्ती पुष्पाणि च नदीमिव। मन्ये त्वं जनकीर्ण कौशल्यामयोध्यामिव पर्व्वतं। मन्यस्व वनिते नित्यं सरयूमिव चेमां नदीं। लक्ष्मणश्चैव धर्म्मात्मा मन्निदेशे व्यवस्थितः। त्वं चा
नुकूला वैदेहि प्रीतिं वर्द्धयसे मम। नित्यानि विविधानि च कमलानि चरित्वा विनि। यानि तीर्थघटान्यो विगाहस्व सनिवधौ। उपस्पृश्य त्रिषवणं मधुमूलफलाशनः। नायोध्यायै न राज्याय स्पृहये च त्वया मिलं
यासह। कस्य चास्मिन्न किन्नरो सीक्षिप्तो वर्यः चित्रकूटमूलिनि। किन्नरगन्धर्व्वविद्याधरनिषेविते। ॐ मीयस्त्विमां पुष्पं यच्च काननविप्रिय। ययीमालवलेलस्य विहाय्यमलयं यक्षगणमोङ्कि हिपन्नतं गजयूथ
लालितां निपीततोयां गजयक्षिवानरैः। सुपुष्पितैः पुष्पधरैरलंकृतां नभाक्षियां मदनक्षमा कथं॥ ॐ श्रीवनामावहूसीमर्गवचः प्रियाद्धिमीयः सत्रियत्विकुवनं। वचावतरयीनयनाऽनयरुद्धस ५५
चित्रकूटं नयपूर्वं नवर्द्धनः॥ ॥ॐ इत्यार्षे श्रीरामायणे अयोध्याकाण्डे मन्दाकिनीवर्णनानाम सर्गः॥१०१॥ ॥ नामसुनतिनीं रम्यां चित्रकूटं च पर्व्वतं। पूतानेके कनाऊस्यदर्शयित्वा रघूत्तम उ
कन्दमूलेन॥ आद चित्रकूटस्य नातिदूरस्मदर्शयत्कन्दौ वन्यां शिलाधातुसमाचितां। सद्वर्द्धुन्नतूलिः पूष्पहानावलं विहितः सिद्धगन्धर्व्वमलं द्विजगणायुक्तां। इदं सर्व्वलकानां मनोहरं चित्रवनं॥

इवायुवामावेदद्दां वनयर्त्तन विस्मितश्चवेद द्दिवमनःयक्ष्माम्वास्मिन्नि विकल्प नयविशमविघातार्थं साधूना वदिहास्यर्ता । तदर्थमिवविद्यस्तः शिलायाद्यायमपतश्च । यस्यायमप्तनस्पृष्टो श्च विसृष्टवकनव४।
वाघवत्वेवमूकासासीनायहृनिदग्निना उवायुशुनयान्निप्यमिदंशुक्लननवचन्नश्रवणेकार्यवचनेनवमनयूनन्दन । तनार्थयैवपुष्पामिवनेपृष्ठिनयादयं । एवमूक्तावचनं उसाध विष्टशिलातलं । मद्ध्यातां
विनानाग्नि वनं दृष्टूदमवूवीत् । वाक्यं त्रिकनायप्यननु ष्ट्रियासवादिनश्चविपृकाविद्रुमैर्द्धीनाकन्दकु वसमन्कनश्चपूतपियासो शक्लनिश्च पूतपूतदृदाकनत् । कनूर्णीयाद्रुवनावी । लोकोऊनयोवमे । वि
द्रुमाहंगवाङायीनासक्तं धमयाहिनश्च सीनमिवकूर्मास्तःका किलस्यानूकूडनि । सूर्यवदाकृगश्च सूकनकूनानोविदृकनमश्च । अस वद्धम सैवद्धं नथाग्रमपकामर्न । एवमायूस्मि कं नयूयाहानानमा
नेना । हृष्यजीयनयाकृत्यत्वामिया दृ समाध्रिता । एवमुक्त्वा स्थियस्याःक्षेमे थिलीप्रियकामिदी । पर्यर्वलिनविधिद्याकस्मिन्विवस्निगवन । अक्लऊपविनर्त्तकी सीतामवसृष्टायमा । धर्षयामासवाम २८
स्पृष्टदर्शीप्रियस्यमना । मनिसू याऊलीयामाहृतंमनः शलाग्निनो । यवाकिलदंयन्यासलाटनिलकनद्यावासा कंसमवर्णनम्न सागिपिर्मनउना । तसाहविनिविधनसश्चश्वकनिला उद्रवो । मुक
यनुसुसीतायावनूलनगिर्विप्राहुना । शूकिनः यथायापूप्पिनिलकनउवावकी । मनःशिलांसीकिर्नवर्णा कृत्यंयकङसंनिहंनकायालयतानां पुऊधीकमिवावकी । क्षनसत्यव पृष्यानिकमेलाहृत्य
नाघवमग्रलकं पूर्ववामासवेद न्न्यः प्रियकाप्रपात कूलिनं यथाधाकसी शिलायोमयूनचनश्च स्वयमानामेथिल्या दंनम । यंऊनेमसगनथाविवनीसीनादद्दहि । विषृष्यं । वनवकृष्ट
की । नुसाहयाऊममालिरक्षत । मामसीपनिर्वितार्थं विविरयमद्वाउऊश्च । मान्ययामासवामाजूमवलयाथवानरं । मनःशिला या स्तिलकश्च सीताया श्च साथवसूरि । समन्यूनकसंक्ष्यामस्र

मनुष्याकारो टी २ पीतकर्णभरणो टी २

विपूतीऊसमयऊसासकश्च सीतागमवानन पृथ्यदृष्ट्वा लसितकाननिलकसमनश्चशिली । नाभिहू नः लाला नायविचमिकामने । ददर्श यूथ लवकाऊधालिरिविवानसेशवैद्यवीदाममालाकस्र
माथिनी । साधुकदलिनक्तामानवन मिक्ताकूलन नाननस्थाधुआर्थमानुरयापियविकृपयामुद्दिनककन । लाकूनाविलाककश्चसमयसननदालाकवने नामश्चसूता वर्णा यवनहुदा । गिनिपुष्पायिनाकीवमहमेवनं
वनं । कावचायमलाकसपूर्थीश्च पक्त्रवयानि हिमसमलीचकाउवूडी काश्मीनीनललाशिनी । सोऽशद्धपूष्यमाणीनाकर्णयाना वर्णं सकी । कार्यापनीनममली लहनगी वक्तउदृश्ला । एवं स विविधाश्च लोद्धं लिपि
हरियासिपातू । अरुगामाउमयादं स समं कूमनलकर्णं । प्रगुउगामगंदाभालप्रलाउगृत्ता लमदर्शयन्विविधं करसीमि विश्वरूकनदा । एवदानहूतोस्त अमथ्याल पूमनायू रुलयनी हुना उश्यम
ना न्नामानक्की प्रसर्वनथाकहृत्त्वाकसीमिरिऊमाशीनादवलया । क्षियकीवनयपत्रिमानश्च सीतामथस्थनाऊ । अर्थयुष्यशहृत्याश्च सीताथववनरहिनि । कथात्पयदन्ताप्यमीसंयसङ्कनी । नमी
मीनविककनीयशङ्कधाधायायदलियं । नवानवनासीनाकाकयश्चयथवलन । नीदर्शयंलकहनाकाकनायासिनीमधा । यश्च सधानान्वचन्नश्च कामचारी विहङ्गमश्च । काकमाकाश्यमानीनांग्रामायरु
मदानीश्च साउकायानवनासीहूर्नुश्चवनपदर्थिनी । कृन प्रनकनीकाक वाञासक्षीयूनश्च यूनश्च काययामासवैदहीं । यकऊऊनेस्विसुदनं । तस्याश्च पूसूनमानोर्द्धकृतीपूहस्युविनं । मनमालायका
ककउक्ककाकयसमधयंश्च मधुमानीविहङ्गमावामममथपितिकनयन । सीतामनिपयार्गवतनशूकाधनामथश्च । सातिमकागते मीकामेत्रीकाभुतदौर्यवीनन । काकनमक्तिसंप्ययसमगं पूरसमहमस
हयाद्विहृनश्च काकसीमाकानयूधवनमन्चवर्हलवनः पर्व योत्राकवयेनासयू । यउयतागमकाकसक्कनऊदद सिमह्नो सिकालनमाकानीसरामेयूनवागमनऊसमक्ष्याम धमकाकावाघवसमहा

...ली:२ काका:२ स्नेहद्रव्यान्तरवरहस्त्यर्थः टी १

[illegible] २९

शालः पादपमात्रेस्यात् सर्ज वृक्षेपि कीर्त्तितः इति मेदिनीकरः १

[illegible]

गंहत्वारविष्णनाथ सैन्यश्च प्रमथितहृदयनार्गस्य च नाक्लिन्नवक्रां प्रमथितनननगाती ल्मनिकार्द्धं प्रहभी नृपहरनमन्नमूर्त्तेर्दकसीमीनत्यानी स्वनरकमुनगहामामगममङ्गाणतिन्नी ॥ ॥ ॐ इत्यार्यश्रीनामायरतस्र

वाक्षाकारुत्मतावाहननानामसर्गः ॥ १०३ ॥ ॥ मृसिकृद्धरुसीमिति लक्ष्मीकाधमूर्च्छितः वामः सौलम यामासवचर्नेयदमववीः विपितियं कृतमूर्त्तयंगरुवनान कदानुर्क्लिं । तथीवाहनकार्द्धिमयन मर्दहुमि

कृसिं किमत्र धनुषाकार्यं मासिनाव र्मतायिवा । महद्धामसमहायाङ्गतानविश्वयमागतं । प्रावकालयदधामान्कृवनात्रह्रुमिकृति । अस्मासूमनसाथ्यनादिनं कि विदावनतान वमसिकृत वाश्या लवणामा

प्रियेवचः । शृहहृसिथमूकः स्यान्नकमस्याः विमहतान कथं हुमुरुः पितनं हृ याल्हृत्यविदायदि । ताकावातानं हृयाश्रोमितृ प्रियमान्नन । यदि नाथ सयङ्स्वात्म मिमींवाचं युकाय सः । वक्ष्यामि हवयं १००

दस्नुवाक्षुमरुमेप्रदीयतां । उक्ष्यमानाहितनेनामयावामेवलक्षमखवाश्चमक्षोपयक्षक्लिवारु मिववक्ष्मिनः प्राक्कीयम्रनीलननगननमयदिगनकः लक्ष्मीप्रविवरीथस्वानिगीजातिलकृत्यावीति

मेन यी दस्नवाघवस्य सृवावहः । अममयमहावाहूवयाकुटुमुयानवः पवनवासकर्दहः खीच्छिकृयक्तोहवलस लमः ॥ ॐ मीवयग्रुवेदहीमयकेस्वन्नवर्णी । ॐ मार्य हनमः श्रीमानरुहमादायया स्यति

वमीमो सं पकालोकलातु वश्नी महावलीत्यायूवलीमहावीर्योलिम्रमानावुनवोहयी । यसर्वममहाकायुनाजनवाहिनीयतिः नागः नर्कजयानाम प्रियः स्कानसाधीमनः ॐ मिसेनाममानहुवामः श्रीमिति

क्षसहन्तीं चम्रहयमयूर्णी ददर्शसहमीकृया । श्रुवनीयया तीलाअन्नश्नलानक्रुयाश्रिनः वाजेस्य यार्व्वमखं यनक्षोर्क्लिं विदवासूवमहन्तनाथसंदिशाविमुर्द्धमाहवं दिति । समरूस्यसनासा

वासह मिथकस्य यत् । श्रूयद्धमिक्षोकवमृयाजनेयर्द्धनसाच । स्नाहस्यावसमानवरले न जवाजिसमाकृतीं । सा चितकृत्वसकनसनाधर्म्मपूवहृयविहायदर्म्मयसायनार्थयनवावजस्य विर्यांव

वनीतिमसमाप्रनीतं ॥ ॥ ॐ इत्यार्यश्रीनामायाने श्रुत्याख्याकाहुतलक्ष्मनुनयानामसर्गः ॥ १०४ ॥ ॥ नि विष्टमात्तसेन्यन्तु यथोद्धं नरिनीकवत । हवमात्राननैवार्षीनकृत्युमिदमववीत् । क्लिप्रवनमिदंसौम्य

नवसिद्धेः समरूतमलूचकेः सहितः सर्वं त्वमवमिउमर्हसि । श्रुमात्ये सहयीवे यगुरुकिप्रद्धिजाकिहिम महसाविचविथामिय श्चीयविदनःस्वयं । वामीयावनयश्मिलस्नीवामहावलः । वृषदीवम

हानगमिमगालिकृविश्वनि । यावन्नयतुसंकानतश्चामिउहमाननं नाक्षः पुत्रयनानानं नमसाक्लिकृविश्वनि । यावन्नयवतो ताजः पार्थिवयंजनाश्वितौ । निवसाद्दिशामिनमकाक्लिर्विश्वनि

विशप्रववाहयोयावन्नवदनीवनसलकविश्वनिधर्मात्मानमनाक्लिकृविश्वनि । यावन्नवाझनाझार्द्धः पितृयेनामरुश्मिनमश्रुतिधकनतकिन्नानमनाक्लिकृविश्वनि । सिद्धार्थे वसुसौमित्रि

र्यत्रविमलं मुखं । सदायण्यति नास्य नाजीवार्खिं महायुगम् कनकार्ष्यामहाहानवैददीजनकात्मजा । यथित्याःसागनाकायीनर्जीवयानुगच्छति । मुखिनाचित्रकृपार्यगितिनाजामहागिविमयास्मि

वेमतिकाकृतः कृतनं ॐ ननन्दन । कनकार्ष्यमिदंकुर्गवनैवाउनिमविनं । अस्मृयमकामाजावामः । मनुस्तीवनमनवमृस्ताम हावाहुर्ज्जनः पूकृसर्वकश्यद्धामवमहाननाजवयावनमूमरुद्धनी

समानिकृमजानानिजानानितितिसानुष । पूर्विकाअदिमधुनजगामवदनीवनः । सनिवष्ठितकृत्यसानुमासाअपूपितं । नामाएमहानस्यावहहने धूममयनः । मेदृष्टुन वनः श्रीमान्नूमादसहवीध

वः । श्रुतवामः ॐ किङ्गत्वानमःयानमिवाकृसहमनवितिर्द्धयश्चमाकृम्मनीघुमानय । ॐ किसंवनमाधनीजगामयुवनवनसतः सूमरुत्वथनकुपुमन्धानवानूयश्चतः । नामदनजः मनहाहवनस्यावन

स्यहः । पक्षनेवाथरुवनस्यसानालयक्षिनान । नाजुःपद्धेकृहीश्रीमानूदजश्चददर्शमः गालायीलकिनस्यादर्शनवनः क्षितनः काष्ठानियविरुमलि कृममान्यूद्धितानिचपसलक्ष्मलयनामघ्रदय

गृह्यमपृष्ठ॥ कर्णेन्द्र वनिरिङ्गानी कुल्यीर्तृक चित्कु चितादर्दर्शयवन नस्मिन्महत॥ सैव्याकुमाना मृगनीमदिवानीवकयीमान्तीनकावनानगन्धवनमहावाकुर्व्विमायुर्व्वर्मन॥ श्रुमायानवीस
वीकृयन॥ कनवानितुशमनच्यश्याघा॥ स्मर्दर्न नन्वाजायमववीतनानिदूवमहमचेनदीमचाकिनी मिनमङ्गमकुलानीसकुर्व्व॥ पृथ्याचविनानिवाकानिविरक्रानिमूला यावद्धिनानियवडवित्वेवा
निवीवानिसस्र्नानयथाश्रुवीमवाकिङ्ग॥ कन॥ घीक्ता विकासस्वाभेमेविना ॐ दयीदूवदकानीकुजनालीनवक्तिनी॥ तेनयाय्यवमाकुकमन्याचमतिगर्कानी॥ यीवायाम्युमित्वकिनायमा॥ मनकं
वन॥ ममत्यास्रो दृश्यमभूमत्र्वकुल॥ स्कृष्णवेर्मन म मूर्द्धगंधपूरमयाघुगुवृसक्वकाविनी॥ मूयद्सामि धर्म्मङ्ग महर्भिसमर्दनी॥ मथनलामूलिसचित्रकुदंसमकनममेवाकिनीमनुयादी नमरणवाजवीत
भ्रयीमयूवृषयाम्रु मूमक्तीमाक्किनाम्रवमनमश्रानिर्ज्जनेयायाधिमक ममसजीविनी॥ मत्कम यानेयाकालाकयानसमावसी॥ मर्व्वकमायनिमुख्वनवमकिनाघवमगुणाणवासूवाक्वयावाखसायसावयनेयावा
ममर्यानियनिद्दामिसीलायाद्रयुम॥ यूनश्री॥ एवं विस्मयमानस्तु वनदलवथालकमदर्दर्नमिहनीपृथ्वीयर्णुनालीमनावमी॥ गालमालान्धकर्तुर्नोघ निर्वृद्धिमाकरी॥ विलासोघदूषिति पृर्वर्थदीमिवारचनयनकमूष
निकाला यीकार्मुकायीविहमिनी॥ महसीतूषक भूआलीवालयामधिक्विनी॥ नर्क्कया अत्रुनीकालेधिवेकुलघाते॥ मते॥ लिमिगोदी कवेदनमैलेर्मा नवनीमिवा॥ मङ्गवजनवाभियीकक्षीयविनादि
मनुक्कविंमुत्रिविद्याधीमसन सविंहुमिनी॥ मा मकुलिते नामक स्त्रितु॥ कनकमुसिते॥ मूविसूर्य्येतनामयामम॥ सिंहगुहामिवा॥ यायुदम्युवृत्दल वदीसेदीकयावकी॥ ददति नमकमदक्षपूलं
नामतिवनन॥ तमनीमूमूकुर्लतुददल दवतानुगुर्॥ उडकनामममासीनेऊटावलकस्मविवि॥ मनेचकरामाकिनेमवनेऊदिनेनीवीवासमी॥ ददति नाममासीतेसमीनेयावकायमी॥ सिंहलेभगहावा १०१

कृतमाकनितकृती॥ यथियाम्भानवाका याहिलानेधर्म्मचाविनीयमहामानेमहाहानेवस्मानीसिवन्पन्ने॥ महायविस्मासीनेसीनया सूर्ज्ञननेयामाकृष्कृत कन॥ श्रीमावृकृद्र लोकयाविपूनक॥ सूरयम
वनधर्म्मासान नवकनयी पूतमदृष्टे वविसलायाक्रवाघ्य संवृद्धयामितापुगंतकून यावथिहैमेर्याद्यनमवर्त्ता अव्दवस्त्यवत्वेचमूर्व्व सर्व्वनह यनिवार्यैति॥ दयी मूतेयविदन॥ सायमाक्रममाघ्रे
कन॥ य॥ मयक्ष्मीर्थ श्वाद्दिदृष्टे धर्म्मसिमविकेनसीवकुन संहृतसधमूर्यविवर्लितयवासालिवैसूमाहर्यमहामामूर्वाविनय॥ ममनाजिनसमासायवमूषाजगतीनलय मवयाविविमाविवि
॥ मूमनम॥ मुकुत॥ माथीगहनी हावलिमिमहलगतावद॥ कथौ॥ अवननमहाहलयस्याअमूयसविनी॥ मतनदसायमिदं कथमार्य्यसमवाय मत्रिमिहमिदेशयोदृष्यदीवामाइवल्युयैं॥ धिक्किवितनगीम
स्य ममसाकविनहितै॥ ॐ यीवीविलयदीवलक्स्विन्नमूखयं कर्ते॥ यायावृत्यग्रानामसायायनदूवनावदल॥ वायाचिहिनकलसीधुक्तु नामेयलक्ष्विने॥ मूर्यलवाकिहामिस्वायाकहर्तुनानकलक्ष्मीवानक
मूआयिवामतव्वदव्वकीनूदल॥ तावूसीवसमालिक्षवामाधनूयवलयनलतनमस्तुवीवकनवेवसमयकीवाऊत्रकीवलेश्री॥ दिवाकन थयिनियाफलवग्रेथ थवेवडुकहदसायिदीनायाः
थिवायावनयूथयानाम्नमानमांकृत महत्यवमेवनीकसप्रापि सेमीतु सर्व्वनदामकतोर्म्ममूत॥ सदीनात्र्या॥ ॐ याकृतिमायक्षमायानुगलवकसमायमानामर्ग ॥१०४॥ ममाधा
नकमामूर्द्धियक्तिमुध्रुवनाघवमश्रीकदवनमायायपर्य्यविक्क ममाहितमनदिवेशीविनक्ष्माधुमानानदमर्ह सिमित्रसमवय आमिदूराकवनमागने॥ किंतवी न महोवमेकवाममनकावल
कविद्दलवत्वानाकनसीमवासीननम याकममयान्यमश्चानीमोदलोधर्म्मनवविलासकविद्वान लोविक्षान्यम्मनिवसकयाधनमरुॐ श्रीकनामूयाश्वायाय थवेलाम यूयर्ज्ञ॥ नाग क

९७

क्षिपुको गत्या समित्रावगयश्विनी । सूश्विताकश्चिदार्य्यासाधवीनं दतिकश्चयीक श्चिन्नधीनसरूसावागालाकाकयेगनः॥ कश्चित्सौम्यनगमाग्र्यायैर्न पूकलाङ्गव । कश्चिश्चिनयसीयन्नरःकूलपूताव
कूरुकनः॥ मूर्हैने यन्नदांमूसामकृतकुपूर्वाह्निनः॥ कश्चिदन्नेशुजीवकर्मेयथादनुवैधमि । कश्चिनायसदेवीमूनियमूकः॥ पूर्वाह्निनः॥ जायम अनल्हामेश्चर्षैवानित्र किवाधम । कश्चिन्नायिगुनू नश्चोनि
नयेनामश्चानयि । वश्चांश्रेनानमाग्यांपूर्वाह्नलां शुनमस्यसि । कश्चिन्निपूर्णपूर्वाविधिज्ञामतिमानः॥ कम्मांवहाश्चमानेयकालसवदयासदा ।षट्सूलवार्थमहार्थमस्तुश्वस्तुविनावदे । मुधेलोन
मूयाध्याय्येकश्चिल्लोनावूमयस । कश्चिदाम्नह्निनाः॥ पूनाः॥ नवकाजिनश्रियामहृतज्ञौ धर्मिन श्रीधरकाकुनानमस्तुनिःमनुमूलाद्विविक्रयामांशेरवनिनाथवे । मर्दनामकवेयेमनामेमलकुका
विदेः॥ कश्चिन्निनावनंमसि कश्चिन्नालविपुद्धमू । कश्चिनायवनायपूर्विनुनयस्यानूमूर्थव । कश्चिन्नयसनेकाः॥ कश्चिन्नवकूलि ॥ मरः कश्चिदुमश्चिनामत्तुनानायुमतिश्रवतिकश्चिदर्थविनिश्चि
यलघुमूलाम्रहायवान । श्रियमासंयकर्तुंन विद्युयमिनाहृभाव । कश्चिद्धृतकृतमायेवक्रलयायान वायून नविश्नः सर्वकार्यायि निकर्ययानिनानविद्वः॥ कश्चिन्नकर्थ्यूकावायवानयानि । कमाः॥
त्वमावेनदवामायेर्धृकनानमानवाः॥ कश्चिन्मृदुमूर्तीनां मकृकीनामियपिलं । यतिमाथवकस्तुयुक्तायानिंश्रेयमेविवश मरुसेनयिमूर्खानांथानूयथयू यासन । स्तुधावा श्चूमरु स्वस
नान्निमनूमहायमा । तत्काथमास्याम अवीनूमायाक्षविवकृणां वाजाने नाजपूर्वां वावायर्यंमहर्मांश्रियः॥ कश्चिन्नोख्यामहाके भूमधर्ममधूयमध्यमाः॥ जयथयाथुउयत्यहजाकृतानया
जिनामव्यमाथानूयथानीनाश्चिदयेनामह्नावनीतु । श्रेष्ठान्त्तुमुसूकश्चिद्विनियाजयमिकर्मसूक कश्चिन्नायनदवुनरुयमध्वजयमगौम भाषेलवानूनामसकिमलेगः॥ कर्मकर्यमनमि

१०२

९८

कश्चिन्नागावमथ्यकयाजकाव्यविकीयवथा । उत्तयेवश्विद्यानेकामभानूमिवस्तुयमडयायकनना चेत्राविरधीसंदूभयनेवनानपूजानेवर्ययकार्यापश्यानहत्यायुदयगनः॥ कश्चितुम्यशूनखहामकिमान्यकिमा
सुविः॥ कूलीनिअनूनककृधवनः॥ संभायनिकृतवसनकवक कश्चिद्धसर्व्वयुद्धविलानदामश्च आवलोना विकूलोम्हयासरुयमानिनाः॥ कश्चिदलसहकृवेवदनेवय अविदिः॥ सेनामकालेदानसव्दययि
नानकर्मस्मि । मानानिक्रमनाववकृतवन नवाहनामेकृथकासयदूयन्निमायथे॥ ममकरूनमकश्चिन्नधमूनकोमीकूलयूजायधानकनयूद्धयाहानूवायथिमसवःस्मूममादिनास कश्चिजानयदा
विवात्तवपूयपृकि कर्यवानावयामकवाथीकूनकहमानकवेनयतिनयकृश्चियवृदवायथयूश्चयथ्कृदवर्यवयः॥ किनिश्चिनिवविद्यानैवत्तिनायेनियावके॥ कश्चिद्यावसन्नवनश्च किआनावसर्वनः॥
ईर्यलानयमानक्ष्यावरश्मनियूसुवयनः कश्चित्कमिकवेई स्वस्मनिरुवर्तनाकूलेन्दवक्तोने वयानि शनलाभेयूवनीतिनममरुवमीमः॥ युक्तमाञ्चिर्मिसायविवर्जितः॥ नदवमाहकामाश्वथ
मदे अपवर्ज्जितमश्चविकालमयेः सर्व्वविमितिश्रयलोकिनः॥ कश्चिज्ञ नयुदहः॥ सूकः सूर्यवमकिनायवाः॥ कश्चिल्लनियकावेअः॥ कविगमनककर्मदिनावीर्जायीवश्चिन हाकलाकार्यकविजीवि
नमनवीउम्धियवीनहावेः॥ कश्चिद्धि अनदाः॥ हनासवश्चकिवाह्मधर्मनमर्व्वविमयवासिनमक कश्चिन्मियः॥ सीलंमिनिः॥ कश्चित्यानमनकिनामकश्चिन्नदक्षयासीकश्चिहृदयनकायमः॥ कश्चिन्ना
गयनैउर्वहस्यामाहेः॥ मूर्ख मकेः॥ मक कश्चित्पूयनदकानांकृजमानीनवयमस । कश्चिन्नाकोन्नानिकामावीवृत्तलीनामनसवस । अनर्थकनलाभूनमूर्खाश्चयतिनमानिनः॥ नाकृपूर्वांयथमूर्खायूविद्वान
मूविद्वदूआः॥ वृद्धिमावीक्तिवीयमनिवर्थश्रवदकिम । कश्चिद्वर्तनयसनिर्हीमनूथासमनर्कनमउक्ता याकायमर्वकृतवावविदितैजनः॥ थिवकमदिवीनामानुजकवाउ नानियकश्चिति

नविमहूर्ते वर्ल्लसपूर्व्वमर्थरु। पितामहानाम पिवावर्ल्लसकुन्तलोत्र च ॥ कच्चित्कृषीं तथ महाशुभ कानामासिना यथा। कच्चिद्दारान् समानत्याहस्यस्य ॥ सौप्यकसि। कच्चिदर्थं प्रनामां प्रहाज यत्क्रिन वाप नहस्त
सु धर्म्मकालेवे याद क्लोश्च्ह ॥ सर्समताः ॥ कच्चिद्वाहुनेयु कं यम्न कोश्च सवक्रिय। कच्चिन्नाम सुवर्ल्लक्ष यदसीमाघहावित ॥ यवालिनयवक्का मूरा यथैवची सुताः ॥ माधवस्तुव नास्तुक्ला न ना सुविद्धाय
आदिष्टा न्द्रजीविनं नर्या कच्चित् प्रिमूर्व क्रिताः ॥ चीवेव धूपिनों पूर्व्वमस्यां कमरुपूर्वजे ॥ सत्यनामीहृदवानी कृत्य एवनयसीकृती। ब्रह्मलोके कृतिर्यै लोचने कान स्वकर्म्मसू। उनितद्विये मर्म्मद्दा साहिदं नामा
४ मद्दृत्र राभ प्रासादे विविधाकाशे हितीयेस्येनुनेशनी। कच्चित्प्रभूपिना सु नामसर्वा प्रयविन कुसि। कच्चिन्न सर्व्व कर्म्मान्ता ॥ पना कात्स्न्येन किनाः ॥ सर्व्वात्र पूनिमूलसम्ना विमिर्द अनुकानदो। कच्चित्सर्वानि दू
निमि मनधमन्यायू। प्राद्दके ॥ यम्नु सुपयनि धूर्णनि तथा निरुप मनूद्धवे ॥ लहानयस्माव कोशकुलहृद ॥ सकानदो। कच्चिन्न मूर्यागयो नो मनना राज्ञेव वर्ष्कर। कच्चिद्द्विव कार्थ मूवस्मिनाहूर्वलस्य च। अपर १०३
पामात्य न्धर्क्कि कार्य्याणि धविक्रमाननाम यानि मिता हिनकानीयन्ध नृप कृनिपादमी। मा नियूरुयनूनधूनि गगवीमिथ्याहिंसा विनी। कच्चिद्दर्वाप्रवालांश्च मरव्यान्क्रिप्रांश्च सामयान्। दानेन मनमा वा वा
स्वह ना द्वयमनघ। कच्चिद्दुर्यं प्रवर्द्धा प्रनायमांश्च वनानि धानूर्विद्याश्च सर्व्वसिद्धार्थी ब्रह्मलांश्च नमस्यसि। कच्चिद्दार्थेन वा धर्म्ममर्थं धर्म्मेन वा पुनः ॥ उभौवा प्रीति लाभेन कामेन न विवाधसे। क
च्चिदर्थं च धर्म्मं च कामं च जयतां वर। विभज्य काले कालज्ञ सर्व्वान् वरद सेवसे। कच्चिद्ब्राह्मणाः सर्व्वधर्म्मान्सार्थकाविदाः ॥ न शोचन्ति महाराज मीमांजनपदः सह। नास्तिकानवृतकान्प्रम
त्तान्दीर्घसूत्रकान्। प्रत्यर्तनं ज्ञानवतामालस्यं चेन्द्रियपरिक्रमे। ७ कच्चित्कृतमर्थानां बहूनि क्रियमकुगं। निश्चितानामनारंभं मन्त्रस्याप्यपि पालने। कच्चित्सुनायपध्यकैर्दाघाघ्रादन वाघवां यैनि

विद्यामहीं स्थिरे नानयसा विर्वायकिमनथा हुत्वेह ययक्षुत्री नामंत्रयचिमयमनै। विज्ञाययकुलाकेसुर्न नामवदीयितुः ॥ त्वाम वा लोचं स्यवदनेन प्युत्स्वभवनस्थार्यनिवार्य्यबुद्धि ॥ त्वयाविहीन कुवत्म्यक्तू न स्वद्धं
भवाब्लमिनश्यिताग। सर्व्वेहुनाम स्वमिदानयसांकुव्ना बुवार्य ॥ उवक्सानसु। विद्धार्यमानः ॥ पूनमर्थकरूसौ पितुः ॥ यतिक्षुम्भवहृवकृष्णौ ॥ ॥ ॥ इति श्रीमहाभारते सभापर्व्वणि कच्चिदध्यायो नाम सर्गः ॥ १०८ ॥
कुनामः ॥ मम्मा प्यापस्य नवमेनुत्रवलेनी। उक्तायमूर्द्धा याघ्राय याद्यां ॥ यमिनी ॥ एवमधिन्सायहैवीन ॥ उद्युयधाद्दने ब्रया। तस्माद्र्वमागतादेनमिमैत्रीनजराज्नी। यन्निमित्तमहत्क्रून हप्प्रा जिनकरा यवचः ॥ हि त्वावा
श्रय विधन्सनं सर्व्व वक्तुमर्हसि। ॐ हकार ॥ कन्नयायूत ॥ कान्कृष्टनमहाल्मना। एतद्वाहु बलवान् ॥ पाडैतमिर्ग्राधमन्नवीत्। अस्य सकालः ॥ यमिमयस्त हनोकर्म्म सदुस्करे। गतः ॥ स्वर्गंमहावाहुः ॥ पूजनेसकारि पीति
नमहूयसौ वृद्धिमारम्य यकैन्दवीनामकाम्मूका। चकान स्नम एक्ष्याय। मिदन्नवायत्ते हर्वे। साना ऋत्सु समप्राप्यविधवानोकककृति। यमिन्दमिमहाधावनवकेजननीमतायतस्यभवासहन सवेयुसीयि
तुमर्हसि। ऋतिप्ययन्नवाननना थन मघदानिव ॐ माध्यहनयः ॥ सर्व्वाविधवामानवप्रम। त्वम्नकाम मनूप्राप्य ॥ यसादं कर्त्तुमर्हसि। त्वयानुपूर्व्याऽयुक्ताः नीपक्तु कामनमानुवं। नासा प्राप्तिहि धर्म्मे नसर्व
न्नूहदयः ॥ कूतूल्हवत्त्वविपवाहमि ॥ समस्तायकिमानैया। तनिनाविमलनैवनाचदीवयथानिती प्रमाह हि ॥ सवित्रेवः साध्विमिवसायाविनामया। जानदासस्य मिशामायसादं कर्त्तुमर्हसि। नदिनेताव
शिष्णसर्व्वसविवमहुनेषु। पूष्तिनं मनूजयाघ्नानामित्र मितुमर्हसि। कामवाचा महावाहुः ॥ सनायै ॥ ककर्य्ययूसनः ॥ नामसप्यानिवसायादीज ग्रहहरवनः ॥ स्वयं तस्मात् मिवमानमनिर्व्वसकैयूनः ॥ पुनः ॥

गतवैश्रवणनामस्य विघ्नशुद्धमब्रवीत् कुलीनः शीलसंपन्न श्रेष्ठ सुवर्ण त्वत्समः सर्वसाधु नाम्य्यार्थं नानाचनःअप्रियध्यजनमनश्च सम्प्रिय आसीत्पुत्रमयाभिमुदनानयाचिरजनीवा यान्तविरहे गत्तुमर्हसि
काश्च वा नाम महाप्राज्ञ त्वं नूनं सर्वथा मुदा उपयन्त्रपूर्वा च पुत्र पुत्र विधीयतः वयम भवसा लोकसं ख्याता लोकसाधु पूज्या पुत्र यस्मिन्शुद्धम मचिन्ताउ महसि। वनवासी च वसुनन्द कुलजितं बुद्धि
वाक्यवादि महावीर निर्वासयितुमर्हसि। यावत्स्थितं विधमुक्त लोकेन वं मम मानसं। तावद्भुजन याम एक कथाम ममलोके वं समानोत्र धर्मलीला थीवुन गच्छति माघ वर्णमानायित यौवन कस कथं कुर्यात्
यथा। हृष्यमाणो मया धार्मिक कर्म यत्लोकस कल्याणं च कृत्वा दण्डकावन्धनमया वनवासमसा। एवं कुला महा कालेन विहार लोक संपिवेश पादि अतीते वं धर्मात्मा चिरं दनेन धेनवमसमर्थ पुत्र मातृभ्यां मा 104
ता जामा कर्तुं न कुरुत पितामहे यथा हात्म पुत्र नारकं त्वमर्हसि। तस्य दर्शनसमाः श्रीमन्यदेव कान्त्यमास्थितः सउत्तरा श्रुत्वा थदस्तुना पिता महात्मना। यदब्रवीत् भी पुत्र नसा कस्यचित् पिता महात्मा विभूषित
या च म श्रुत्वा वैराग्य स मा त्वं माहितं नसर्वसाधकं वनवासिम कृताः ॥ इति श्रीमहासत्वाब्रवीत् वनवासगमनोनाम सर्गः ॥ १०७ ॥ राम स्य वचने हृत्वा वसन्तःश्रुत्वाच दुःखितं मया श्रवि
हीन संपादिताः ज्ञातिश्च कृत सुख त्वं नाय कासी कृत धर्मे पार्थिवाल्लोकन वर्णयं। तत्ववीत्सन्तिष्ठत्सु मान्य नावितुमर्हसि। भूमिस्तदुत्तानात्यामि मयाधर्म कूजाया न। भूमि संयच्च माला निवेदिता सप्रदाय न
श्वाना नीमाश्रितंवा हृदये वन्दे धर्म मम मयस्य धर्मार्थ म महितं धर्मात्मा धसर्वदा। कः कस्य मामिविना भविष्यति यावन्धमास्थिता रामपितु रूमापकः पितामहन्मेरथान्न धमनिः क्षमो माहात्म्य चरिता

नीतस्यवरूपस्तं पूर्वं लोकालयाज्ञा महान्मभनमानामूर्ति सहितस्यतेनयाथा न सामामृदकं पितुम प्रियं। नाकिल दत्ते पितृ साक्षात् पाद्यं आपूर्विकं वनिम्यो हूयमानवीर्थ सुन तुल्य हृदयायं यत्न
कश्चपूर्वमवाक्यदोषो। तं वृद्धौ सीमितितो हि तस्य प्रयाने कर्तुमर्हसि सस्त्रीक्षा मानुषेवा वयं पितुरेव न संहितां। नावधार्ण तत्काव्येर हवनादयत नमः मत्तु कृत मितवाक्यम् आहत्य वाक्यविनाभावं ज्ञात्वा तमाकर्ण्य ममच्य
नीचकृतत्वात् स्वयं कूर आमाथर्व लालत वक्रमः न्यबलवन्नवित्तत्क ऋक्षः वपाचन्धनमीक्षत कमद्ध पतितं योमंजानयोः अनेरोय पिमेड वाचयाम्बराय सर्वज्ञधर्मसिद्धि नौ। किंकृति स्वास्थ्यं धार्मिकं ग्रामादिष्यतं मागत
कस्त्री वाडवता दीर्घा नामचाश्वायान सिद्धितस्कृत्स्सनम याकार्य द्रुतं कृतम त महा नमः श्रीमामम मलोकन मयायाचिनमेकृतमः श्रुत्वान्तेन धर्मयात्र मा राजात्म्य मानवाचम प्रश्न तत्र मुनत सर्वं सुष्टुतः कान्त्सुमश्रुकान्तः
निःश्वासी निवारण दीर्घमयस्तुलवि साहली। निरुतत्वमवासाचिनाथाश्रीगतस्सुतस तानि हृतवना सीमा यथाधीरत्तमसा गतम्। शान्तवादिवि धि पुत्रसमानं तमनुपानकाम। जीवनं लिदत्त मी पितृमायाचतनीतयन
श्रुत्वा मितानिवाश्वानि क्रुद्ध कृतस्वामाहा। तव मृकं दुर्लभं वाचिवानि धय चन्दन शुचावृद्धः स्वयंतासीतीपुत्र वृत्वा विनानगरी। सामयम्मतक त्वत्तु वा पितृतानं स्थलं स्मन्तश्च न रामस्य च मानयाकृष्णगीतितानी
पश्चिमं। जानकी न तु गमनः सर्वांना कयवि भूता। भरतो सामसाचे पूर्णा न ननौ कमितीरिदं। सौलः पिता हुत मामास्तु ज्ञानकामजी। उवाच समुत्त्वा यस्य इच्छिनिष्ठः पितामयः। आनन्य कुदापितं कया
संयोग धर्मात्मा एवं नमि श्यामाद्धितः मत्तुवामाचेदृश्यधीमनश्चसीतामूमनन्दाबुद्धकुरुतं दृढमत्तमा समनव्ज्ञा। जहंदयाक्षमिथ्या मिगतिसर्या मूदानूना। तामानिलान्ननकरूपवि विहिता। स्वामहामकिश्रामइवृद्धकृत्त्वा
कृश वामसदृश हिमामानमसह दृढेन पसौचः मार्द्धमांसाश्च गावश्री अवलाम्य पदाल स्थानथीमृत्कृत्वा किमी मर्यापमसमुश्री हूतः काली उपागमयतत्वं स्वित ज्ञान यमनाथ कि नौ दृष्टामय यापुस्थितका

नता। सा प्रयाता समुद्रं हा विगाह्य विमलां नदीं। एवं सा कुरुनन्दिनि पितुरर्थे च यदयतात्। थैवं गुरुदयि न्याकी विधिवत्स्नात्वा सा यजुः। नियमवती तस्मा। नित्यं निर्बन्धयत् किं सा प्रसूरवः। निर्बन्धयन्तु दयिन्याक
मयसर्वं ध्याकानहः। एवं सा च महाबाहुः ऊर्ध्वं भूवि नमण्डलि। दिनीयामा सशिप्रसवा सूदन्तं चनमवीत्। गुरुदेव महाना ऊर्ध्वीर्यं स्तनावर्यी। यदन्तं प्रभूमा हि स्याकु दत्ता प्रक्लिद्यत्रुता। यानीयया हुदन्तां गुरु
भूक्तं मूढ्। स्विमाक्षं मनो वीप्रभूतकां तद्दः। स्वमाहत्यसमक्तनःशान्तयानीम वसिहानां सिंदनादसमाह वञामहा वलानां भूदनां कूर्वमाभूदर्की पितु धवि स्नाय भूत्सेन मर्दितकाः नवदसे निकाः। भूयकैसेनमाकात्रा
वामसञकवनःसद्। यथायंस्त्रयन्त गत्वा भूदनां पितरं समं। भूथतसमकिञ्चायनमवासि भूरवःस्वनी। भूयकवसनाऊक्ष्य यथा कानेव धाविनामहूये नयागकेन चत्वथेवना स्वसक्ता शभूरुमाना। कथं १०९
वाश्यु पद्मिन्वसमूसू काश्रुभूवि त्रिधा पितरं नाम विन विद्या पितरं तथा। उप्रूकोमाऊनःसर्वजिगामचमहान्मे। प्राकृक्षी सहि का स्रुद्रुकामाःसमागमे। ययुर्वदु विधे यानि स्तवा विष्णुस्तमाकृताध्मा
निर्वदूकि यां हे श्च वन सिन्मर्दह्यता। भूभावगुमूलेन दद्यौ निवासस माग मे भये न विनासि कानागाक्लूयदूधवि वानिमाः। कद्धनेसेयविस्याऊजम्भूवच्या अर्हदवे। ववाहमगसे धाश्वय हिषा प्रवनचना
यादु नमायुसे घाश्च विपूसूःपसने सूदः। वथश्रमावअयाल्यूहाहसाःकानेहु वाःपूवाः। नथाभूषा कि साःक्षीवाविसेक्लान्तः जिनदिनः। गक्षुव्लाउ महानादं विवायेन दिनं महतामनश्चोत्रा ह्माहु
मिनाकालीयश्लि। करदंनं। नावसान्यायासीपूर्ण्यं समीघ्रय सद्भः। स्विमानुपयर्यपत्प्रन्नागमलमा पितवक्र हवश्व समससरकर्क विस्पविषक्स ऊनवे मवकंक विस्नानवल्ला बादयन्तु। चकावसर्वं वपिसीवि
दनदा। यथाईमानेय पूर्ने चर्या सऊशःसमल्यनवीभूदनांमहावनेगुवेवखवान्विनाच्य निःस्वनःमहागुहात्येव दिन च्युपूनयत्राद्दानादय किमा विपव्रथ॥ ॥इतिश्री तीर्थयात्रा माहात्म्ये अग्न्याश्रमकाउडद
कद्रियानाम सर्गः॥१०८॥ ॥वलिपूर्वयूवस्वायवाऊदावामहामूनि। गूहि यक्ताभनंदनं नामदग्निकां गत्वा। माऊ यत्यथुगङ्क्षानदीं मन्दाकिनीं यमि। दहतु कृतमली यं वामसऊ सविगं। कोनयावाय
पूर्णेन भूस्वनयविधिभूला। भूमिता मवीघ्रा नोयाश्रा या माऊ थामिनः। गुरुदेवामनाथनां मऊ हं गुरु कर्मणां। वनपाश्ववस्नीतीर्थथेवनिर्वि व याःदृताः। इन्द्रुमितपूकऊलमादाय वीर्यवान्। श्रुत्वा
मममकृतस्य कृतगवक्रि निध्यनक्ष वनवे निर्ऊनथावञ्जानां भूगनदीकूलं। द्दः कवे कृत्वा भूतःसू मिकमवमाञ्चिक्रुशः पुत्र वयपनूवा। गनश्रद्धयामाकवेवन। सुप्रश्चानन यः पिता स्वका निवयेन धवा
न। दूरव अयदधूकुम्भूवनयूसहृता यथाया। नमम भूनमवाप्त्रः पितुनादायजानसनं। एवं विलपमानासाकीनव्यावायविक्रवा। ददः। स्क्रुदिपिन्याकं द्विवायाश्च लिनं कृतं। यद्भि ला त्रभूद भूसुभूयथा भूत
वं लिगं। सा कमिक्षुद्विपि न्याकं दक्षा पिगुणद्भःश्विका। उवाचयक्षु कीनत्यां सर्वां दनवथक्लियमअभूयमिक्ता। कृनाथच स्वर्गतस्य महान्नेन मनवादादयं। पितुर्दत्तःयश्चाय यथाविधि गतस्य दवसमया
दत्तं श्रवि दिनास्मनः। नैगदोधयिर्कसम्प्रगुरुकृत्। गयकाऊनं। वगुवन्नौ महोदक्ताम दत्तु सदृ। नागुवि। कथमितु दिपिन्याकं सत्रुकूय थिवीय नि। भूयाद्भः स्वमनेला कनकिं पितुभिहो। तिमेय
तवामः पिगुर्द्दयाला पूजानानाश्रमी दूतं। याम। स्क्रु दिपिन्याकं पितुर्दत्तं समीग्रसि। कथं ममदं दद यैनदीयां किस सदृशधा। एकिद्युरवि स्त्रियैसव्याः मिधेयु विहानिमे। यदनः पूर्ववाहि स्याकु दत्ता
कृस्यदवना। एवं वमाहपसघन्नाशियं नाशाद्दिमानदा। साऊगमानंमयदं कोनव्यायतु वाधवःनम गुरुलु वितिगन्वा सुवां नयक्रियाभिक्रुः। भूय अत्रान्येमवोमे स्वर्गयातमिवामनेत्राकोगेहसीय
वियक्ता। सैदद्धवमानन्स्महात्मभूवू वाणिनिसव्रवे। लोककर्मिनाः शासीनामःसमूकूयऊपाहवन। लोगुहोः माहर्यायूवू मयाप्रः सर्वासामन्यायई हाः। यानि किसहस्वसैस्या लोभद्रधमुलगले।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] १०७
[illegible]
[illegible] ॥ ॐ [illegible] नाम [illegible] ॥ १०२ ॥ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नै

१७२

नन वाग्यतः स्वसाध मानः शिवसामहीय तिष्ठमर्ति नवक्र गमनाय सत्वदीक्षितः पितुः स्ववचने स्थितिः स्म तत्र। तदत्तु तच्छ्रेयमवश्च नाध्यव सर्म जन्माद्धर्म वायाद्दूःखिन मस्नन याम्यया क्षमि निदूःखिनोक
क्षित्व स्थितिः स्वमवस्तु ढवितः॥ ॥ इत्यार्षे श्रीरामायणे अयोध्याकाण्डे भरतसमाश्वासनाम सर्गः॥ १११॥ ॥ आश्वास्य तु भरतं रामः धर्मलाभ वर्त्मनाम्‌। विप्रो जाबालिः वचनं तु न दुःखेन वाचं च। नहि
स्वर्गतस्त्वं न पिता प्राप्तः सन्न मर्हसि। यस्मादस्य सवीज ब्रूतो वा कृतमात्मिनः। कः कस्य पुरुषो बन्धुः किमाप्यं कस्य केनचित्। यदेको जायते जन्तुरेक एव विनश्यति। तस्मान्माता पितेति राम सज्जेत यो नरः। उन्मत्त
इव स ज्ञेयो नास्ति कश्चिद्धि कस्यचित्। यथा ग्रामान्तरं गच्छन्नरः कश्चित्क्वचिद्वसेत्। उत्सृज्य च तमावासं प्रतिष्ठेतापरेऽहनि। एवमेव मनुष्याणां पिता माता गृहं वसु। आवासमात्रं काकुत्स्थ सज्जन्ते नात्र
सज्जनाः। पित्र्यं राज्यं समुत्सृज्य स नार्हसि नरोत्तम। आस्थातुं कापथं दुःखं विषमं बहुकण्टकम्‌। समृद्धायामयोध्यायामात्मानमभिषेचय। एकवेणीधरा हि त्वां नगरी संप्रतीक्षते। राजभोगाननु
भवन्महार्हान्पार्थिवात्मज। विहर त्वमयोध्यायां यथा शक्रस्त्रिविष्टपे। न ते कश्चिद्दशरथस्त्वं च तस्य न कश्चन। अन्यो राजा त्वमन्यः स तस्मात्कुरु यदुच्यते। गतः स नृपतिस्तत्र गन्तव्यं यत्र तेन वै। प्रवृत्ति
रेषा मर्त्यानां त्वं तु मिथ्या विहन्यसे। अर्थधर्मपरा ये ये तांस्ताञ्छोचामि नेतरान्‌। ते हि दुःखमिह प्राप्य विनाशं प्रेत्य भेजिरे। अष्टका पितृदैवत्यमित्ययं प्रसृतो जनः। अन्नस्योपद्रवं पश्य मृतो हि किमशि
ष्यति। यदि भुक्तमिहान्येन देहमन्यस्य गच्छति। दद्यात्प्रवसतः श्राद्धं न तत्पथ्यशनं भवेत्‌। दानसंवनना ह्येते ग्रन्था मेधाविभिः कृताः। यजस्व देहि दीक्षस्व तपस्तप्यस्व संत्यज। स नास्ति परमित्येव
कुरु बुद्धिं महामते। प्रत्यक्षं यत्तदातिष्ठ परोक्षं पृष्ठतः कुरु। सतां बुद्धिं पुरस्कृत्य सर्वलोकनिदर्शिनीम्‌। राज्यं स त्वं निगृह्णीष्व भरतेन प्रसादितः। पूर्वा ज्ञा १०८

पूर्वमद्य यत्नवद्धूलिकर्माणि गुरुणा निहत्या। जित्वा सत्यमेव धर्ममेव लोकस्मात्य नैनास्तिकमहत्वय। नमे वनास्याव यथावदर्थमकाद्ययासीत्तु तिमाह्य विप्रायः धर्मश्चैव नष्टः सकलं यथा च त्वं कामलाल
कवस्य हतः। निन्दाम्यहं कर्म पितुः कृतं तद्यस्त्वामगृह्णाद्विषमस्थबुद्धिम्‌। बुद्ध्यानयैवं विधिया च यन्तं सुनास्तिकं धर्मपथादपेतम्‌। यथा हि चौरः स तथा हि बुद्धस्तथागतं नास्तिकमत्र विद्धि। तस्माद्धि
कोऽप्यत्र नवं द्विजानां स नास्तिका नाम्न सुखी सुखी स्यात्‌। ततस्तु जाबालिरदीनमानसः उवाच वाक्यं वचनं हितार्थी। उवाच वाक्यं मधुरं वचो यत्सत्यं तथ्यं मनुवृधः। न नास्तिकानां वचनं ब्रवी
म्यहं। न चास्तिकोऽहं कुलधर्मसमाहितः। समचायि कालो यमुपागतः शनैर्यथा स्थितं नास्तिकवादमीरितम्‌। निवर्तनार्थं तव पार्थिवात्मज प्रसीद सत्यं प्रभुरं निवास्तिकः॥ ॥ इत्यार्षे श्रीरामा
यणे अयोध्याकाण्डे जाबालिवाक्यं नाम सर्गः॥ ११२॥ ॥ जाबालेस्तु वचः श्रुत्वा रामः सत्यात्मनां वरः। उवाच परया भक्त्या स्वबुद्ध्या चाविपन्नया। भवान्मे प्रियकामार्थं वचनं यदिहोक्तवान्‌। अका
र्यं कार्यसंकाशमपथ्यं पथ्यसंनिभम्‌। निर्मर्यादस्तु पुरुषः पापाचारसमन्वितः। मानं न लभते सत्सु भिन्नचारित्रदर्शनः। कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्‌। चारित्रमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि
वाशुचिम्‌। अनार्यस्त्वार्यसंस्थानः शौचाद्धीनस्तथा शुचिः। लक्षण्यवदलक्षण्यो दुःशीलः शीलवानिव। अधर्मं धर्मवेषेण यद्यहं लोकसंकरम्‌। अभिपत्स्ये शुभं हित्वा क्रियां विधिविवर्जिताम्‌।
कश्चेतयानः पुरुषः कार्याकार्यविचक्षणः। बहु मन्येत मां लोके दुर्वृत्तं लोकदूषणम्‌। मिथ्यावादी पितुः कृत्वा वचनं हि विलाप्य च। राज्यं स्वमिह लब्ध्वाहं कं तु शोचे न भूपतिम्‌। सत्यमेवानृशंसं
च राजवृत्तं सनातनम्‌। तस्मात्सत्यात्मकं राज्यं सत्ये लोकः प्रतिष्ठितः। ऋषयश्चैव देवाश्च सत्यमेव हि मेनिरे। सत्यवादी हि लोकेऽस्मिन्परमं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] १०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आशा सफूकुथि
ASHA ARCHIVES
1941 I